त्रैमासिक

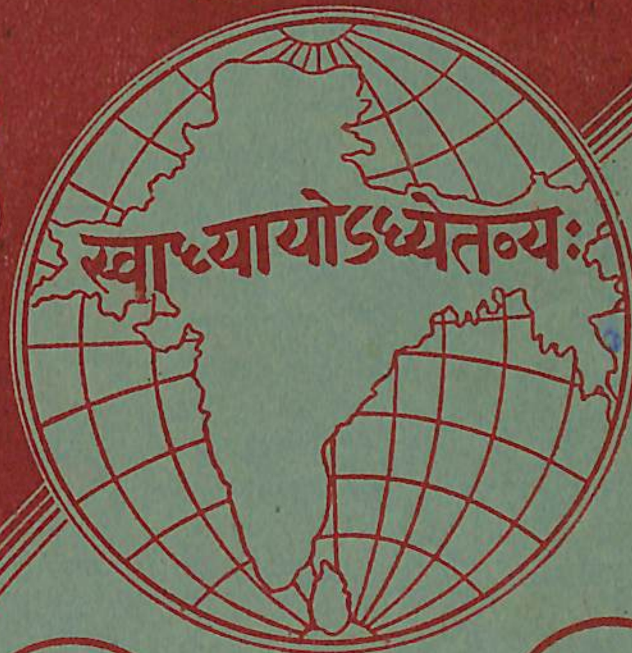
श्रीः

श्रीस्वाध्याय

ग्रीष्माङ्क

वर्ष ६
सं० २००७

संख्या ४
द्वि० आषाढ़



वार्षिक मूल्य ४)

इस अङ्कका मूल्य १।) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

आपकी व्यक्तिगत शंकाओंका समाधान

श्रीस्वाध्यायके ग्राहकोंके लाभार्थ इस अङ्कसे यह नवीन स्तम्भ प्रारम्भ किया जा रहा है। आप अपनी सभी प्रकारकी शंकाओं — सन्तान, धन, जीविका, व्यापार, विवाह, विद्या, मानसिक चिन्ता आदि—के लिए ज्योतिषी 'गर्ग' c/o. 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) को लिखें। ज्यो० 'गर्ग' द्वारा आपके प्रश्नका उत्तर ज्योतिश्शास्त्रानुसार दिया जायगा। प्रश्नके निर्णयार्थ आवश्यक सामग्री—जन्मकुण्डली व जन्मका समय तिथिवारादि और न हो तो केवल प्रश्नका समय और दिनाङ्क—साथ लिख भेजें। इन प्रश्नोंका उत्तर निःशुल्क दिया जावेगा और यदि सम्भव हुआ तो 'श्रीस्वाध्याय' में सुविधानुसार क्रमशः प्रकाशित भी किया जावेगा। किन्तु इसमें वे पहले १०० ग्राहक ही लाभ उठा सकेंगे जो अपना दशवें वर्ष का मूल्य ४) सर्वप्रथम कार्यालयमें पहुंचा देंगे। एकसौ ग्राहकोंका मूल्य प्राप्त हो जानेके पश्चात् जिन ग्राहकोंका मूल्य आयेगा वे इस सुविधासे लाभ न उठा सकेंगे, उन्हें अपने प्रश्नके लिऐ १) रु० अधिक भेजना होगा अथवा एक नये ग्राहकका वार्षिक मूल्य अपने मूल्यके साथ ही भिजवाना होगा, तभी वे अपने प्रश्नका उत्तर प्राप्त कर सकेंगे। 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंके लिए यह अपूर्व अवसर है। अधिकसे अधिक ग्राहक बन कर लाभ उठावें।

किसी भी प्रश्नके उत्तरको प्रकाशित करने या न करनेका सम्पादकको पूर्ण अधिकार है, तथा सम्पादक ज्योतिषी 'गर्ग' की विचारधारा या सम्मतिके लिए उत्तरदायी नहीं है। दशमवर्षके २०० नये ग्राहकोंको 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र' नामक पुस्तिका—जिसमें ग्रहणका वैज्ञानिक रहस्य भी सम्मिलित है—बिना मूल्य भेजी जायेगी। इस पुस्तिकाका मूल्य ।॥) है।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

आवश्यक निवेदन

'श्रीस्वाध्याय'का नवम वर्ष पूर्ण हो रहा है। आगामी विजयादशमीसे यह पत्र दशम वर्षमें पदार्पण करेगा। इस छोटी-सी आयुमें श्रीस्वाध्यायने राष्ट्रकी जो सेवा की, वह पाठकोंसे अविदित नहीं। जिन सदुद्देश्योंको लेकर इसका जन्म हुआ, उन पर यह आज भी दृढ़ है। परन्तु इसकी आर्थिक स्थिति अभी इतनी दृढ़ नहीं हो पाई है कि यह अपने पैरों पर खड़ा होकर सभी पूर्व निश्चित स्तम्भोंका नियमित रूपमें समावेश कर सके। इस युगमें कोई भी पत्र बिना अपने आवश्यक साधन (मुद्रणयन्त्र प्रेस-कार्यकर्त्ता-आदि) वा ठोस पूंजीके नहीं चल सकता। फिर संस्कृति प्रधान आध्यात्मिक विचारधारा वाले धार्मिक पत्रका तो साधन और पूंजीके अभावमें जीवित रहना और भी कठिन है। इसी कारण 'श्रीस्वाध्याय'का प्रकाशन कुछ उदार संरक्षक सहायकोंके बल पर प्रारम्भ किया गया और कुछ ज्योतिर्विज्ञानानुरागी एवं व्यापारी वर्गके लिए सामग्री देकर उनसे भी सहयोग ग्राहकत्व रूपमें लिया गया। ज्योतिर्विज्ञानसे रुचि रखने वाले सज्जनों और व्यापारीवर्गने तो ग्राहक बन कर हमें यथासम्भव सहयोग अवश्य दिया, उसीका परिणाम है कि आज नौ वर्षसे 'श्रीस्वाध्याय' निरन्तर इस रूपमें निकल रहा है और अपना व्यय (कागज छपाई मात्र का) वह ग्राहकोंसे पूरा कर पाता है। इस समय निर्धारित पांचों स्तम्भोंमेंसे जो भी थोड़ी बहुत सामग्री हम दे पा रहे हैं, उसका अधिकांश श्रेय हमारे महामान्य संरक्षक साहित्यानुरागी धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०८ मन्महाराज दुर्गासिंहजी महोदय को ही है। शेष सहायकोंमेंसे तीन-चार को छोड़ कर अन्य सबने वर्षोंसे अपनी सहायता स्थगित कर रखी है। वचन देकर भी कई संरक्षक सहायकोंने उसका पालन अभी तक नहीं किया। ऐसी विषम स्थितिमें वर्तमान ग्राहकोंके बल पर हम अपना तन-मन लगा कर "पीर बबर्ची भिश्ती खर" की उक्ति को चरितार्थ करते हुए शक्तिभर जो भी सेवा बन पड़ती है अहर्निश कर रहे हैं और भविष्यमें भी करते ही रहेंगे।

व्यापारी वर्ग और ज्योतिर्विज्ञानानुरागियों से—

'श्रीस्वाध्याय'को व्यापारी वर्ग और ज्योतिर्विज्ञानानुरागी सज्जनोंने सबसे अधिक अपनाया है। इसी कारण हमने भी उनकी आवश्यकताओंको पूर्ण करनेके लिए भारतके सुप्रसिद्ध अनुभवी समर्घमहर्घ— तेजी-मन्दी— विशेषज्ञ दैवज्ञोंका अधिकसे अधिक विचार-विमर्श इसमें देनेका प्रयत्न किया है। कई दैवज्ञ बन्धुओं और व्यापारी मित्रोंने 'श्रीस्वाध्याय'को केवल ज्योतिर्विज्ञानमात्रका पत्र बनानेके लिए भी परामर्श दिया हैं, परन्तु 'श्रीस्वाध्याय' केवल ज्योतिषियों वा व्यापारियोंके लिए ही नहीं निकाला गया। इसके उद्देश्य महान् और विषय व्यापक हैं। व्यापारियोंको सदा अपने लाभके संकुचित घेरेमें बहिर्मुख ही नहीं बने रहना चाहिए। अब स्वतन्त्र भारतमें उन्हें अपनी आर्थिक उन्नतिके साथ ही साहित्यके स्वाध्याय द्वारा कुछ आध्यात्मिक उन्नति करके अन्तर्मुखताकी ओर भी आगे बढ़ना चाहिए। यदि वे अपने समय और लाभमेंसे कुछ भाग 'स्वाध्याय'के निमित्त भी लगा सकें तो इससे उनका और उनके राष्ट्रका अधिक कल्याण होगा। उनकी आवश्यकताओंका तो 'श्रीस्वाध्याय' सदा ध्यान रक्खेगा ही।

अभी कलकत्तेके एक सुप्रसिद्ध व्यापारी एवं विद्वान् मित्रने हमें लिखा हैकि— "श्रीस्वाध्यायको यहां लोगोंने बहुत पसन्द किया। वास्तवमें आपका प्रयत्न प्रशंसनीय है। परन्तु यहां वाले सब इण्डियन आयरन, जूट शेयर, कोल शेयर, काटन शेयर तथा अन्यान्य शेयरों में विशेष रूपसे अनुरक्त हैं। इनकी घटाबढ़ीका विवेचन भी यदि 'स्वाध्याय' में देनेकी व्यवस्था कर सकें तो ग्राहक संख्याकी वृद्धिमें बहुत सहायता मिल सकती है।"

इसी प्रकार पंजाबकी मंडियोंके कुछ व्यापारियोंने मिर्च सोडा आदि वस्तुओं पर भी प्रकाश डालने के लिए आग्रह किया है। ऐसे सभी व्यापारी महानुभावोंसे हम निवेदन करेंगे कि जहां आगामी वर्षमें हम यथासम्भव उनकी आवश्यकताओंको पूर्ण करनेका प्रयत्न करेंगे वहां उनका भी यह कर्तव्य हो जाता है कि वे भी अधिकसे अधिक संख्या में श्रीस्वाध्यायके सहायक व ग्राहक स्वयं बनकर और अपने इष्ट मित्रोंको भी बनाकर हमें सहयोग दें। श्रीस्वाध्यायके द्वारा प्रत्येक व्यापारी को निरन्तर लाभ होता रहे यह आवश्यक नहीं है। जिन व्यापारियोंके जन्मपत्र वर्षफलमें धनेश बलवान होता है उसीकी दशान्तर्दशामें उसी ग्रह के अनुरूप वस्तुसे लाभ हो सकता है। अतः अपनी ग्रह दशा एवं लाभकी वस्तु एवं समय का निर्णय योग्य विद्वान् ज्योतिषी द्वारा कराकर व्यापारमें प्रवृत्त होना चाहिए।

वार्षिक मूल्य शीघ्र भेजिये

वर्तमान नौवें वर्षका यह अन्तिम अङ्क है। आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः आप आगामी दशवें वर्षका वार्षिक मूल्य ४) चार रुपये शीघ्र से शीघ्र कार्यालयमें मनिआर्डर द्वारा भेज कर वर्षभरके लिए अपनी सब प्रतियां सुरक्षित करा लीजिए। छपा हुआ मनीआर्डर फार्म इसी अङ्कके साथ भेजा जा रहा है। कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या और पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। विजयादशमीका प्रथमाङ्क सचित्र विशेषांकके रूपमें लगभग १२० पृष्ठ का होगा, इसअङ्क का मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्कका मूल्य ।।) होगा। परन्तु ता० ३० सितम्बर १९५० तक मूल्य जमा करा देने वाले स्थायी ग्राहकोंको यह विशेषांक और वर्षभरके शेष सब अङ्क ४) में ही प्राप्त हो सकेंगे।

नये ग्राहक बनाइये

हम अपने श्रीस्वाध्याय-परिवारके प्रत्येक पाठकसे प्रार्थना करते हैं कि वे स्वयं तो अपना मूल्य शीघ्र भिजवा ही दें, साथ ही कमसे कम एक नये ग्राहक का मूल्य भी अवश्य भिजवा दें। यदि प्रत्येक सदस्य एक नया ग्राहक बना देंगे तो हम और अधिक उत्तम सेवा कर सकेंगे और ग्राहकों का पर्याप्त सहयोग होने पर इसे मासिक भी बनाया जा सकेगा। गतवर्ष भी हमने अपने ग्राहकोंसे यही प्रार्थना की थी किन्तु अधिकांश ग्राहकों ने उस पर उचित ध्यान नहीं दिया। इस वार हमें पूर्ण आशा है कि स्वाध्याय-परिवारका प्रत्येक सदस्य अपने इस परम पुनीत कर्तव्यका पालन कर हमारे कार्य में पूरा सहयोग देगा। केवल एक नया ग्राहक बनाना आपके लिए कोई कठिन कार्य नहीं है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए—

सौभाग्य का विषय है अब हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित हो चुकी है। केन्द्रीय एवं प्रांतीय मंत्रालयों के कई विभागों में सब कार्य हिन्दी में होने जा रहे हैं, अतः अधिकारियों को भी हिन्दी सीखने की आज्ञा मिल चुकी है। अब दिनों-दिन हिन्दीकी परीक्षाओंका क्षेत्र भी व्यापक होता जा रहा है एतदर्थ पाठकों के आग्रहसे हम 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी वर्षसे परीक्षार्थियोंके हितार्थ हिन्दी परीक्षोपयोगी साहित्यिक एवं ऐतिहासिक सामग्री देने का प्रयत्न भी करेंगे।

वी० पी० नहीं भेजी जायेगी

जो ग्राहक वी० पी० से श्रीस्वाध्याय मंगवायेंगे उन्हें हम विश्वास नहीं दिला सकते कि नववर्षाङ्क ठीक समय पर वी० पी० द्वारा भेजेंगे ही, क्योंकि यदि गतवर्षोंकी भांति इस वर्ष भी 'नववर्षांक' छपनेसे पहिले ही पुराने ग्राहकोंका मूल्य अधिक मात्रामें प्राप्त हो गया तो फिर हम किसी भी ग्राहक को वी० पी० से 'नववर्षाङ्क' न भेज सकेंगे। प्रत्येक ग्राहकके पास इस अङ्कमें हम अपना छपा हुआ मनीआर्डर फार्म भेज रहे हैं। वे अपना नाम पता लिखकर शीघ्र मूल्य भेज दें। यदि समयसे पूर्व उनका मूल्य न आया तो पीछे उन्हें विशेषांक न मिल सकेगा।

पत्रव्यवहार और मूल्य भेजने का एक मात्र स्थायी पता

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री० १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमींदार साहब उपरोड़ा स्टेट (म० प्र०)

श्रीमान् चौधरीसाहब गगनसिंहजी रईस जण्डवाल (होश्यारपुर)

श्रीमान् ला० शिवचरणदासजी सदस्य परामर्शदातृ-समिति हिमाचलप्रदेश, सोलन।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० मांजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीताबर्डी, नागपुर।

श्री वेणुभाई एम० रावल पाचोरा (पूर्वखान्देश)।

रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।

श्री १०५ मान् महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।

श्रीमान् स्वर्गीय अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।

श्रीमान् पं० हरिशङ्करजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां म० प्र०।

श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी० ए० एल-एल० बी० सेशनजज सोलन।

श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढ़ती खड़ (पंजाब)।

श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढ़ती खड़ (पंजाब)

सम्पादक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

उप सम्पादक—

साहित्यरत्न काव्यतीर्थ श्री पं० भवानीशङ्कर त्रिवेदी शास्त्री बी० ए०

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन [हिमाचलप्रदेश]

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय'का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीनसौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदन की ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्त्तन) के पत्र पत्रिकाएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्टअक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। अस्वीकृत लेख डाकव्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकों के नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अंकोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अंकों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अंक का मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहकसंख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य या एक अंकके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे, उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अंक न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—
श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृहीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष १	सोलन, द्वि० आषाढ़ शु० १० सोमवार सं० २००७ वि०	संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयंस्तत्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

निवेदन

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

विदां वृन्दे प्राप्तः पठनपारपाटीषु - पटिमा
मनः शान्ते स्वान्ते स्मरहरपदान्ते न गमितम् ।
शरीरान्ते पाशं गतवति कृतान्तस्य सहसा
किमाभीलं धीमन् ! जनिमरणजालं परिहरेत् ॥१॥

दिगन्ते विश्रान्ता परिणतशरच्छीतकिरण-
प्रभाजालग्रासीकरणनिपुणा कीर्तिरतुला ।
समर्था नैव स्यात्प्रतिभयभवाऽम्भोधितरणे
विहायैकां तां श्रीचरणयुगलीभक्तिकरणिम् ॥ २ ॥

सम्पादकीय विचार—

स्वतन्त्रताका चौथा वर्ष

देशकी दशा दिनों-दिन उत्तरोत्तर अस्तव्यस्त-सी होती जा रही है। समयके रथके चक्र अपनी अविराम तीव्र गतिसे दिन मास और वर्षोंको पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ते ही जा रहे हैं और इधर जनताकी शुभ दिन देखनेकी प्रतीक्षा भी द्रौपदीके चीरकी भांति अनन्ततामें लीन होती दिखाई देती है। देशवासियोंका कुछ ऐसा विश्वास-सा बनता जा रहा है कि भविष्यमें तो देशकी सुखशान्ति और सम्पत्ति क्षितिज-रेखाकी भांति सदा हमसे दूर ही दूर हटती जायेगी। किसी भी विभागके किसी भी कार्य में, किसी क्षेत्रमें आप चले जाइये और निरीक्षण कीजिये, तो आपको सर्वत्र एक अवसादपूर्ण अवनति और अधोगतिकी बढ़ती हुई प्रतिष्ठा दिखाई देगी।

हमने स्वराज्य प्राप्त करनेके पश्चात् एक-एक करके तीन पन्द्रह अगस्तके ऐतिहासिक दिवस देख लिये, पर किसी १५ अगस्तके शुभ दिवसने हमें कोई अभिनव आशाप्रद संदेश नहीं दिया। राष्ट्रिय और अन्तर्राष्ट्रिय स्थितियोंने अंग्रेजको तो भारत छोड़नेके लिए विवश कर दिया और वह चला भी गया। आज अंग्रेजको यहांसे बिदा हुए तथा हमें स्वतन्त्र हुए पूरा एक चौथाई युग बीत गया है, पर जनताके दुःखमें कोई कमी नहीं आई। न्यूनता तो दूर रही, दिनों-दिन वृद्धि ही होती जा रही है। प्रत्येक व्यक्तिको प्रत्येक विभाग और व्यवस्थासे असंतोष है। क्या राजा, क्या प्रजा, क्या धनी, क्या निर्धन, क्या मालिक, क्या मजदूर सभी असंतुष्ट हैं, सभी निराश हैं। धर्म-प्राण भारतीय संस्कृतिके उपासक हों या धर्म और संस्कृतिसे ३६का सा सम्बन्ध रखनेवाले साम्यवादी, व्यापारी हों या सरकारी कर्मचारी, श्रमकार हों या कलाकार, प्रत्येक व्यक्तिके मुख पर अहर्निश शासनतन्त्रकी निन्दा के अतिरिक्त दूसरी बात सुनाई ही नहीं देती।

अन्ततोगत्वा लोकमें फैली हुई यह अप्रियता अकारण ही तो नहीं है। जो दुःखी होगा — कष्ट पायगा, वह तो अवश्य प्रत्येक शासनकी निन्दा करेगा ही। इस समय प्रायः सभी पीड़ित हैं अतः सभीके हृदयोंमें सरकारके प्रति एक व्यापक असंतोषकी लहर फैल रही है। भ्रष्टाचार, अत्याचार आदिके उदाहरण और घटनाओं का उल्लेख कर हमें यहां लेखका विस्तार नहीं करना है। प्रतिदिन सैकड़ों ऐसी घटनायें प्रकाशित होती रहती हैं। आचार्य श्री कृपलानीने भी अभी उस दिन अपने एक वक्तव्य में कांग्रेसी शासन चक्रकी त्रुटियां बड़े विस्तार-पूर्वक बताई हैं।

स्वराज्य या विराज्य—

जहां वेद 'स्वाराज्य' और उससे भी बढ़ कर 'वैराज्य' आदि जिन उत्तरोत्तर उत्कृष्ट राज्योंका वर्णन करते हैं, वहां ऐसा प्रतीत होता है कि हम ठीक उसकी विपरीत दिशा में जा रहे हैं। क्योंकि स्वराज्यको पाकर वैराज्य आदि भूमियोंको प्राप्त करनेका प्रयत्न करनेकी अपेक्षा हम तो विराज्य—एक व्यापक अराजकता—के शिकार बन बैठे हैं।

सर्वत्र व्याप्त एक विशाल अराजकता ही प्रजाके सब दुःख द्वन्द्वोंका मूल कारण है। न कोई राजा है न प्रजा, न विधि है न नियम। सर्वत्र एक असह्य स्वेच्छाचारिताका बोल-बाला हो रहा है। सम्पूर्ण अनुशासन अपने व्यक्तित्व या पार्टी प्रभावमें समाप्त हो जाता है। जनताके हितों पर कितना ही कुठाराघात क्यों न होता रहे पर किसीके कान पर जूं तक नहीं रेंगती। किन्तु अपनी पार्टी या व्यक्तिके हितों या विचारोंको जहां जरा भी आंच लगती देखेंगे कि आकाश-पातालको एक कर डालेंगे, उसकी निकाल, उसकी पकड़, उसकी डांट डपट। विपरीत जो व्यक्ति इनकी हां में हां मिलाता रहे, सब कुछ चुपचाप सुनता और सहता रहे उसके सब दोष गुण और सब अपराध कर्त्तव्य मान कर आंखोंसे ओझल कर दिये जाते हैं। ऐसी दशा में अराजकता स्वतः व्याप्त हो जायगी और अराजकतामें कभी सुख-शांति नहीं हो सकती।

किया क्या जाय ?

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इस दुर्दशा का अन्त करनेके लिए कोई ऐसा उपाय भी है या नहीं ? इसके उत्तरमें हम कह सकते हैं कि ढिल-मिल नीतिको छोड़ कर निष्पक्ष भावसे निग्रह और अनुग्रहकी दृढ़ नीतिको अपनानेसे ही राष्ट्रका कल्याण हो सकता है। जैसे कि श्री १०८ आचार्यचरण अमृतवाग्भव जी महाराजने 'श्री-राष्ट्रालोक' में स्पष्ट लिखा है—

'निग्रहानुग्रहाभ्यां ये निर्लोभाः समदर्शिनः।
समुन्नयन्ति संसारं त एवाऽऽर्या स्मृताः बुधैः॥

तदनुसार भ्रष्टाचार करने वाले प्रत्येक व्यक्तिको जनताके समक्ष कठोरतम दण्ड दिया ही जाना चाहिए। चाहे वह हमारे प्रधानामात्य या ऐसे ही किसी भी उच्च पदपर बैठे हुए किसी भी अधिकारीका भाई-बन्धु पुत्र आदि ही क्यों न हो। स्वार्थी यूरोपवासी कहते हैं कि "दान अर्थात् अनुग्रहका आरंभ घरसे करो" पर हम कहते हैं कि 'दान—अनुग्रह--नहीं प्रत्युत दण्ड--निग्रह--का आरंभ घरसे करो।'

जब तक आप पहले अपने ही व्यक्तियोंको अपराधसे रोकेंगे नहीं--उन्हें कड़ा दण्ड नहीं देंगे तबतक दूसरोंका सुधार कैसे कर सकते हैं। बात तो यह है कि अपनोंको भ्रष्टाचार करते देखकर भी उन्हें दंड देनेका जो साहस नहीं रखता वह दूसरेको कभी दंड दे ही नहीं सकता। यही कारण है कि आज सर्वत्र अराजकताजन्य भ्रष्टाचारका बोलबाला है।

इसलिए हमारा स्पष्ट और दृढ़ मत है कि राष्ट्रकी उन्नति और सुख समृद्धिके लिए सर्वत्र शासकोंको समदर्शी और निर्लोभ भावसे, निग्रहपरायण होना ही होगा। जबतक प्रत्येक अपराधीको कड़ा दंड नहीं दिया जाता तबतक देशका उद्धार होनेका नहीं।

शुभारम्भ—

हमारे माननीय खाद्यमन्त्री श्री क० मा० मुन्शी महोदय जहां एक सच्चे राष्ट्रीय हैं वहां वे भारतीय-संस्कृतिके उपासक भी हैं। वे राष्ट्रकी उन्नति भारतीय संस्कृतिके अनुरूप ही चाहते हैं। इसीलिए प्राचीन भारतीय आदर्श स्वरूपको पुनः प्रतिष्ठित करनेके लिए उन्होंने वनमहोत्सव मनानेका व्यापक शुभ प्रयत्न किया है। आजके वैज्ञानिक युगमें वृक्षोंका महत्त्व बतानेकी विशेष आवश्यकता नहीं। एक प्रकारसे मानवका सम्पूर्ण अस्तित्व वृक्ष--वनस्पतिपर ही निर्भर करता है, यह सर्वसम्मत सत्य सिद्धान्त है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन ऋषि महर्षि सदा वनोंमें निवास करते थे और शास्त्र वनों एवं वृक्षोंके गुण गाते नहीं थकते थे। पर बीचमें विदेशी शासकोंने हमारे बड़े--बड़े विशाल वन नष्ट करवा डाले, परिणाम स्वरूप देशका धनधान्य भी वनोंके साथ ही नष्ट हो गया। आज भारतके स्वतन्त्र होनेपर एक प्राचीन संस्कृतिके प्रेमी मंत्रीने पुनः अपने वनोंकी वृद्धिका प्रयत्न प्रारंभ किया है। जनताको भी इस शुभारंभमें योग देकर अपने कर्तव्यका पालन करना चाहिए।

शुभस्य शीघ्रम्—

अभी पत्रोंमें प्रकाशित हुआ है कि खाद्य-सचिवालय अविलम्ब अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दीमें करनेका प्रयत्न कर रहा है। तदर्थ माननीय श्री क० मा० मुन्शीने श्रीमाननीय घनश्यामसिंह गुप्तको परामर्श करनेके लिए आमंत्रित भी किया है।

यदि हमें हिन्दीको १५ वर्षके अन्दर राज्य भाषा बना देना है तो सचिवालयके प्रत्येक विभागमें हिन्दीको अविलम्ब स्थान दिया जाना चाहिए। इसके लिए श्री मुन्शीजीने जो पग उठाया है, वह वास्तवमें अभिनन्दनीय है। हम चाहते हैं कि 'शुभस्य शीघ्रम्'के अनुसार जितना शीघ्र हो सके खाद्य-सचिवालयमें हिन्दीका प्रयोग प्रारंभ कर दिया जाय। तथा दूसरे विभाग भी इसका अनुकरण करने लगें।

प्रजातन्त्रका प्रारम्भ—

भारत स्वतन्त्र हो गया और गत २६ जनवरीको वैधानिक रूपसे इसने सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न प्रजातन्त्रकी घोषणा भी कर दी। किन्तु प्रजा द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि-सत्तात्मक प्रजातन्त्रका प्रारम्भ तो आगामी निर्वाचनोंसे ही होगा। इन निर्वाचनोंकी तय्यारियां—निर्वाचकोंकी सूचि-मुद्रण आदि—अभीसे आरंभ हो गई हैं। संभवतः सन् ५१ केमध्य तक निर्वाचन हो सकेंगे।

अवतार

[ले० — श्री बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री एम. ए., एम. ओ. एल.]

अवतार का तात्पर्य क्या है ? अवतार शब्द का अर्थ है उतरना । उतरे हुए को अवतीर्ण कहते हैं । हिन्दी में उतरे हुए के लिए भी अवतार शब्दका प्रयोग होता आया है । सर्व साधारण लोग यही समझते हैं कि संसारके कल्याणके लिए, अधर्मको नष्ट करनेके लिये और धर्मकी स्थापनाके लिए भगवान् इस संसार में मानव शरीर में प्रकट हो जाते हैं । इस प्रकार से वे अपने वास्तविक रूप से मानव दशा में उतर आते हैं । इसी को अवतार कहा जाता है ।

पिछले पचीस वर्षों में इस विषय पर भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में बहुत वाद-विवाद हुआ करते थे । परन्तु अब लोगोंका मस्तिष्क राजनीतिकी ओर अधिक झुक गया है । इसलिए धार्मिक विषयोंमें रुचि घट गई है । फिर भी कोई कोई सज्जन इस युगमें भी ऐसे हैं जिन्हें अभी तक धर्ममें रुचि है । उनके लिए इस लेखमें अवतार पर शास्त्रों की दृष्टिसे विचार किया जायगा । यूरोप के ऐतिहासिक कहते हैं कि आरम्भमें बौद्धों ने बुद्ध भगवान्‌के अवतारोंकी कल्पना की । उनके अनन्तर वैष्णवोंने भगवान् विष्णुके अवतारोंका वर्णन किया । तदनन्तर शैव पुराणों में भी अवतारवाद आ गया । हमारे आर्यसमाजी भाई भी ऐसा ही मानते हैं । वे श्रीराम या श्रीकृष्णको विष्णुका अवतार नहीं मानते । इसी प्रकारसे भगवान् शङ्कराचार्यको भी शिवका अवतार नहीं मानते । अस्तु, पुराणोंकी बातोंको रहने दीजिये । पुराणोंको सभी लोग प्रमाण नहीं मानते । वस्तुतः उनमें अर्वाचीन कालमें लेखकों द्वारा इतना प्रक्षेप किया गया है कि आस्तिक श्रद्धालु मनुष्य भी कभी-कभी उन पर सन्देह करने लग जाते हैं । तो हम यहां भारतवर्षके सबसे बड़े दार्शनिक आचार्य श्री अभिनवगुप्तपादके एक वाक्यका उद्धरण करते हैं । वे 'बृहत्प्रत्यभिज्ञा' के अन्त पर अपने पूर्वज अत्रिगुप्तका इतिहास बताते हुए इस प्रकारसे कहते हैं—

> अन्तर्वेद्यामत्रिगुप्ताभिधानः
> प्राप्योत्पत्तिं प्राविशत् प्राग्र्यजन्मा ।
> श्रीकश्मीरांश्चन्द्रचूड़ावतारैः—
> निःसंख्याकैः पावितोपान्त भागान् ।

अर्थ— अत्रिगुप्त नामके ब्राह्मण अन्तर्वेदी (गंगा और यमुनाके मध्यका प्रदेश) में जन्म लेकर काश्मीर आ गये । काश्मीर मण्डलके प्रांतभाग भगवान् महेश्वरके असंख्य अवतारोंसे पवित्र हो गए थे । (इसीलिए अत्रिगुप्त इस देशमें आकर बस गये ।) यहां भगवान् महेश्वरके अनन्त अवतारोंका उल्लेख आचार्यने किया है ।

आचार्य अभिनवगुप्तपाद शैव शास्त्रके एक प्रसिद्ध गुरु हैं । इनका सिद्धांत यह है कि जो कुछ है शिव

निर्वाचन तो विलम्बसे या अविलम्बसे होंगे ही,पर विचारणीय प्रश्न है कि क्या भारतके १८ करोड़ नर-नारी मतदानकी महत्ताको समझते भी हैं या नहीं । जो व्यक्ति मत-वोटकी महत्ताको नहीं समझता, उससे यह कैसे आशा की जाय कि वह उचित व्यक्तिको ही अपना मत देगा । और हमारे इस देशमें जहां दश प्रतिशत लोग शिक्षित न हो और ६० प्रतिशत व्यक्तियोंने अबतक कभी नगरपालिका तकके निर्वाचनोंमें भाग न लिया हो वे सहसा धारासभाओंके लिए योग्य सदस्योंका निर्वाचन कर सकेंगे यह संभव नहीं ।

इसलिए सम्बद्ध संस्थाओंको चाहिए कि वे अभीसे ग्राम-ग्राममें अपने प्रचारक भेजकर पहले जनताको मतदान के सिद्धान्त, नियम तथा महत्व आदि बतावें और इस प्रकार उन्हें उचित व्यक्तिको मतदानके लिए प्रस्तुत करनेका प्रयत्न करें, तभी आगामी निर्वाचनोंसे कुछ लाभ हो सकेगा ।

ही है। उससे भिन्न कुछ भी नहीं है। यह संसार शिवकी ही शक्तिका विलास है। शिव पूर्ण सच्चिदानन्दकन्द परब्रह्म हैं। अपनी शक्तिके विलाससे शिव स्वयं जड़ और चेतन बन जाते हैं, जीव और ईश्वर रूपमें प्रकट होते हैं। शिव वस्तुतः पूर्ण हैं और अभिन्न हैं, परन्तु अपनी महेश्वरता के ही बलसे अभेदरूप रहते हुए ही भेदाभेद दशाको ग्रहण करते हैं। अभेद दशामें तो उनका स्वरूप पूर्ण अहं विमर्श होता है। उस दशामें अहंके अतिरिक्त किसी वस्तुका आभास ही नहीं होता। इसी अहं विमर्शका नाम वेदादि शास्त्रोंमें ॐ कहा गया है। भेदाभेद दशामें उसे यह संसार अपनेसे अतिरिक्तसा प्रतीत होता है। इसीलिए इस संसारका आभास इदं रूपमें, विषय रूपमें, भिन्न रूपमें होता है। संसार अहंसे पृथक् प्रतीत होता है। इसीलिए यह भेदकी दशा है। परन्तु संसार भिन्न होते हुए भी अहं से अभिन्न प्रतीत होता है। क्योंकि इस दशामें संसार की प्रतीति इस प्रकारसे होती है कि अहम् इदम्— अर्थात् मैं यह हूं। यहां संसार विषय रूपमें इदं रूपमें प्रतीत होता हुआ भी अहं रूपके साथ अभिन्न प्रतीत होता है। इसीलिए यह दशा भेदाभेद दशा है। इस दशामें शिवका नाम भगवान् सदाशिव या भगवान् ईश्वर है। इस प्रकार सदाशिव और ईश्वरकी दशा पर स्वयं परमेश्वर ही उतर पड़ता है। तो सदाशिव और ईश्वर पूर्ण परब्रह्म शिव के अवतार कहे जा सकते हैं।

इसी प्रकारसे परमेश्वर अपनी शक्तिके विलाससे छत्तीस तत्वोंकी सीढ़ियों से उतर कर जड़ पृथिवी आदि भूतोंके रूपमें भी प्रकट हो जाता है और मानव शरीर आदि चेतन पदार्थोंके रूपमें भी प्रकट होता रहता है। एक ओरसे ईश्वर बन कर इस संसार पर शासन करता है, दूसरी ओरसे जीव बन कर शासित होता रहता है। वस्तुतः विचार पूर्वक देखा जाय तो यह सारा संसार ही परमेश्वर का अवतार है। परन्तु हम लोग ऐसा व्यवहार नहीं करते। परमार्थ दशामें तो एक जड़ परमाणु और पूर्ण परमेश्वरमें कोई भी भेद नहीं। वहां परमाणु भी परमेश्वर ही है। इसीलिए आचार्य सोमानन्द 'शिवदृष्टि' में कहते हैं—

घटो मदात्मना वेत्ति वेद्म्यहं च घटात्मना।
सदाशिवात्मना वेद्मि स वा वेत्ति मदात्मना॥
... ...
नाना भावैः स्वमात्मानं जानन्नास्ते स्वयं शिवः॥

अर्थात् "मैं समझता हूं तो यह घट मेरे रूपमें समझ रहा है। जैसे घट सर्वव्यापक है और मैं भी उसीका एक रूप हूं। इसी प्रकारसे मैं भी सर्वव्यापक हूं तो घट बन कर मैं ही उस रूपमें अनुभव कर रहा हूं। मेरे रूपमें सदाशिव अनुभव कर रहा है और मैं सदाशिवादिके रूपमें सर्वत्र अनुभव कर रहा हूं। इस भांति वस्तुतः नाना प्रकारोंसे स्वयं भगवान् शिव ही अपने ही आपका अनुभव कर रहे हैं।" इस सिद्धांतके अनुसार कौन-सी वस्तु है, जिसे शिव न कहा जाय। परन्तु यह परमार्थ की दशा है। अज्ञानका फल जब सर्वथा मिट जाता है तभी ऐसा अनुभव हो सकता है। इस समय हम लोग व्यवहार दशामें हैं। व्यवहार दशामें जिस प्रकार उत्तम पुरुष और है और मध्यम तथा प्रथम पुरुष और हैं। उसी प्रकारसे एक ही परमेश्वर को किसी रूपमें ईश्वर माना जाता है, किसी रूपमें जीव, किसी रूपमें मनुष्य, तो किसी रूपमें पशु-पक्षी आदि। समस्त देवता भी इसी परमेश्वरके भिन्न-भिन्न रूप हैं। इसके भिन्न-भिन्न नाम पड़ जाते हैं। इसकी पूर्ण ईश्वरता जिस रूपमें प्रकट हो उसी रूपको हम व्यवहारमें ईश्वर कहते हैं। महा सृष्टिकी शक्ति जिस पिण्डमें प्रकट हो, उसी को हम ब्रह्मा कह सकते हैं, जिसमें सृष्टिके रक्षण की शक्ति दिखाई पड़े उसे हम विष्णु कह सकते हैं। इसी प्रकारसे संहारकी शक्ति रखने वाला जो रूप हो वह साक्षात् रुद्र है। विश्व को भेदाभेद दृष्टिसे देखने वाला जो है, वह ईश्वर और सदाशिव रूप ही है। सर्वथा अभेदकी दृष्टिसे देखने वालेको ही इस व्यवहार दशामें भी शिव या भैरव कह सकते हैं।

इस प्रकार से यद्यपि सारा संसार भगवान्का अवतार ही है, फिर भी सभी को अवतार नहीं कहा जाता है। अवतार उसी को कहा जाता है जिसमें कोई विभूति प्रकट हो। इसी लिए भगवान् गीता में अपनी विभूतियों का

उपदेश दसवें अध्यायमें करके यह समझा देते हैं कि इन-इन स्वरूपोंमें मेरी उपासना करनेसे अनेक प्रकारके फलोंकी प्राप्ति होती है। इसके अनन्तर ही ग्यारहवें अध्यायमें अपने वास्तविक विश्वमय-विश्वोत्तीर्ण सर्वथा परिपूर्ण स्वरूपका साक्षात्कार करा देते हैं। दसवें अध्याय में व्यवहारका उपदेश है और ग्यारहवेंमें परमार्थका। यद्यपि पाप पुण्यादि सारा संसार व्यवहार ही है, फिर भी व्यवहार और व्यवहार में भेद है। क्रयविक्रय आदि, मारण मोहन आदि अशुद्ध व्यवहार है और उपासना आदि शास्त्र पठन पाठन आदि शुद्ध व्यवहार है। यह शुद्ध व्यवहार ही जीव को परमार्थके योग्य बना देता है। तो इस शुद्ध व्यवहारमें जिस व्यक्तिमें जिस शक्तिको हम देखते हैं उसको उसका अवतार, कह देते हैं। बौद्धोंको जिस जिस जीवनें पूर्ण कारुणिकताका आभास हुआ उस उसको उन्होंने बोधिसत्वका अवतार मान लिया। इसी प्रकारसे परमेश्वरकी रक्षण शक्तिको हमने श्रीराम या मत्स्य कूर्म आदि रूपोंमें देखा तो हमने उनको भगवान् विष्णु का अवतार कहा। आचार्य अभिनवगुप्तपाद को काश्मीर के प्रांत भागोंमें असंख्य अभेददशा में रहने वाले सिद्ध-जनोंका साक्षात्कार हुआ। इसीलिए उन्होंने उन सबको भगवान् चन्द्रचूड़के अवतार मान लिया।

संसारमें दो प्रकारकी विचार-धाराएं साथ चली आ रही हैं, एक भोगवादकी और दूसरी त्यागवादकी। त्यागवाद ही संसारमें शान्तिको स्थापित कर सकता है। जब जब भोगवाद ने त्यागवाद को बहुत अधिक नीचे दबाया तब तब संसारमें किसीनकिसी रूपमें वैष्णवी शक्ति प्रकट होती रही और भोगवाद के भक्तों को दण्ड दे दे कर त्यागवाद द्वारा शान्ति की स्थापना करती रही। इस समय भी भोगवाद ही भोगवाद का शासन सारे संसार पर हो रहा है। परन्तु अभी तक त्यागवाद कहीं कहीं भोगवाद के सामने सिर उंचा करके उसका मुकाबला करता ही रहता है। ज्यों ही त्यागवाद अभिभूत होकर नाम शेष रह जाएगा त्योंही अवश्य वैष्णवी शक्ति अवतार रूप में संसार में प्रकट हो जाएगी। परन्तु यह समझना निरी भूल है कि कल्की आकर हिन्दुओं की या भारतवर्ष की ही रक्षा करेंगे और दूसरे लोगों का नाश करेंगे। नहीं, कल्की आएंगे और समस्त भोगवादियों को नष्ट भ्रष्ट कर के उनके मदको चूर्ण करके त्यागवादकी स्थापना कर जाएंगे। इसलिए यदि हम कल्कीके अनुग्रहको चाहते हों तो हमें त्यागवादका आश्रय लेकर पूरी तरहसे आर्य बनना चाहिए।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

कन्या राशिके शनि और चतुर्ग्रही षड्ग्रही योगका संसार पर प्रभाव

कोरिया और काश्मीरका भविष्य, स्व० भारतका चौथा वर्षलग्न

दैवी आपत्तियोंका मूल कारण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

——:०:——

इन तीन मासोंमें बड़े महत्त्वपूर्ण ग्रहयोग बन रहे हैं। महाग्रह शनि जो ढाई वर्ष तक एक ही राशिमें रहता है, वह भी भाद्रपद शुक्लाष्टमी मंगलवार ता० १९ सितम्बर १९५० को सिंह राशि छोड़कर कन्यामें प्रवेश करेगा। इस दिनसे कर्क राशिवालोंकी बृहत्कल्याणी (साढेसाती) और वृषभ मकर राशिवालोंकी लधुकल्याणी (ढैय्या) समाप्त हो जायेगी। एवं इसी दिनसे तुलाराशिको बृहत्कल्याणी (साढेसाती) और मिथुन कुम्भ राशियोंको लधुकल्याणी (ढैय्या) प्रारम्भ होगी। यह कन्याका शनि वृषभ कन्या मकर राशिवालोंको लोह पाद पर आ रहा है जो कष्टप्रद है। कर्क धनुः कुम्भ राशियोंको सुवर्णपाद पर हानिकारक है। मेष सिंह वृश्चिक राशियोंको रजत (चांदीके) पाद पर शुभ एवं मिथुन तुला मीन राशिवालोंको ताम्रपाद पर भी श्रेष्ठ-फल कारक रहेगा।

विशेषफल—प्रजामें अशान्ति, राजाओंमें युद्ध, दुर्भिक्ष, अन्न और घृतकी नौ मास तक विशेष महंगाई, अनियमित वर्षा, द्रविड़, मध्य देश और मालवमें छत्रभङ्ग, पारस्परिक संघर्ष विरोध और उत्पात, पशुनाश और काश्मीरमें विग्रहादि उपद्रवोंसे विशेष हानि होती है। यथा—

यदा भास्करस्यतनयः कन्याराशिं प्रविश्यति।
जलशोषं भवेद्वायुर्मध्यदेशे नृपक्षयम्॥

उत्तरायां यदा सौरिः पशून्वै नाशयेत्खलुः।
उपधान्य महार्घाणि षण्मासानि निरन्तरम्॥
कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः।
शनिः करोति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्॥
काश्मीरं याति नाशं हयरव दलितं विग्रहं तत्रकुर्याद्-
रत्नस्थं धातुरूप्यं गजहय वृषभं छागलं माहिषञ्च।

कन्यायां यदा शनिः तदा दुर्भिक्षं चतुर्दिशासु, पिता पुत्रं विक्रीणाति, अन्ननाशः, जलवर्षा नास्ति, द्रविड़ देशे राजपीड़ा, छत्रभङ्गः। सर्व धान्य संग्रहे द्विगुणोलाभः, मासनवकं यावद्धान्यं रक्षणीयं, पश्चाद्विक्रयः। धातु वस्तु समर्घं, उत्तम वस्तु महर्घं, मालवदेशे परस्पर विरोधः। राजभयाद्भूम्यां किञ्चिदुत्पातादि अशुभम्॥

श्रावणमें पांच रविवार तथा श्रावण कृष्ण ११ को मृगशीर्ष नक्षत्र और शुक्ल पक्षमें तिथिक्षय, आश्विन कृष्ण पक्षमें पंचमी रविवार, ८ बुध और ११ को शनिवारका होना भी संसारमें दुर्भिक्ष अन्न घृतादि पदार्थोंकी महर्घता, युद्ध रोग और चौर डाकुओंके उपद्रवोंको प्रकट करनेवाले हैं।

कृत्तिका श्रावणेकृष्णैकादश्यां मध्यमा भवेत्।
सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद् दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः॥
श्रावणे शुक्लपक्षे च तिथिः क्वापि क्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिकेमासे छत्रभङ्गः प्रजायते॥

आश्विने कृष्णपञ्चम्यां रविवारः प्रवर्तते ।
माघमासे ह्यमावास्यां महर्घं निश्चयाद् घृतम् ॥
आश्विने च बुधेऽष्टम्यां विधेयो घृतसंग्रहः ।
कार्तिके विक्रयस्तस्य सम्पदः स्युः पदेपदे ॥
एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्रभङ्गोऽथवा भुवि ।
नगरग्रामभङ्गःस्याद्वैरिचौराद्युपद्रवाः ॥

चार और छः ग्रहोंके एकत्र होनेका प्रभाव

भाद्रपद कृष्ण ३० ता० १२ सितम्बरको सिंह राशि में चार ग्रह (सू. चं. शु. श.) एकत्र होंगे और आगे आश्विन कृष्ण ३० ता० ११ अक्टूबरको कन्या राशिमें छः ग्रह (सू. चं. बु. शु. श. के.) एकत्र हो रहे हैं। वरुण (नेपचून) भी कन्या राशिमें होनेसे सप्तग्रह योग बन गया है। इसे संहिताग्रन्थोंमें गोलयोग भी कहा गया हैं। इसका संसार पर भयानक प्रभाव होता है। कहीं दुर्भिक्ष जलप्लावन तो कहीं युद्धसे पृथ्वी रक्तरञ्जित हो जाती है। संसारमें अराजकता बढ़ती है, महापुरुषकी मृत्यु या उन्हें मृत्युतुल्य कष्ट होता है। परचक्र भय, छत्रभङ्ग, जननाश, भूकम्पादि आधिदैविक आधिभौतिक उत्पातोंसे प्रजा त्रस्त होती है। यथा—

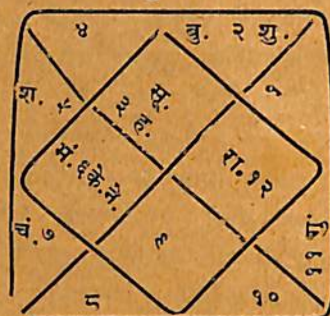
एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः ।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा ॥
ग्रहाणां यन्मासे ननु भवति षण्णां निवसति
तदा गोलोयोगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते ।
नृपाणां नाशः स्याज्ज्वलति वसुधा शुष्यति नदी
भवेल्लोको रङ्कः परिहरति पुत्रं च जननी ॥

भारत पर प्रभाव

कुछ एक विद्वान् भारतको कन्या राशिके प्रभाव क्षेत्रमें भी मानते हैं, अतः कन्या राशिमें इस सप्तग्रही योगका प्रभाव भारत पर भी अवश्य होगा। परन्तु इतना हम स्पष्ट बता देते हैं कि यहां कन्या राशिमें आ० कृ० ३० को सूर्यचन्द्रमाके अतिरिक्त अंश सा‍र्ध्य युति या युद्ध किसी भी ग्रहका नहीं है, प्रत्येक ग्रह एक दूसरेसे ६ से २० अंश तककी दूरी पर है और बुध शुक्र शनि मित्र क्षेत्री भी हैं, अतः भारत पर इसका विशेष अनिष्ट प्रभाव नहीं होगा। हां, मिथुन कन्या तुला और कुम्भ राशि वाले व्यक्तियों तथा प्रान्तोंको शारीरिक मानसिक क्लेश एवं आर्थिक सङ्कटका सामना करना पड़ेगा। यहां शनि, केतु और वरुण (नेपच्यून) के साथ है, अतः यह संसारकी राजनैतिक सामाजिक आर्थिक एवं व्यापार की स्थिति में अकल्पित घटनाएं उपस्थित करेगा। इसका सविस्तर विशेष विवेचन और आश्विन कृष्ण अमावस्याको होने वाले सप्तग्रह योगका प्रभाव किस राष्ट्र प्रान्त एवं व्यापार पर कैसा पड़ेगा ? इन सब बातोंका विशेष विवेचन हम विजया-दशमी (ता. २० अक्टूबर १९५० ई०) पर प्रकाशित होने वाले 'श्रीस्वाध्याय'के नववर्षाङ्क में करेंगे ।

कोरियाका भविष्य

कोरियन युद्धारम्भ लग्न



गत ता० २५ जूनको प्रातः ब्राह्ममुहूर्तमें कोरियामें गृहयुद्ध प्रारम्भ हो जानेसे सारे विश्वमें खलबली मच गई है और समस्त राष्ट्र तीसरे विश्वयुद्धकी विभीषिकासे भयभीत हो रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति यह जाननेके लिए उत्सुक हैं कि वर्तमान कोरियाका युद्ध क्या रूप धारण करेगा ? कुछ एक सहयोगी दैवज्ञोंने १४ जुलाई या २४ जुलाईको विश्वयुद्ध प्रारम्भ होकर रूसकी विजय होने, तथा किसी एक महानुभावने सं० २००७ के कार्तिक तक प्रलय हो जानेकी भविष्यवाणी करके जनताको भयभीत किया हुआ है। जनताको इस प्रकारकी भयानक भविष्य—वाणियों एवं आने वाली आपत्तियोंसे भयभीत न होकर

इन दैवी आपत्तियोंके मूल कारणको खोजकर उनके प्रतीकारका उपाय करना चाहिए। 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकों को हम यहां कोरिया युद्ध तथा संसारकी परिस्थिति पर अपने स्पष्ट विचार और इस अशांतिके मूलकारण शास्त्रीय आधार पर बतायेंगे।

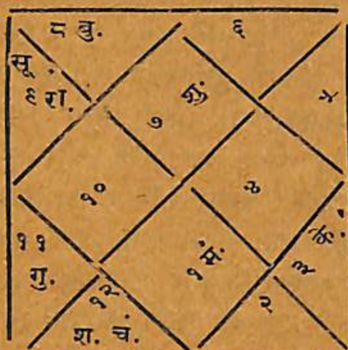
पाठकोंको स्मरण होगा कि आजसे दो वर्ष पूर्व विगतवर्ष सं० २००६के पंचाङ्गमें हमने स्पष्ट लिखा था कि—"सिंहके शनिमें संसार भरमें रूसी साम्यवादका प्रभाव बढ़ता जायगा।...वर्षारम्भमें ही च्यांगका पतन हो जाये और भाद्रपद तक समस्त चीन कम्यूनिस्ट प्रभावक्षेत्रमें चला जाये ..." तदनुसार गतवर्ष ठीक ऐसी ही स्थिति संसारके सामने प्रत्यक्ष आ चुकी है। गतवर्ष ठीक इन्हीं दिनों हमने अपने वर्तमान वर्ष सं० २००७ के 'श्रीविश्वविजय—पंचाङ्ग' में पृष्ठ ३७ पर और 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें स्पष्ट लिखा था कि—"इस वर्षमें भी साम्यवादका प्रभाव बढ़ता जायेगा। नेपचूनके साथ कन्याके मंगलमें ही सौर श्रावण मास—जुलाईके अन्त—तक तिब्बत कम्यूनिस्टोंके प्रभावमें चला जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। आगे कन्याके शनिमें पूर्वोत्तरसे साम्यवादियोंकी गतिविधि पश्चिम दक्षिणकी ओर क्रमशः बढ़ने लगेगी।" तदनुसार अभी जुलाईके आरम्भमें ही पाठकोंने सुना होगा कि तिब्बतमें बीसहजार कम्यूनिष्ट फौजोंका प्रवेश हो गया है और वहां उनकी गतिविधि बढ़ती जा रही है। ग्रहस्थितिके आधार पर हम कह सकते हैं कि कन्याके मंगलमें ३० जुलाई तक उत्तरी कोरियाके आक्रमणको अमेरिका या संयुक्तराष्ट्रसंघ किसी भी प्रकार न रोक सकेगा। तीव्रगतिसे वह दक्षिण कोरियामें आगे बढ़ता जायेगा। मंगल युद्धारम्भ लग्नसे चतुर्थ होनेके कारण दक्षिण कोरियाकी अधिकांश जनताका सहयोग भी उत्तरी कोरियाके पक्षमें रहेगा। दक्षिण कोरियाके प्रेसिडेण्ट सिगमन रीको भयंकर संकटका सामना करना पड़ेगा। उनकी स्थिति राष्ट्रवादी चीनके प्रेसिडेण्ट च्यांगसे भी अधिक बिगड़ जायेगी। अभी कन्याके मंगल और गुरुके वक्रत्वकालमें ही दक्षिणी कोरियाका पतन हो जाना सम्भव है। परन्तु तृतीय विश्वयुद्ध आरम्भ नहीं होगा।

अभी विश्वयुद्ध नहीं होगा

मिथुन लग्नमें यह युद्ध प्रारम्भ हुआ है। लग्नेश १२वें, राज्य भावमें राहु मंगलसे दृष्ट है और राज्येश गुरु पर शनिकी दृष्टि है। युद्ध अशांति एवं उत्पात कारक ग्रह मंगल और शनि हैं और शांति कारक गुरु। इन्हींकी शुभाशुभ स्थितिवश संसारमें युद्धोत्पात और सुख शांति होती रहती है। इस समय कन्या राशिमें मंगल केतु और नेपच्यून ये तीन ग्रह एकत्र हो रहे हैं और शनिसे इनका द्विर्द्वादश सम्बन्ध है। कन्या राशि दक्षिण दिशाकी द्योतक और मंगल दक्षिणका अधिपति है, इसी कारण दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण हुआ और उसीके जन-धनका अधिक विनाश हो रहा है। लग्नसे चतुर्थ स्थानमें होनेसे यह भी स्पष्ट है कि यह कोरियाका पारस्परिक गृह युद्ध ही है। मिथुन राशि अमेरिकाके प्रभावक्षेत्रमें है और मिथुन लग्नमें ही यह युद्ध आरम्भ हुआ इसी कारण अमेरिका इस युद्धमें कूदा है। परन्तु लग्नेश १२वें है अतः अमेरिकाकी इसमें बहुत हानि होगी। लग्न पर गुरु की दृष्टि है किन्तु उत्तर दिशाकी मीन राशिका अधिपति यह गुरु गत ता० २८ जूनसे ही वक्री हो गया है अतः २८ जूनसे आगे उत्तरोत्तर उत्तरी कोरियाका बल साहस बढ़ता जा रहा हैं। जब तक मंगल कन्यामें है तब तक (३० जुलाई तक) दक्षिण कोरियामें अमेरिकाका भयंकर विनाश होगा। आगे स्थितिमें कुछ परिवर्तन होनेकी सम्भावना है। दशमेश गुरु दशम भावसे व्ययमें वक्री है और दशममें राहु मंगल नेपच्यूनसे दृष्ट है ये दक्षिण कोरियाके साम्राज्यवादी प्रशासक प्रेसीडेण्ट सिगमनरीके लिए घातक हैं। उनका आत्म सम्मान और व्यक्तित्व नवम्बर तक नष्ट-सा हो जायेगा। लग्न द्विस्वभाव राशिका है और शनि मंगलका योग वा दृष्टि सम्बन्ध नहीं है अतः यह युद्ध बहुत लम्बा नहीं चलेगा और न यह विश्वयुद्धका रूप ही धारण करेगा। कोरियाके वर्तमान गृहयुद्धमें अमेरिका और रूसका प्रधान भाग है अतः इस युद्ध स्थिति पर विचार करनेके लिए रूस और अमेरिकाके अधिनायकोंकी जन्म-कुण्डलियों पर विचार

करना भी आवश्यक है, एतदर्थ ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंके लाभार्थ हम यहां उक्त दोनों देशोंके प्रधान पुरुषोंकी जन्म कुण्डलियां भी उपस्थित कर रहे हैं।

श्री जोसेफ् स्टालिन



श्री प्रेसिडैण्ट ट्रूमैन



दोनोंका परस्पर द्विर्द्वादश लग्न है और राशि स्वामियों की शत्रुता तथा एक दूसरेकी छठी आठवीं राशियां हैं, अतः स्टालिन और ट्रूमैनमें कभी भी स्थायी मैत्री न हो सकेगी। दोनों ही महान् कूटनीतिज्ञ स्वार्थ-प्रिय प्राणी हैं। श्री स्टालिनको इसी जुलाई मासमें मंगलकी महादशा समाप्त हो रही है, अतः अभी यह प्रत्यक्ष रूपमें अपने राष्ट्र (रशिया)को युद्धाग्निमें झोंकना नहीं चाहेगा और उधर ट्रूमैनकी ग्रहस्थिति भी आगे युद्धके पक्षमें नहीं है। आगे शनि कन्या राशिमें जा रहा है और २६ अक्टूबरको गुरु भी मार्गी हो जायेगा अतः इस अवधिमें किसी शांतिप्रिय शक्तिशाली राष्ट्रके सत्प्रयत्नसे कोरियामें शान्ति स्थापित हो जाना सम्भव है। श्री ट्रूमैनकी साढ़ेसाती प्रारम्भ होने वाली है। षष्ठेश शनि जन्म राशिसे १२वें और जन्म लग्नमें १६ सितम्बरको आ रहा है, अतः आगामी २॥ वर्ष श्री ट्रूमैनके व्यक्तित्व एवं प्रभावके लिए उत्तम नहीं रहेंगे। श्री स्टालिनको अभी १८ वर्षकी राहु महादशा प्रारम्भ हुई है। राहु पराक्रममें लाभेश सूर्यके साथ है, यह श्री स्टालिनके बल पराक्रम साहस एवं महत्वाकांक्षाओंको तो बढ़ाने वाला है परन्तु सूर्य सहयोगी होनेसे रशिया में शत्रु द्वारा सहसा विस्फोटक स्थिति भी उत्पन्न करता है। यह राहु महादशा ही इनके लिए मारक भी होगी। धनुः राशि और सूर्य पूर्व दिशाके अधिपति हैं और राहु नैऋत्य कोण (दक्षिण पश्चिम) का अधिनायक, अतः पराक्रममें धनुराशिस्थ वर्तमान राहु महादशामें सुदूर पूर्वके राष्ट्रों और एशियाके दक्षिण पश्चिममें श्री स्टालिनके सिद्धान्तों (साम्यवाद वा कम्यूनिज्म) का विशेष प्रसार होता जायगा। तात्पर्य यह है कि स्टालिन अभी विश्व युद्ध को आमंत्रित नहीं करेगा, पर धीरे धीरे एशियामें अपने पैर पसारता जायगा, फलतः आगे वृश्चिकके शनि राहु संयोगमें तृतीय विश्वयुद्ध भड़क उठेगा।

स्वतन्त्र भारतका चौथा वर्ष

आजसे तीन वर्ष पूर्व १५ अगस्त १९४७ को भारतीय स्वतंत्र उपनिवेशके जन्मलग्न पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए हमने जो भविष्य सूचन किया था उससे पाठक परिचित ही होंगे। आरम्भिक तीन वर्ष भीषण कठिनाईके बताते हुए वहां स्पष्ट लिखा था कि:—

"लग्न स्थिर है और चलितमें सू. बु. गु. शु. केन्द्रमें गये हैं अतः यह तो निश्चित है कि यह स्वतंत्रता दीर्घजीवी (चिरस्थाई) होगी और आगे उत्तरोत्तर भारतका गौरव संसारमें बहुत बढ़ेगा·····आरम्भिक तीन वर्ष भारत के लिए विशेष शुभाशाप्रद नहीं कहे जा सकते। सरकार एवं जनताके सामने अनेक विषम समस्याएं उत्पन्न होकर कठिन अग्निपरीक्षाका समय उपस्थित होगा ······परन्तु राज्यकी ओरसे इन सब आपत्तियोंका साहस पूर्वक मुकाबला किया जावेगा। निकट भविष्यमें अभी किसी विदेशी आक्रमणका भारतको भय नहीं है। भारत पूर्ण

रूपेण स्वतन्त्र सुखी एवं समृद्ध सं० २०१५ सन् १९५८ के बाद हो सकेगा। ...... इत्यादि।

कठिनाई के आरम्भिक तीन वर्ष और शनिका अन्तर समाप्त हो चुका है और जगदम्बाकी कृपासे भारतने आई हुई सभी परिस्थितियोंका साहस पूर्वक सामना करके संसारमें अपना गौरव बढाया, यह हमारे लिए सौभाग्य का सूचक है। परन्तु अब श्रावण शु० १ सोमवार ता० १४ अगस्त १९५० ई० को इष्टघट्यादि ३१।५४ पर मकर लग्नमें प्रवेश होने वाले चौथे वर्षकी कुण्डली भी हमें भारतीय राष्ट्रकी शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक स्थितिके लिए विशेष समाधान कारक दिखाई नहीं देती। वर्षकुण्डली यह है।

स्वतन्त्र भारतका चौथा वर्षलग्न



लग्नेश शनि अष्टम भावमें चन्द्रमा बुध और मुंथाके साथ पड़ा है। राज्येश शुक्रका लग्नेश शनिसे द्विर्द्वादश योग है और प्रजाके मनका अधिपति चन्द्रमा अष्टममें लग्नेश धनेश शनिसे पीड़ित हो रहा है, अतः इस वर्षमें भारतके शारीरिक बल एवं आर्थिक स्थितिमें कोई विशेष सुधार नहीं हो सकेगा। सूर्य शुक्रके सप्तमस्थ होने और गुरुका शत्रु राशिमें शनिका प्रतियोगी होनेसे इस वर्ष भारतके चारित्रिक एवं नैतिक बलका भी ह्रास होगा। सरकार अपने कार्यसे जनताको प्रसन्न नहीं कर सकेगी। भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी और चोरबाजारीसे जनता संत्रस्त होकर शासनका विरोध करने पर बाध्य होगी। पूंजीपति और श्रमिक वर्गमें संघर्ष होगा। इस वर्षका उत्तरार्ध विशेषकर अष्टम मास और अप्रैल १९५१ से आगेका समय भारतीय राजनीतिमें विशेष संकटका द्योतक है। वर्षके उत्तरार्धमें भारतके किसी प्रधान पुरुष का निधन होगा। केन्द्रीय और प्रान्तीय मंत्रिमण्डलोंमें भी उलट फेर होगा। बंगाल बिहार और राजस्थानमें अराजकता जैसी स्थिति रहेगी। इतना होते हुए भी इस वर्षका राज्येश शुक्र केन्द्रमें है और राज्यभावस्थ मंगल गुरुसे दृष्ट है अतः यह भारतीय शासनको सुदृढ़ बनाकर अन्तमें यशस्वी बनाने वाला है। एतदर्थ हमें विश्वास है कि विगत तीन वर्षोंकी भांति इस वर्षकी विषम परिस्थितियों पर विजय पानेमें भी भारतीय शासन सफल होगा।

काश्मीर —

आजसे तीन वर्ष पहले हम 'श्रीस्वाध्याय' और गत वर्षके पंचांगमें काश्मीर विभाजन और वहांकी समस्या अधिक गम्भीर बननेका भविष्य-सूचन कर चुके हैं, वह होकर रहेगा। भाद्रपदसे आगे कन्याके शनिमें काश्मीरमें असन्तोष, विग्रह और जन-धनका विनाश होगा (काश्मीरं याति नाशं हयरव दलितं विग्रहं तत्र कुर्यात्) शांतिपूर्ण ढंगसे अखण्ड काश्मीर भारतके अधिकारमें नहीं आ सकेगा, यह प्रदेश भारत और पाकिस्तानकी प्रतिस्पर्धाका अखाड़ा बना रहेगा। कन्याके शनिमें काश्मीरकी आर्य-जनताको भयानक संकटका सामना करना पड़ेगा। मध्यम श्रेणी, ग्राम्य जनताका जीवन निर्वाह कठिन होगा। अतः निर्धन निरुपाय लोग वहांसे प्रव्रजनके लिए बाध्य होंगे।

आगेकी ग्रहस्थितिसे हमें प्रतीत होता है कि अभी संसार पर कई प्रकारकी दैवी आपत्तियां भी आने वाली हैं। इन आपत्तियोंका मूल कारण क्या है और इनका प्रतीकार किस प्रकार हो सकता है, यही आज हम पाठकोंको बतायेंगे। यदि निम्नलिखित मूल कारणों पर ध्यान देकर उनके प्रतीकारका प्रयत्न किया जाये तो संसारमें पुनः सुख शान्तिका साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

दैवी आपत्तियोंका मूल कारण

विगत कुछ वर्षोंसे समग्र भूमण्डल 'त्राहि त्राहि' पुकार रहा है। कहीं महायुद्ध, कहीं गृहयुद्ध, कहीं महामारी, कहीं

भूकम्प, कहीं बाढ़ और कहीं अन्नके अभावसे दुखी मानव मच्छरोंकी मौत मारे गए और अब भी उसी विभीषिकासे संसार भयभीत है। भारत विभाजनके समय जो भयानक नरमेध और हाहाकार मचा उसके स्मरणमात्रसे रोमाञ्च होता है। इस हाहाकारके भिन्न-भिन्न कारण दिखाए जा सकते हैं और विचारशीललोग इस विषय पर अपने विचार समय समय पर प्रकट करते हैं। पर हम यहां अपने कल्पनात्मक विचार प्रकट करनेकी अपेक्षा क्रान्तदर्शी परम आप्त ऋषि महर्षियोंके विचारोंकोही इस विषयमें परम प्रमाण मानते हैं, जिन्होंने अपना जीवन केवल जनताके कल्याणके लिए अर्पित कर दिया था और जो एक अक्षर भी मिथ्या कहनेको तैयार नहीं थे। जब जनता रोग, शोक और दुःखोंसे अभिभूत हो कर रहने लगी तो परम कारुणिक महर्षियोंने 'रोगोंके निवारणार्थ आयुर्वेदका आविष्कार किया, वह जिस प्रकार आज से हजारों वर्ष पहले उपयोगी था, उसी प्रकार आज भी उपयोगी है— इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह को अवकाश नहीं। उस आयुर्वेदशास्त्रका इस समय अत्यन्त सुप्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रन्थ 'चरक-संहिता' प्राप्त है। आज हम उस चरक-संहिताके ही शब्दोंमें पाठकोंसे निवेदन करना चाहते हैं कि इन महा आपत्तियोंका मूल कारण क्या है।

चरक-संहिता के विमानस्थानके तीसरे अध्यायका नाम 'जनपदोद्ध्वंसनीय विमान' है। इस अध्यायमें महर्षिने इस बातका वर्णन किया है कि ऐसे रोग, ऐसे उत्पात क्यों पैदा होते हैं, जिनसे देशके देशउजड़ जाते हैं। उन्होंने लिखा है कि ऐसे रोगों और उत्पातोंका मूलकारण चार वस्तुएं हैं—वायु, जल, देश और काल (समय)। वे जब बिगड़ खड़े होते हैं तब ये महोत्पात उत्पन्न होते हैं, जिनका विस्तृत वर्णन उक्त अध्यायमें है। किन्तु वे इतने मात्रसे ही संतुष्ट नहीं हैं, उन्होंने इन सबके बिगड़ उठनेके मूल कारणको भी खोज निकाला है। वे लिखते हैं—

"तमुवाच भगवानात्रेयः — सर्वेषामग्निवेश, वाय्वादीनां यद् वैगुण्यमुत्पद्यते तस्य मूलमधर्मः, तन्मूलं चासत्कर्म पूर्वकृतम्। तयोर्योनिः प्रज्ञापराध एव। तद्यथा-यदा देशनगरनिगमजनपदप्रधाना धर्ममुत्क्रम्य अधर्मेण प्रजां प्रवर्त्तयन्ति, तदाश्रितोपाश्रिताः पौरजानपदाः व्यवहारोपजीविनश्च तमधर्ममभिवर्धयन्ति। ततः सोऽधर्मः प्रसभं धर्ममन्तर्धत्ते। तत तेऽन्तर्हितधर्माणो देवताभिरपि त्यज्यन्ते। तेषां तथान्तर्हितधर्माणामधर्मप्रधानानामपक्रान्तदेवतानामृतवो व्यापद्यन्ते। तेन नापो यथाकालं देवो वर्षति विकृतं वा वर्षति, वाता न सम्यगभिवान्ति, क्षितिर्व्यापद्यते, सलिलानि उपशुष्यन्ति, औषधयः स्वभावं परिहायापद्यन्ते विकृतिम्, तत उद्ध्वसन्ते जनपदाः स्पर्शाभ्यवहार्यदोषात्।"

"अपने शिष्य अग्निवेशसे भगवान् आत्रेयने कहा कि-हे अग्निवेश! ऊपर बताये हुए वायु आदिमें जो विकार उत्पन्न होते हैं गड़बड़ मचती है उसका मूल कारण अधर्म है और उस अधर्मका मूल कारण है अपने पहले किये हुए कर्म। इन दोनोंका मूल कारण है—प्रज्ञापराध (बुद्धि बिगड़ जाना) सारांश यह कि जब कुशिक्षा आदिसे बुद्धि बिगड़ जाती है तब मनुष्य अधर्म पर उतर पड़ते हैं और अधर्म बढ़नेसे ये उत्पात होते हैं। इसका विशेष विवरण यह है कि— जनता अधिकांशमें प्रधान पुरुषोंका अनुसरण करती है, अतः ऐसे लोग जो देश, नगर हाट-बाजार और देहातमें प्रधान होते हैं वे लोग जब धर्मका उल्लंघन करके अधर्ममें प्रजाको प्रवृत्त करने लगते हैं तब उनके सहारे चलने वाले छोटे बड़े सभी कर्मचारी, इतना ही नहीं, शहरी और देहाती लोग एवम् व्यापार धंदे वाले सभी उस अधर्मको बढ़ाने लगते हैं। तब वह अधर्म इतना बढ़ जाता है कि बलात् धर्मको दबा देता है, जब धर्म लुप्त हो जाता है तो उन लोगोंको देवता भी छोड़ देते हैं। इस प्रकार जिनका धर्म लुप्त हो जाता है जिनमें अधर्म प्रधान हो जाता है और देवता जिनकी सहायता नहीं करते उनके यहां ऋतुएं बिगड़ उठती हैं। परिणाम यह होता है कि ऐसी दशामें या तो इन्द्र समयानुसार वर्षा नहीं करता या बुरी तरह बरसता है, वायु अच्छी तरह नहीं चलती, भूमि बिगड़ जाती है, पानी सूख जाता है, और औषधियां अपना स्वभाव छोड़कर विकारी हो जाती हैं और तब एक

दूसरेके संसर्ग तथा खानपानके दोषसे देश उजड़ते हैं।"

इतना ही नहीं, वे तो आगे कहते हैं कि—

"तथा शस्त्रप्रभवस्यापि जनपदोद्ध्वंसस्याधर्म एव हेतुर्भवति। येऽतिप्रवृद्धलोभरोषमोहमानास्ते दुर्बलानवमन्यात्मस्वजनपरोपघाताय शस्त्रेण परस्परमभिक्रामन्ति, परान् वाभिक्रामन्ति, परैर्वाभिक्राम्यन्ते, रक्षोगणादिभिर्वा विविधैर्भूतसंघैस्तमधर्ममन्यद्वाप्यपचारान्तरमुपलभ्याभिहन्यन्ते।

"शस्त्रसे उत्पन्न देश उजड़ने (युद्ध-महायुद्धों) का कारण भी अधर्म ही है। जिन लोगोंमें लोभ, रोष, मोह और अभिमान बहुत बढ़ जाते हैं वे दुर्बलोंका अपमान करके अपने-पराये सबको मारनेके लिए आपसमें शस्त्र चलाते हैं, दूसरों पर चढ़ाई करते हैं अथवा अन्य राक्षसादिकोंसे उस अधर्म अथवा अन्य किसी गड़बड़के प्राप्त होने पर मार दिये जाते हैं।

अन्तमें वे दृढ़ता के साथ कहते हैं कि—

"प्रागपि चाधर्मादृते नाशुभोत्पत्तिरभूत्"

अर्थात् 'पुराने समयमें भी बिना अधर्मके कभी अशुभकी उत्पत्ति नहीं हुई'। और फिर सत्ययुग आदि की सामाजिक व्यवस्थाका वर्णन किया है।

सारांश यह है कि चरक-संहिता जैसे आयुर्वेदके ग्रन्थ भी यह मानते हैं कि अधर्म ही इन सब बातोंका मूल कारण है। और अधर्ममें प्रवृत्त होनेका मूल कारण है प्रज्ञापराध (बुद्धिका बिगड़ जाना)। अर्थात् जब कुशिक्षा आदिसे बुद्धि बिगड़ जाती है तब मनुष्य अधर्ममें जुट पड़ता है और अधर्म जब व्यापक रूपसे फैल जाता है तब ऐसे उत्पात उत्पन्न होते हैं जिनसे देश, नगर, और गांव ऊजड़ हो जाते हैं।

इस प्रज्ञापराधके लक्षण भी उतने बड़े अच्छे रूपमें बताये हैं, वे कहते हैं —

"कर्मकालातिपातश्च मिथ्यारम्भश्च कर्मणाम्।
विनयाचारलोपश्च पूज्यानां चाभिधर्षणम्॥
अकालदेशसंचारो मैत्री संक्लिष्टकर्मभिः।
इन्द्रियोपक्रमोक्तस्य सद्वृत्तस्य च वर्जनम्।
ईर्ष्यामानभयक्रोधलोभमोहमदभ्रमाः॥
यच्चान्यदीदृशं कर्म रजोमोहसमुत्थितम्।
प्रज्ञापराधं तं शिष्टा ब्रुवंते व्याधिकारणम्॥
(शारीर० १,१०२-१०७)

'शिष्ट पुरुष रोगोंकी मूलभूत इन बातोंको प्रज्ञापराध कहते हैं—(१) नियत समय पर काम न करना (२) कामको यथाविधि न करना (३) विनय और आचार का लोप (४) पूज्य पुरुषोंका अपमान (५) निषिद्ध देश और कालमें भटकना (६) बुरे काम करने वालों शराबी ऐयाश आदिसे मित्रता (७) सदाचारका त्याग (८) ईर्ष्या (जलन) (९) घमंड (१०) डर (११) क्रोध (१२) लोभ (१३) मोह (१४) नशेबाजी (१५) बहम एवं अन्य ऐसे काम जो रजोगुण अथवा अज्ञानसे उत्पन्न होते हैं।'

इन वस्तुओंसे मनुष्यकी स्मृति (अच्छे विचार, उपदेश आदिकी याददास्त) जाती रहती है और तब मनुष्य बुद्धिको वशमें नहीं रख सकता। भगवान् भी गीता में यही कहते हैं—

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।

अर्थात् स्मृति भ्रष्ट होनेसे बुद्धिका नाश होता है और बुद्धिका नाश होनेसे मनुष्य नष्ट हो जाता है।

यह तो उनके बहुत विस्तृत उपदेशोंका अत्यन्त संक्षेप है। किन्तु महर्षि चरक कुछ उपदेश देने ही नहीं बैठे थे, उन्हें तो ऐसे उत्पातोंकी चिकित्सा (इलाज) भी बतानी थी। उनका सारा प्रयास है ही केवल एसीलिए। अतः उन्होंने ऐसे भयङ्कर समयमें जो कर्त्तव्य बताये हैं वे निम्नलिखित हैं —

सत्यं, भूते दया, दानं, बलयो, देवतार्चनम्।
सद्वृत्तस्यानुवृत्तिश्च प्रशमो गुप्तिरात्मनः।
हितं जनपदानां च शिवानामुपसेवनम्।
सेवनं ब्रह्मचर्यस्य तथैव ब्रह्मचारिणाम्।
संकथा धर्मशास्त्राणां महर्षीणां जितात्मनाम्।
धार्मिकैः सात्त्विकैर्नित्यं सहास्या वृद्धसंमतैः।

इत्येतद् भेषजं प्रोक्तमायुषः परिपालनम् ।
येषामनियतो मृत्युस्तस्मिन् काले सुदारुणे ।

(१) सत्य (२) प्राणियों पर दया (३) दान (४) देवताओं के लिए भेंट तथा उनका पूजन (५) सदाचारकी प्रवृत्ति (६) शांति (७) अपनी रक्षा (८) देशवासियोंका भला (९) उत्तम आचार विचार तथा पदार्थोंका सेवन (१०) ब्रह्मचर्य और ब्रह्मचारियोंका सेवन (११) धर्मशास्त्रों तथा मनको विजय करने वाले महर्षियोंकी कथा (१२) वृद्धोंके सम्मानित सात्विक धर्मात्माओंके साथ सदा बैठना-उठना, ये सब बातें ऐसे दारुण समयमें आयुकी रक्षा करने वाली होती हैं ।

परन्तु आज गीतामें जिसे तामसी बुद्धि कहा गया है और जिसका लक्षण है—

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृताः ।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ ! तामसी ॥
(गी० १८, ३२)

"अर्थात् तामसी बुद्धि वह है जो अधर्म को धर्म मानती है और सब पदार्थोंको विपरीत समझती है ।"

उसी बुद्धिका दौरदौरा है और लोगोंमें नास्तिकता बढ़ रही है, जिसके लिए चरकसंहिता कहती है कि—

"पातकेभ्यः परं चैतत् पातकं नास्तिकग्रहः
(सूत्र० ११ । १५)

अर्थात् "नास्तिकताका हठ सब पापोंसे बड़ा पाप है ।"

अतः कदाचित् ही कोई व्यक्ति हो जिसको इन बातों पर पूर्णतया विश्वास हो, किन्तु परम आप्त एवं सत्यवादी ऋषियोंके विचार इस विषयमें क्या और कैसे हैं इस बातको जाननेके लिए यह आवश्यक है कि ये विचार जनता के सामने प्रकाशित कर दिए जावें । आशा है, आस्तिक और श्रद्धालु पुरुष परोपकारैकपरायण महर्षि आत्रेयके इन विचारोंका प्रचार कर जनताको भावी आपत्तियों से बचानेमें सहायक होंगे ।

मूर्तिपूजाका रहस्य

[ले०—श्री० पं०दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्याभूषण, विद्यानिधि]

सनातन हिन्दुधर्ममें मूर्तिपूजा भी एक अङ्ग है। मूर्तिपूजा इसमें बहुत सोच-समझ कर रखी गई है। उसके रखने का कारण यह है कि जब तक मनुष्य स्वयं साकार है, तब तक वह मूर्ति-पूजा से छूट नहीं सकता। हाँ, यह हम मानते हैं कि इसका उपयोग सारी आयुके लिये नहीं है। मूर्तिपूजा कर्मकाण्ड है, इसका उपयोग हमारे यज्ञोपवीत पहिरे रहने तक है। परमहंसावस्थामें ज्ञानकाण्डके समय जबकि यज्ञोपवीतका त्याग किया जाता है, यज्ञोंका त्याग किया जाता है; तब मूर्तिपूजाका भी। मूर्तिपूजा भी यज्ञका ही एक प्रकार है।

इसे यों समझना चाहिये। :- देवपूजा दो प्रकार की होती है, हवन तथा मूर्तिपूजा। संस्कृत अग्निमूर्तिके द्वारा 'इन्द्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा' इत्यादि रूप से तत्तद् देवता को हवि देना हवन द्वारा देव पूजा है, मन्त्र-संस्कृत प्रस्तर आदि मूर्ति के द्वारा तत्तद्देवता को बलि देना मूर्ति द्वारा देव पूजा है। इसीलिये श्रीशङ्कराचार्य स्वामीने लिखा है

"प्रतीकोपासनानि तु जड़ वस्तुनि मन्त्रादि संस्कारेण मूर्तिरूपेण तत्तद्देवता बुद्धि जनकानि तत्तद् भोग्यवस्तु फल प्राप्ति जनकानि"

इन दोनों (हवन तथा मूर्तिपूजा) को 'यज्ञ' कहा जाता है, क्योंकि देव पूजार्थक यज् धातु का अर्थ दोनों स्थानों में देखा गया है। 'शाङ्खायनब्राह्मणमें' कहा है

"स एवास्मै यज्ञं ददाति ; तद् यद् एता देवता यजति" (४।२)

अर्थात् - देवताओंकी पूजा ही यज्ञ होता है। इसीलिये 'श्रीमद्भागवत पुराण' में भी कहा गया है

"यदा स्वनिगमेनोक्तं द्विजत्वं प्राप्य पूरुषः।
यथा यजेत् मां भक्त्या श्रद्धया तन्निबोध मे।
अर्चायां (मूर्तौ) स्थण्डिलेऽग्नौ वा सूर्ये वाऽप्सु हृदि द्विजे" (११।२७।८-९)

अर्थात् - द्विज (यज्ञोपवीती) मूर्ति वा अग्नि में देवका पूजन करे।

"स्नानालङ्करणं प्रेष्ठमर्चायामेव तूद्धव!...... वन्हौ आज्यप्लुतं हविः" (११।२७।१६)

यहाँ मूर्तिमें स्नानादि तथा अग्निमें घृताक्त हवि डालना कहा है।

"द्रव्यैः प्रसिद्धैर्मद् · यागः प्रतिमादिस्वमायिनः"
(११।२७।१५)

यहाँ प्रतिमापूजनको भी हवनकी भाँति याग (यज्ञ) ही कहा है।

जिस प्रकार लोकमें प्रस्तरकी मूर्ति जड़ मानी जाती है; वैसे ही अग्नि भी। परन्तु 'अभिमानि-व्यपदेशः' (वेदान्तदर्शन २।१।५) 'सर्वस्य वा चेतनावत्त्वात्' (महाभाष्य - वार्तिक ३।१।७) इस शास्त्रीय कथनसे दोनों ही मूर्तियाँ चैतन्य धारण करती हैं। अग्नि उस हविके स्थूल भागको भस्म करके उसका सूक्ष्म भाग देवताओंको देती है; और मूर्ति मधुमक्षिकासे पीये हुए पुष्पकी भाँति उसका सूक्ष्मांश तत्तद्देवको समर्पण करती है।

जैसे अग्नि वेदमन्त्रोंसे संस्कृत की जाती है; वैसे ही मूर्ति भी वेदमन्त्रोंसे संस्कृत की जाती है। जैसे अग्निहोत्रमें द्विज तथा कर्मकाण्डीका अधिकार है, वैसे : मूर्तिपूजामें भी। इस कारण संस्कृत मूर्तिपूजनमें शूद्र-अंत्यज आदिका अधिकार नहीं रहता, परमहंसोंका भी नहीं। परमहंसोंका शूद्रोंकी भाँति यज्ञमें अनधिकारी होनेसे संस्कृत मूर्ति पूजनमें निषेध नहीं होता; किन्तु यज्ञोपवीती से उच्चाधिकारी होनेसे उसमें उसका निषेध होता है।

मूर्तिपूजाका दूसरा नाम प्रतिमोपासना भी है। यह प्रतिमा-उपासना जहाँ अन्य शास्त्रोंको सम्मत है; वहाँ वेदको भी। यों तो हम इस विषयमें बहुतसे प्रमाण दे सकते हैं; पर यहाँ उतना स्थान नहीं। केवल वेदका एक मन्त्र ही उपस्थित किया जाता है, 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकगण देखें। 'अथर्ववेद' का एक मन्त्र है—

'संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्रि ! उपास्महे।
सा नः आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण संसृज'

(अथर्व ३।१०।३)

यहाँ पर रात्रिको संवत्सरकी प्रतिमा रूपकसे कह कर उसकी उपासनाके लिए कहा है। फिर उससे प्रजाकी आयु तथा धन-वस्त्र आदिकी प्रार्थना की गई है। यहाँ पर पाठकगण रात्रि तथा संवत्सर शब्द छोड़ दें; तो शेष अंश यह बचेगा—'प्रतिमां याम् उपास्महे; सा नः प्रजां रायस्पोषेण संसृजतु' इससे प्रतिमाकी उपासना करना तथा उससे प्रजा (सन्तान) की धनादिसे संयुक्त होने की प्रार्थना करना—यह बात वैदिक सिद्ध हो जाती है। इससे प्रतिमोपासना वैदिक कालसे ही सिद्ध होती है।

अब पाठकगण मूर्तिपूजा में लौकिक दृष्टिकोण भी देखें। जिन अक्षरोंको मैं लिख रहा हूँ; पाठकगण उनकी उपासना कर रहे हैं; वे वास्तव में निराकार होते हैं, साकार नहीं। इस बात से सभी सहमत होंगे। नहीं तो बताया जाय कि—'क' का यह आकार है ? या अंग्रेजीका 'K' या उर्दूका 'काफ़' या गुरुमुखी का 'क' गुजराती-बंगला आदिका 'क' ? इस प्रकार स्पष्ट है कि—अक्षर निराकार हैं। पर निराकार अक्षरका ज्ञान किस प्रकार हो ? इसके लिए हमारे पूर्वजोंने उसमें घुसकर उनका आकार प्रकट कर दिया। उन अक्षरोंकी मूर्ति बनाकर हमें उस मूर्तिकी उपासना करने के लिए प्रेरणा की। उसका सुफल यह हुआ कि—इन अक्षरोंकी मूर्ति की उपासना करनेसे हम विद्वान् बन जाते हैं। जब हम इन साकार अक्षरोंके ज्ञानमें पूर्ण परिनिष्ठित हो जाते हैं; तब हम निराकार अक्षर-ज्ञानके अधिकारी बन जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि—हम जब तक पुस्तकों पर अवलम्बित हैं; तब तक हम मूर्तिपूजक हैं। जब हमारी सम्यक् परिनिष्ठितता हो जाती है; जब हमें पुस्तकोंके देखने की थोड़ी भी आवश्यकता नहीं रहती; तब समझिये कि—अब हम निराकार अक्षरके ज्ञानके अधिकारी हो गये। इसी प्रकार मूर्तिपूजामें भी समझना चाहिये। कहनेको हम लोग कह देते हैं कि—परमात्मा सर्वव्यापक है, निराकार है; पर यह बात जानता कौन है ? यदि सभी जान जाते कि—परमात्मा अणु-अणुमें है; तो इस संसारमें पाप, छल-कपट चोरी-जारी आदि सब बन्द हो जाते। इससे स्पष्ट है कि—अभी हम उस ज्ञानके अधिकारी नहीं हैं।

जब तक हम साकार हैं; अथवा व्यावहारिकतामें हैं; तब तक हमें मूर्तिपूजा करनी ही पड़ेगी। गुरुकी पूजा करनी है; कैसे करें ? हम उन्हें नमस्कार करते हैं। उनके गलेमें पुष्पमाला डालते हैं। यह क्यों ? गुरु आत्माको माना जाता है या

शरीर को ? यदि आत्मा को; तो उसी पर फूल डालने चाहियें; नमस्कार भी उनकी आत्माको ही कीजिये। उनके अस्थि, मज्जा, रुधिरके बने गलेमें माला क्यों डाली जाती है? उनके किसी अङ्गकी वन्दना क्योंकी जाती है ? कहना पड़ेगा कि—न निराकार आत्मा पर फूल पहिनाना बन सकता है; न उसे नमस्कार हो सकती है। अङ्गी आत्माकी पूजा प्रत्येक दशामें उसके किसी अङ्गके द्वारा ही होगी। साकार, गुरुके गलेमें हम स्वयं साकार, साकार-मालाको डालते हैं; वही माला हमारी निराकार श्रद्धाका प्रतीक होती है। साकार अङ्ग पर साकार पुष्प चढ़ा, और उससे निराकार गुरुकी आत्मा पर हमारी निराकार श्रद्धा चढ़ी। उद्देश्य भी हमारा यही था; अस्थि, माला, रुधिर रूप अङ्ग पर फूल चढ़ाना हमारा उद्देश्य होता भी नहीं।

यही बात मूर्तिपूजामें भी समझनी चाहिये। जब परमात्मा अणु-अणुमें व्यापक है, और हम पृथिवी पर बैठे हैं; सन्ध्या आरम्भ वा समाप्त करते समय हम परमात्माको झुककर प्रणाम करते हैं; अब बताइये कि—हमने उस समय परमात्माको नमस्कार की; या सामनेकी दीवाल या पृथिवी को ? यदि सामनेकी दीवाल या पृथिवी वा आकाशको हमने प्रणाम किया; तो बताइये कि—सामने दीवार आदिकी ओर वैसा क्यों किया? परमात्मा एकदेशी है या सर्वदेशी ? यदि सर्वदेशी वा सर्वव्यापक है; तो आपने एक ही ओर मुख करके परमात्माको क्यों प्रणाम किया? आप चर्खीकी भाँति चारों ओर घूमते क्यों नहीं रहे ? यदि आप चर्खीकी भाँति भी घूमते; तब भी तो आपका मुख एक ओर ही होता। एक साथ सब दिशाओंमें परमात्माको प्रणाम नहीं कर पाते। क्या यह आपने मूर्तिपूजा वाला व्यवहार नहीं किया ?

इस पर कहना पड़ेगा कि—हम एकदेशी हैं; हमें प्रत्येक दशा में एक ही ओर मुख करना पड़ेगा। हमें नमस्कार जो अन्त में करनी पड़ेगी; वहाँ भी सामने पृथिवी अथवा कोई दीवाल होगी; या आकाश होगा, जो जड़ होंगे। पर हमारा उद्देश्य उनको नमस्कार न होकर परमात्माको ही नमस्कार करना होता है। तब मूर्तिपूजामें भी तो यही रहस्य समझना पड़ेगा। लक्ष्य हमारी मूर्ति नहीं होती; किन्तु मूर्ति स्थित वही शक्ति (परमात्मा) होती है। मूर्ति उसी अणु-अणुमें व्यापक शक्ति अङ्गीका एक अङ्ग है। उस अङ्ग द्वारा हम अङ्गीकी पूजा करते हैं।

यही "मूर्तिपूजाका रहस्य" है। ला० लाजपतरायकी मूर्ति पर १७ नवम्बरको पुष्प चढ़ा करते हैं। कौन कहता है कि हम पत्थर वा ताम्बे पर फूल चढ़ा रहे हैं ? सभी मानते हैं कि—हमारा उद्देश्य ला० लाजपतरायका वह व्यक्तित्व है, जिसने देशके लिए अपना उत्सर्ग कर दिया, उसकी पत्थरकी मूर्ति नहीं। ला० लाजपतराय एकदेशी हैं; पर परमात्मा सर्वदेशी है; अणु-अणुमें व्यापक है; तो हम स्वयम् एकदेशी होनेसे जिस भी स्थलमें उसकी पूजा करें; यह उसीकी पूजा होगी।

भारतीय शिष्टाचार

पश्चिमी देशोंमें शिष्टाचार पर बहुत ध्यान दिया जाता है, परन्तु हमारे देशमें बच्चोंको शिष्टाचारकी शिक्षा नहीं दी जाती, अतएव वे बड़े होकर साधारण बातोंमें भी अपनी मूर्खता और असभ्यताका परिचय देते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। हमें सदैव अपने सुख—आरामके साथ ही साथ इस बातका भी ध्यान रखना परमावश्यक है कि हमारे आचरण और व्यवहारसे किसीको कष्ट न होने पावे, किसी प्रकारकी असुविधा न हो और किसीका जी न दुखे। आज हम शिष्टाचारके साधारण नियमों पर 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंका ध्यान आकृष्ट करते हैं।

(१) कोई दूसरा अपरिचित व्यक्ति बच्चोंको पैसा रुपया मिठाई दे तो बिना माता-पिताकी आज्ञाके कदापि नहीं लेना चाहिए।

(२) किसीको कोई वस्तु देनी हो तो बायें हाथसे मत दो और लेनी हो तो बांयें हाथसे न लो।

(३) जब तक जान पहचान न हो, पुरुष स्त्री से चार आँख करके बात-चीत न करे। पराई स्त्रीसे बात करनेकी आवश्यकता पड़ जाय तो स्त्रीके पैरोंकी ओर देखना चाहिये, न कि आँखोंकी ओर, स्त्रियोंकी ओर टकटकी लगाकर देखना या उनको घूरना बहुत बड़ी असभ्यता है।

(४) गुरु शिष्य, पति-पत्नी, और दो मित्रोंके बीचमें होकर कभी नहीं निकलना चाहिए।

(५) शौचके बाद पात्र (लोटे) को बायें हाथ से नहीं उठाना चाहिए।

(६) माता-पिता, गुरु-जन और देवताको नित्य प्रणाम करना चाहिए और बाल्यावस्थासे ही नित्य सन्ध्या वा दस-पन्द्रह मिनट इष्टदेव (ईश्वर) स्मरणका अभ्यास डालना चाहिए।

(७) पानी, दूध, घी, आदि में अंगुली या नाखून मत डालो। दूधमें उङ्गलीसे चीनी न घोलो, चम्मचसे काम लो या दो बर्तनोंमें उलट-फेर करलो।

(८) जिस बर्तनमें पीनेका पानी या दूध आदि रखा हो उसको ढकना मत भूल जाओ। उसको पृथिवीसे कुछ ऊपर रखना अच्छा है। बर्तन ऐसा होना चाहिए जो अन्दरसे साफ हो सके।

(९) पानी, दूध, घी आदि निकालने के लिए जिस लोटे, कटोरे, गिलास या चम्मच को बर्तन में डालो उसकी पेंदी पहले धो लो या साफ कपड़े से पोंछ लो।

(१०) डोल, बालटी या घड़ेके पास हाथ धोने के लिए भरा हुआ लोटा सदा रखना चाहिए। खाली होने पर उसे फिर भर देना चाहिए [पानीसे भरे हुए डोल, बालटी या घड़ेमें हाथ नहीं डालना चाहिए।] हाथकी कलाईसे लोटेको टेढ़ा करके पानी लेना चाहिए, उनमें हाथ नहीं डालना चाहिए।

(११) हाथ धोने या बर्तन माँजने के लिए प्रत्येक स्थानकी मिट्टीका प्रयोग मत करो। देख लो कि कहाँकी मिट्टीको लोग गन्दा नहीं करते।

साफ मिट्टी ढूँढकर काम में लाओ। जमीन खोदकर खेत की मिट्टी मिल सके तो अच्छा है। ऐसी मिट्टीको कनस्तर आदि में रखना चाहिए, ज़मीन पररखनेसे बिल्ली आदि जानवर उसको गन्दा करदेते हैं।

(१२) भोजन इस प्रकार खाओ कि पत्तल या थाली से बाहर ज़मीन या कपड़े पर न गिरे। पत्तल या थाली उठाओ तो उसके नीचेकी जगह भी साफ कर दो।

(१३) पहनने के कपड़े जूता आदि नित्य झाड़ लिया करो। सोने से पहले प्रतिदिन अपने बिछौनेका प्रत्येक कपड़ा झाड़ लो।

(१४) साथ बैठकर एक ही थाली में दो व्यक्तियोंको नहीं खाना चाहिए। एक ही गिलास या कटोरेका पानी या दूध दो व्यक्तियोंको नहीं पीना चाहिए। किसीका बचा हुआ जूठा या जमीन पर गिरी हुई कोई भी वस्तु मत खाओ।

(१५) वर्तन या खानेकी वस्तु किसी नई जगह रखने से पहले उस जगह को धो डालो।

(१६) रातको जो कपड़े पहनकर सोओ उनमें जो सूती हों उनको दूसरे दिन धो डालो और जो ऊनी हों उन्हें धूपमें डाल दो। स्मरण रखो, ऊनी या काले गर्ददार कपड़ोंमें भी मैल लगती है, उनको भी सफेद कपड़ोंकी भाँति धोते रहना चाहिए।

(१७) हाथ और पैरके नाखून बढ़ने मत दो। उनके अन्दर मैल न जमने दो।

(१८) जिस बिछौने पर सोओ उसको थोड़ी देर धूपमें रहने दो, परन्तु इसका ध्यान रखो कि उसको चिड़ियाँ आदि गन्दा न कर दें। पहनने के कपड़ोंको भी इसी प्रकार धूप दिखला दो।

(१९) पहन कर मौजाभी धो डालना चाहिए।

(२०) कपड़ा पहननेके पहले और उतारनेके बाद झाड़ लो। पाजामा झाड़ते समय उसके नीचे-का भाग पकड़ो क्योंकि उसीमें गर्दा अधिक रहता है। नङ्गे पैर रहो तो बाहरसे आकर पैर धो डालो।

(२१) अपने साथ सदा एक अङ्गोछा या रूमाल रखो। धोती, दुपट्टे या कुरतेसे नाक हाथ पोंछना गन्दी आदत है।

(२२) फल खाते समय उसके छिलके, गुठलियाँ गलीमें या खिड़कीमें मत फेंको। पास ही वर्तनमें पत्ते पर या रद्दी कागज पर रखते चलो, पीछे वहाँ फेंक दो जहाँ कूड़ा रहता है।

(२३) घरमें सर्वत्र जूता नहीं ले जाना चाहिये। सीढ़ीमें या कमरेके बाहर एक तरफ उतार देना चाहिये।

(२४) जूता या जूठे बर्तनको छू कर हाथ धोना चाहिये।

(२५) बाहरसे आकर जूतेको झाड़ डालना चाहिये—जूते पर बराबर तैल या पालिश आदि लगाते रहना चाहिये।

(२६) लिखते समय उङ्गलियोंमें स्याही न लगा लो। यदि लग जाय तो तुरन्त रगड़कर हाथ धो डालो।

(२७) रोशनाई (स्याही) कलम से ज़मीन पर न छिड़को और न उसको सिरके बालोंसे पोंछो।

(२८) मिट्टी लगा हुआ लोटा या गागर कूँएमें मत डालो।

(२९) कूँए पर इस प्रकार स्नान करो कि शरीर का पानी कूँए में न जाय।

(३०) सोये हुए व्यक्तिको कुसमय विना मतलब न जगा दो।

(३१) अपना कपड़ा आदि धोना हो या पीनेका पानी लेना हो तो नदीमें जरा आगे बढ़कर धाराके निकट जाओ।

(३२) दूसरेका उपयोग किया हुआ साबुन या तौलिया यथा सम्भव काममें न लाओ।

(३३) खाते समय दाल, चावल शाक आदिमें कुल हाथ न सान लो। चारों उंगलियोंकी दो जोड़ोंके ऊपर खाद्यपदार्थ न लगाना चाहिए।

(३४) खाते समय पानीका गिलास इस प्रकार उठाओ कि उसमें उङ्गलीकी दाल आदि न लग जाय।

(३५) थालीमें भूठा मत रहने दो। यह स्वभाव अच्छा नहीं है। इसमें अन्नका भी दुरुपयोग होता है।

(३६) रोगीसे छेड़-छाड़ मत करो। रोगीसे मीठी बातें करनी चाहिए, चिढ़ाने वाली नहीं।

(३७) छूत वाले रोगियोंसे दूर रहना चाहिए। जिसको चेचक निकले उसके कपड़े या तो जला देने चाहिए या उबलते हुए पानीमें कुछ देर रहने चाहिए, और उस पानीमें नीमकी पत्ती डाल देनी चाहिए।

(३८) साधारण रोगी के पास भी उन्हींको जाना चाहिए जो उसकी सेवा करना चाहें। रोगीसे प्रश्न करना या जबरदस्ती बात-चीत करना अच्छा नहीं।

(३९) सब जगह थूकनेकी आदत बुरी है। इससे रोग फैलता है। यदि रोगके कारण थूकना आवश्यक हो तो पीकदानी आदि रक्खो प्रत्येक स्थानमें नाक भी नहीं सींकना चाहिए। इसके लिए रूमाल रक्खो।

(४०) लिफाफा थूक लगाकर बन्द नहीं करना चाहिए। न पोथीके पन्ने थूक लगाकर उलटने चाहिए।

(४१) खाना खानेसे पहले हाथ-मुँह धोना चाहिए—और पीछे भी हाथ धोकर भली प्रकार कुल्ला करो। आवश्यकता हो तो खरकेसे भी दाँत साफ कर लेना चाहिए पर खरकेकी जगह आलपीन आदिसे काम नहीं लेना चाहिए। इसके लिए नीमकी सींक बहुत अच्छी है।

(४२) सबेरे उठकर कुल्ला करो। जिस दँतवनसे दाँत साफ करो, उसके दो टुकड़े करके उसीसे जीभ साफ कर लो, तब उसको धोकर कूड़ेकी टोकरीमें फेंक दो। दँतवन बिना धोए मत फेंको दँतवन करनेके बाद कुल्ला इस प्रकार करो कि दाँतके आगे और पीछेका भाग, मसूड़े आदि भी साफ हो जाएँ।

(४३) सबेरे बिना शौचादि गये और दाँत साफ किये कुछ मत खाओ। भोजन तो स्नानके बाद ही करना अच्छा है।

(४४) जिस बर्तनमें एक बार पानी पी लो या खाना खा लो उसको माँज कर तब काममें लाओ। बर्तन मिट्टीका हो तो उसको एक ही बार प्रयोग करके फेंक दो। जब बर्तन जूठा हो जाय तब उसको अलग एक तरफ रख दो।

(४५) दूसरेकी उपयोग की हुई बाँसुरी या कोई भी बाजा मत बजाओ। बजानी ही पड़े तो उसको पानीसे खूब धो लो।

(४६) एक ओढ़नेमें दो आदमी मत सोओ।

दूसरेके ओढ़ने और बिछौनेको बिना धोये काममें मत लाओ।

(४७) जिस कपड़े पर स्याहीका, पानका या और किसी वस्तु का दाग लग जाय उसको जब तक दाग छूट न जाय मत पहनो थोड़ा सावधान रहनेसे ऐसा दाग लगने ही न पायेगा।

(४८) दूसरेकी पहनी हुई धोती, जब तक खूब साफ न हो जाय काममें मत लाओ।

(४९) दूसरेकी प्रयोगकी हुई कंघी काममें मत लाओ।

(५०) जो हलवाई अपनी मिठाई पूरी आदि वस्तुओंको मक्खी और गर्देसे बचानेके लिए सफाईसे ढक कर नहीं रखता, अपने शरीरको खुजलाता रहता है या अपना कपड़ा और शरीर मैला रखता है, उसकी कोई वस्तु मत खाओ। जहाँ तक हो सके बाजारकी मिठाई विशेषकर मलाईकी बरफ, नहीं खानी चाहिए। और बाजारका शरबत नहीं पीना चाहिए।

(५१) जिस कपड़ेको पहनकर शौचादि जाओ या हजामत बनाओ उसको धो डालना अच्छा है।

(५२) शौचादि के लिए पानी कम मत ले जाओ, लघुशङ्का के बाद भी पानीका प्रयोग करो।

(५३) खेतमें शौच नहीं जाना चाहिए, यदि जाना पड़े तो उठनेके बाद मलको मिट्टीसे ढकदो ढूँढ़नेसे मिट्टी न मिले तो लोटेसे जमीन खुरच कर इकट्ठी कर लो।

(५४) प्रातःकाल उठते ही एक बार शौच अवश्य जाना चाहिए।

(५५) सर्वत्र लघुशङ्का करने मत बैठ जाओ। इसके लिए कहीं आड़में उचित स्थान ढूँढ़ लो।

(५६) जहाँ तक हो सके गुदाप्रक्षालन (आबदस्त) नदी, तालाब आदिमें मत करो। पानी साथ ले जाओ। नदी नाले या तालाबमें गुदाप्रक्षालन करके पानीको गन्दा मत करो।

(५७) जूठे पानीका छींटा किसी मनुष्य ~~या साफ बर्तन~~ पर नहीं पड़ना चाहिए।

(५८) भोजनके समय मरने आदिका अशुभ शोकप्रद कोई समाचार नहीं सुनाना चाहिए, न ऐसी बातें या ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे शोक, क्रोध, या गन्दगी प्रकट हो।

(५९) भोजनका स्थान साफ और हवादार होना चाहिए। उसके अन्दर मक्खीका जाना रोकना चाहिए।

(६०) भोजनके समय साफ और ढीले कपड़े पहनने चाहिए।

(६१) किसीको हठात् मनके विरुद्ध नहीं खिलाना चाहिए।

(६२) चलते हुए मार्गमें या प्रत्येक स्थानमें खाने लगना ठीक नहीं।

(६३) भोजनके ऊपरसे जाना या उसको लाँघना ठीक नहीं।

(६४) भोजन धीरे-धीरे करना चाहिए. दूध या पानी भी ठहर-ठहर कर पीना चाहिए। भोजन इस प्रकार मत करो या पानी, दूध इस प्रकार मत पीओ कि मुख से आवाज निकले। धीरे-धीरे खूब चबाकर खाना खाओ।

(६५) बन्द दरवाजोंके अन्दर रहना या सोना अच्छा नहीं। खुले बरामदे या खिड़कीदार कमरे में रहना या सोना चाहिए। कमरोंकी खिड़कियाँ या दूसरे सुराख सदा बन्द मत रक्खो।

(६६) मुँह ढक कर मत सोओ।

(६७) व्यायाम करनेके समय मुँह बन्द रक्खो और नाकसे साँस लो।

(६८) सोने वाले स्थानको सामानसे मत भर दो और उसमें जलता हुआ लैम्प सारी रात मत रक्खो।

(६९) लेट कर मत पढ़ो। पढ़ते समय सीधे बैठो।

(७०) सन्ध्याके समय मत पढ़ो।

(७१) पढ़नेके समय रोशनी तुम्हारे बाँये या पीछेसे आनी चाहिए।

(७२) प्रत्येक तालाव या कुएँका पानी मत पीओ पानी उबाल कर और छान कर पीना अच्छा है।

(७३) बरफका पानी पीनेकी आदत मत डालो।

(७४) महीने में दो एक बार बिना खाये या कम खाकर रह जाना अच्छा है। एकादशी व्रत या अमा पूर्णिमाका एकाशन व्रत उत्तम है।

(७५) बच्चोंको मत रुलाओ। उनको सदा गोदमें न लिए रहो। उनको अपने बल पर खड़ा होना, जितना जल्दी हो सके, सिखलाओ। उन्हें अपने हाथ-पैर हिलाने दो। वे कभी गिर भी जायें तो तुरन्त उठाने मत दौड़ो। बच्चोंको चूमना अच्छा नहीं।

(७६) भूत-प्रेतकी या दूसरी डराने वाली कहानियाँ बच्चोंको मत सुनाओ।

(७७) मशकका पानी मत पीओ।

(७८) सड़ा हुआ और कच्चा फल मत खाओ।

(७९) रहनेका घर बहुत साफ रखना चाहिए। उसमें नित्य झाड़ू लगाना चाहिए। उसका फर्श कभी-कभी धुलना चाहिए। घर कच्चा हो तो उसको गोबर मिट्टीसे लिपवाते रहना चाहिए। चौकी, अल्मारी, मेज, कुर्सी ऊपर नीचे अच्छी प्रकार साफ करनी चाहिए। मेजमें दराज हो तो उसको भी अन्दरसे साफ करना चाहिए। स्मरण रखना चाहिए कि गर्दसे बचना स्वास्थ्यके लिए बहुत आवश्यक है।

(८०) भोजनके बाद एक बेर लघुशङ्का कर लेना अच्छा है।

(८१) साफ पानीसे स्नान करना चाहिए स्नानके समय शरीर को खूब रगड़ना चाहिए।

हस्त-रेखा विज्ञानकी रूप-रेखा

[लेखक—श्री० पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य, हस्त-रेखा विशेषज्ञ]

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ॥१॥

प्रातः कालमें सदैव करतलावलोकन करते रहनेका एक अन्य तात्पर्य यहभी है कि मनुष्योंको अपने जीवन कालमें भावी इष्टानिष्ट प्रसंगोंका बोध होता रहता है, जिससे कि वह अपनी भावी अशुभ घटनाओंसे बचनेके उचित उपायकी युक्ति विचारकर उक्त आपत्तियोंसे बचता रहता है। तथैव शुभ घटनाओंके ज्ञात होनेसे उनसे विशेष लाभ उठानेके प्रयत्न करता है। एतदर्थ संसार सागरसे सुख पूर्वक पार पानेके लिए सुंदर सुदृढ़ नौकाके समान सहायक हस्त रेखाएं अवलोकन करनेसे भावी घटनाओंका विचार विमर्श उत्तम समझा गया है। यह सामुद्रिक शास्त्र हमारे यहाँ अति प्राचीन कालसे विद्यमान है। इस शास्त्रके प्रवर्तक व्यास, पाराशर, श्रीसूर्य, कात्यायन, छागलेय गर्ग, गौत्तम, भरद्वाज, भृगु, अत्रि, कश्यप, बृहस्पति, आदि महर्षिगण पूर्वकालसे हुए हैं। आधुनिक समयमें इस शास्त्रके इतिहास का अनुसन्धान करनेसे भी ज्ञात होता है कि यह शास्त्र ईस्वी सन्‌के तीन हजार वर्ष पूर्व चीन देशमें और दो हजार वर्ष पूर्व ग्रीसमें और रोम देशके अन्यान्य भागोंमें भी अस्तित्वमें था, इनसे भी पूर्व वाल्मीकि रचित रामायण एवं व्यास रचित स्कंद पुराणादिकोंके प्रमाण देखनेसे भी ज्ञात होता है कि भारत में यह शास्त्र अति प्राचीन कालसे पूर्णोन्नत दशामें सम्मान पूर्वक बहुत प्रचलित था।

भारतका प्राचीनकाल अपनी विद्या, बुद्धि, कला कौशल व वैज्ञानिक उन्नतिके कारण सदासे प्रसिद्ध है, तथा भारतवासियोंको सदैवसे ही इस पर गर्व रहा है। प्रत्येक विषय यथा—मनोविज्ञान, शरीरविज्ञान, आकृतिविज्ञान भौतिकविज्ञान तथा ज्यौतिषविज्ञान पर समय २ पर विस्तृत विवेचन व अनुसंधान होते रहे हैं। ज्यौतिष शास्त्रभी उसीमें से एक है तथा सामुद्रिकशास्त्रभी ज्यौतिष-शास्त्रका एक अंग है। आजभी भारतवर्षमें एक हस्त-रेखा विशेषज्ञ हाथकी अंगुली तथा नाखूनों को देखकर यह बतला देगा कि यह मानव भाग्य शाली है अथवा भाग्यहीन; किन्तु इस शास्त्रसे सूक्ष्म विचार करनेकी प्रणाली मैं पाठकोंके सामने रखता हूँ, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति हस्तरेखाओं द्वारा भविष्य ज्ञान, (अति शुभ काल, तथा अति अशुभ कालका ज्ञान) कर सकें।

(१) अति शुभ कालका तात्पर्य यह समझें कि एक विद्यार्थी उच्च परीक्षाके समय यह जान ले कि मुझे मेरी हस्तरेखाओंसे भविष्यमें किस विज्ञानकी ओर जाना चाहिए।

(२) अति अशुभ कालका तात्पर्य यह होगा कि भविष्य कालमें आने वाली घटनाएँ जो पढ़नेमें प्रति बंधक होंगी, जैसे परीक्षाके समय रोगोंका आक्रमण या नवीन घटनाएँ आदि।

हस्त परीक्षा करनेकी विधि

हस्त परीक्षा करनेका विधान हमारे पूर्वाचार्यों ने इस प्रकार वर्णन किया है—

मणि बंधं पाणि युगलं
तस्यच पृष्ठ तलं ततो रेखा ॥१॥
अंगुष्ठोंगुलयोः नख लक्षण
मथवानु पूर्व क्रमाद् वक्ष्ये॥२॥

हस्त परीक्षा करते समय परीक्षकको प्रथम हस्त छूना नहीं चाहिए, सर्व प्रथम ८ इंचके अंतरसे मणिबंध रेखाका निरीक्षण करना। तदनंतर दोनों हाथोंको अवलोकन करना तत्पश्चात् दोनों हाथोंका पृष्ठभाग देखना तदनंतर उनका भीतरी भाग और करतलके ऊपरकी रेखा अंगुष्ठ अँगुली और अँगुलियोंके नखके लक्षण क्रमसे देखना चाहिए।

(१) हस्तका सर्वप्रथम पृष्ठ भाग (करपृष्ठ) यह निश्चय करता है कि वह हस्त, उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ किस श्रेणीका है—जिस हाथमें रेखाएँ कम हों अँगुलियोंके मूलमें खाली स्थान न हो तथा हथेलीका रंग सुर्ख, नाखून लाल हों तो उत्तम समझना। जिस हाथकी रेखाएँ परस्पर युति करती हों (मिल जाती हों) अंगुष्ठ लंबा, अंगुली लम्बी पतली कटी हुई रेखाएं देखनेमें आवें तो मध्यम। जिस हाथकी रेखाएं छोटी बहुत देखने में आवें तथा अंगुलियोंके मध्यमें संधि बड़ी २ देखनेमें आवें नख लम्बे हों तो हाथ कनिष्ठ समझना।

(२) उत्तम हाथोंकी रेखाओं द्वारा भविष्यज्ञान

स्वास्थ्य रेखाः—

यह स्वास्थ्य रेखा कहाँ पर होनी चाहिए? मेरे अनुभव से यह रेखा बुध के पर्वत के नीचे उसमें से निकलती है और वह सीधी हथेलीको पार करके जीवन-रेखासे मिलती है। ये दोनों रेखाएं उत्तम एक सी लम्बाई लिए हुए हों तो उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने वाली होती हैं। अन्यथा मध्यम स्वास्थ्य रखने वाली समझो। स्मरण रखना चाहिये कि जीवन रेखा केवल ईश्वर की दी हुई जीवनकी लम्बाई बतलाती है, किन्तु स्वास्थ्य रेखा जिस प्रकारका जीवन वह व्यक्ति व्यतीत करता है बतलाती है।

स्वास्थ्य रेखा सबसे अधिक परिवर्तन शील है। यह जीवनके उतार-चढ़ावका मापक यंत्र है। मैंने इस विचित्र रेखाको जीवनके प्रारंभिक वर्षों में गहरी तथा मजबूत देखी है, किन्तु युवावस्था में हल्की तथा फीकी हो जाती है। जैसे स्वास्थ्य सुधरता है, जब वह मनुष्य मानसिक शक्तियों से बहुत अधिक कार्य करता है तो गहरी तथा स्पष्ट होजाती है। इसके उतार चढ़ाव मन के विचारों से परिवर्तित होते हैं।

हस्तरेखासे आजीविका (लाइन) का ज्ञान

(१) जिसके हाथ में सूर्यकी रेखा अधिक जोरदार हो बुधका पर्वत अधिक उठा हो अंगुलियाँ लम्बी हों तो चिकित्सा करने वाला होगा।

(२) जिसके हाथमें गुरुका पर्वत अधिक उठा हो तथा अंगुलियोंकी नोंकें मोटी अँगूठा छोटा हो, तथा बुधका पर्वत चपटा हो तो यंत्रज्ञ तथा तथा इंजिनियर होता है।

(३) जिसकी अँगुलियाँ लम्बी तथा समीप २ में रहने वाली हो अँगूठा लम्बा सीधा हो मस्तक रेखाएं सीधी हों तो कानूनज्ञाता (वकील) होता है

(४) जिसके हाथमें गुरु, शनि, सूर्य, बुध इनके पर्वत उठे हुए हों तो शिक्षक होता है। अँगुलियाँ लम्बी, उनके अग्रभाग मोटे हों, मध्यमाका दूसरा पर्व लम्बा हो तो शिक्षकों का बड़ा प्रमुख होता है।

(५) जिसके हाथकी अँगुलियाँ लम्बी व कोणदार हों, और हृदय व सिर की रेखाओंके मध्यका भाग चौड़ा हो, बुधकी अँगुली की प्रथम पौर लम्बी, सूर्यका पर्वत उठा हो तो न्यायाधीश (जज) होता है।

(६) जिसके नख छोटे हों, गुरुका पर्वत उठा हो तथा गुरुकी अँगुली और चन्द्र मंडल कम पुष्ट हों तो साहित्यज्ञ, पत्रका संपादक होता है।

(७) जिसके हाथमें चन्द्र मंडल ऊँचा हो, मणि बंध रेखाको दबाने वाला, मस्तक रेखा लम्बी, सूर्यकी अँगुली पुष्ट हो तो फोटोग्राफर होता है।

(८) जिसके हाथमें शुक्रका पर्वत ऊँचा उठा हो अंगुष्ठका अग्रभाग मोटा हो कोमल अँगुलियाँ हों तो सिनेमा एक्टर होता है।

(९) जिसके हाथमें गुरु का पर्वत ऊँचा हो, शिर की रेखा लम्बी तथा बुध की अँगुली नुकीली हो तो विदेशमें राजदूत या कमिश्नर होता है।

(१०) जिसके हाथमें अँगुलियाँ छोटी, गठीली, मंगलका पर्वत पुष्ट हो तो सैनिक होता है। विशेषता यह है कि मंगल शनि दोनोंका पर्वत उठा हो तो सेना-नायक होता है।

अशुभ घटनाएं और रोगोंका कारण

(१) अनामिका अँगुलीमें काला बिंदु एवं तिल का चिन्ह हो तो सदा स्वास्थ्यसे हीन निर्बल होता है, अधिक परिश्रम करनेसे उदर रोगी।

(२) मस्तक रेखा पर बहुत छोटी छोटी रेखा आर पार हों तो उसे अधिक कार्य करनेसे शिरका रोग होता है। परीक्षा समय में ज्वर होता है।

(३) अंतः करण रेखा पर काले दाग होने से हृदय रोग होता है।

(४) नख ऊँचे झुके हों, मस्तक रेखा शनि की अँगुलीके नीचेसे बुधकी अँगुली पंखदार हो तो राजयक्ष्मा रोग होता है, तथा नख चौड़े होनेसे भी यही रोग होता है।

(५) शनिके पर्वत पर आड़ी रेखाएँ होने पर पक्षाघात यानि लकवा रोग होता है।

(६) स्वास्थ्य रेखा पर टापूके समान रेखा, शिर रेखा तिरछी घूमी हुई हो तो फोड़े फुन्सी इत्यादि विशेष होते हैं।

(७) चन्द्रके पर्वत पर गोल गोल लाल काले चिन्ह हों तो जलोदर रोग होता है।

(८) नखों पर धब्बे होनेसे मन्दाग्नि रोग होता है।

(९) करतलका मध्यभाग गरम शुष्क हो अथवा अनामिका के पिछले भाग पर काला निशान हो तो ज्वर इत्यादिसे पीड़ित रहता है।

(१०) चन्द्रमाके पर्वत पर तारोंके समान चिन्ह हों तो उदर रोग होता है।

सूचना—यदि पाठक महाशयोंने इस लेख को अपनाया तो अगले लेख में अनायास धन प्राप्ति, लक्ष्मी रेखा का पूर्ण विकास, भाग्य रेखासे विशेष भाग्योदयके वर्ष-मास-दिन निकालनेकी क्रिया तथा हस्त रेखासे जन्म कालकी तिथि मास दिन निकालनेकी क्रिया लिखेंगे।

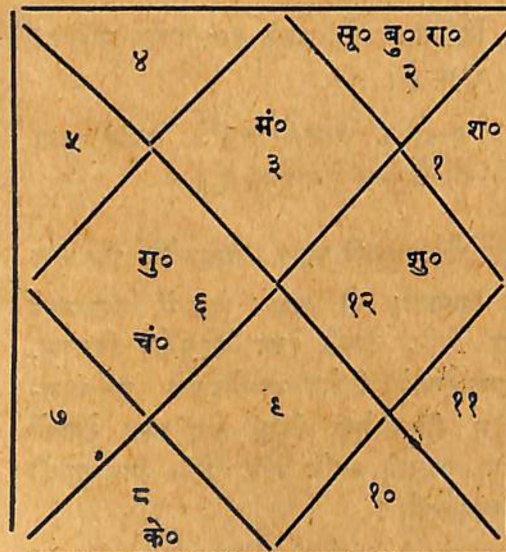
बापूके हत्यारे 'गोडसे'की जन्म कुण्डली

[ले० श्री पं० सूर्यनारायण जी व्यास ज्यौतिषाचार्य]

बापू के हत्यारे नाथूराम गोडसेकी कुंडली देखकर हम यह विचार करना चाहते थे कि क्यों ऐसी भीषणता इसके विचार और हाथों से हो गई ? और इसके लिए दण्ड विधान कौनसा होगा । यह प्रश्न अवश्य ही अन्य ज्योतिर्विन्मित्रों को भी उत्पन्न हुआ होगा । उनके विचारार्थ गोडसेकी कुंडली हम यहाँ दे रहे हैं ।

गोडसे का जन्म सं० १९६६ शक० १८३२ को वैशाख शुक्ला ११ गुरुवारको हुआ था, उत्तरा फाल्गुनी जन्मनक्षत्र, और इष्ट—५ । ३० सू० १ । ६ । ल. २ । १८ था ।

जन्म कुण्डली



यह कुंडली गुरु-चन्द्र युति, और पंचमेश शुक्रको देखते हुए बुद्धि प्रधान-मानव की है। साहसी और भावुककी है। किंतु लग्न चतुर्थेश बुधके व्ययमें चले जाने से इसका भावुक मन अस्थिर और लड़कपनसे भरा हुआ था । सूर्य राहुकी युति उसको क्रूरकर्मा बना रही थी, और अष्टमेश भाग्येश शनि उसके भाग्य और विचार कर्मको नीचताकी ओर प्रेरित करते रहे हैं। बौद्धिक स्थानसे सीधा गुरुका कोई सम्बन्ध न होने से भी वह नीच शनिके प्रभाव से (पंचम) प्रभावित होता रहा है। १८ वर्षकी वय से उसको राहु महा दशा रही है । उसके इतने जीवनका कार्य-क्रम भी 'राहु' प्रभावित हो गया था। परन्तु गुरुकी महा दशासे ही वह धार्मिक-हिन्दुत्व प्रधान प्रचारका पुरस्कर्ता, और विचारों में अन्धता रखने लगा था, जबसे गुरु नीच राशि में होकर इसके अष्टम स्थानमें आया उसके विचार भी धार्मिक तीव्रता और प्रतिहिंसक भावनाके बनते रहे हैं। उधर नीचके शनिकी भी उस गुरु (अष्टमस्थ) पर तीव्र दृष्टि रही। फलतः दो नीच ग्रहों ने गोडसेको ऐसे भीषण कर्मके लिये वेगसे प्रेरित किया। गुरु-के कारण ही वह संसारके सर्वश्रेष्ठ और अपने ही वर्गके महा मानवकी हिंसा करनेको प्रेरित हुआ। इधर जब उसे संभवतः गुरुमें शनि अन्तर्दशा प्रविष्ट हुई उसके नीचस्थ गुरुने उसे दशमेश होनेके कारण राजकोप बन्धन और मरणके निकट ला दिया । गुरुके

साथ दूसरे ग्रहोंने भी जब मकरमें प्रवेश किया तथा नीचस्थ गुरु के अष्टम रहनेके कारण तथा गुरुकी महादशामें अष्टमेशके अन्तर आजाने से (वह भी नीचका होनेके कारण) उसे मारक योग उपस्थित हुआ, जनप्रवाद और निन्दाके द्वारा व्यापक दुष्कीर्ति लेकर वह फाँसी पर चढ़ गया। इस प्रकार उसका जीवनांत होगया।

अन्यथा गुरु, चन्द्र एवं शुक्रके कारण यह बहुत प्रतिभाशाली था, वक्ता, कार्य करता लेखक और पत्रकार बना था। इस क्षेत्रमें भी वह यशस्वी बन जाता किन्तु नीचके शनिने इसकी 'मति'को दुराग्रही और विषाक्त प्रतिहिंसात्मक भावना का बना दिया था। उधर लग्नेशके साथ सूर्य-राहुके ग्रहण योगने भी क्रूरात्मा, क्रूर कर्मकर्ता बननेको विवश कर दिया था। गुरु, चन्द्र एवं शुक्रका कोई महत्व नहीं रह पाया था। लग्नका मङ्गल भी नीचाभिलाषी ही है। फिर वह षष्ठेश भी इस तरह तीन नीच ग्रहोंने उसकी मति मलिनकी और महान् क्रूर कर्म करनेको बाध्य किया। नीचाभिलाषी मङ्गल और शनिके कारण ही वह दृढ़ रहा और पश्चात्ताप करनेके लिये विचलित नहीं बना। तीन नीचों के समागम से वह पाषाण हृदय बना हैं।

आश्चर्य तो यह है कि उसे गुरुकी दशा में जिसमें कि उसे प्रतिभा और ज्ञानसे कीर्ति अर्जित करने का प्रसंग सुलभ था, उसी गुरुके नीच राशिमें जाकर अष्टममें रहनेसे उसकी बुद्धि को विपरीत मार्ग पर ढकेलने को प्रोत्साहित किया। साधारणतया अष्टमका नीचस्थ गुरु ऐसी हिंसक भावना और क्रूर कर्मके लिए सबल प्रेरणा नहीं देता। किंतु उसपर नीचस्थ शनिका भी प्रबल प्रभाव था। इसलिए उसे दुस्साहस पूर्ण दुष्कर्म करनेको बलात् प्रोत्साहित किया। साधारण गुरुमें सत्कीर्ति प्राप्त होती पर नीचस्थ गुरु और नीचस्थ शनिके प्रभाव ने उसे व्यापक धिक्कार और दुष्कीर्ति का पात्र बना दिया। विस्मय होता है कि कैसी सुन्दर बुद्धि-प्रधान कुंडली को शनि की नीचता ने पंचमाष्टम प्रभाव से विनष्ट कर डाला। उसे घृणाका पात्र बना डाला। ऐसी कुंडली ज्योतिर्विदोंके अध्ययन, विवेचन तथा विश्लेषण की वस्तु है।

विनय

नष्ट करो जिमि पापोंको मेरे,
पुण्यके पुञ्जभि क्षीण करो जी।

बेड़ी तो दोउ सम हैं भगवन्,
लोह वा स्वर्णकी काट धरो जी॥

—दयानन्द जोशी

संक्षेपतः द्वादश लग्नों का वर्णन

[ले०—राजवैद्य श्री० पं० भ्रमरदत्तजी मिश्र, एल. एम. ए. एण्ड एम. डी. एच., कमर्शियल एस्ट्रॉलॉजर]

द्वादश राशियोंमें जो राशि जिस समय क्षितिजपर उदय होती है वह लग्न होता है और उस प्राणीका मानसिक और शारीरिक जीवन लग्न राशिके अनुसार होता है। केवल ग्रहोंके स्थानापन्नभेदसे प्रत्येक प्राणीमें समान लग्न होने पर भी बहुत भेद रहता है। इसी प्रकार शुभ और पाप ग्रहोंकी दृष्टिसे भी परिवर्तन हो जाता है। लग्नका सही अर्थ है समय यानी मुहूर्त। यदि लग्नमें कोई ग्रह होता है या किसी ग्रहकी दृष्टि होती है तब एक ही लग्नमें फल की तारतम्यतामें परिवर्तन हो जाता है। यथा यदि लग्नमें सूर्य है या सूर्यकी दृष्टि है तो उत्तम श्रेणीका होना, उत्तम स्वास्थ्यका होना, साहसी होना इत्यादि बतलाता है, यदि चन्द्र है या उसकी दृष्टि है तो शारीरिक बनावट उत्तम होती है और मनुष्य आराम-तलब होता है। यदि मंगल है या दृष्टि है तो साफ और स्वच्छ गुलाबी आकृति वाला होता है। शारीरिक तन्दुरुस्ती उत्तम होती है, एक निश्चित सिद्धान्तका व्यक्ति होता है किन्तु प्रकृति गरम और रूक्ष होती है। बुधसे प्रत्येक अंगकी रचना उत्तम होती है, सुंदर स्वरूप होता है और शरीर का उत्ताप प्रायः ऊष्ण ही होता है। चेहरेका रंग चमकीला होता है। गुरुसे चेहरे का स्वच्छ वर्ण होगा, दीर्घ वृत्त वाले नेत्रहोते हैं और प्रभाव शाली देह वाला होता है। शुक्रसे प्रकृति स्त्रियों के समान होगी तथा सौंदर्य और सुकुमारता भी स्त्रियोंके समान होती है। शनिसे कृष्ण वर्ण का चेहरा होगा, बाल गहरे काले होंगे, शरीर लम्बा होगा और सुस्त होगा। वक्षस्थल छोटा होगा, इसी प्रकार मस्तिकके सम्बन्ध में चन्द्रमासे जानना चाहिए, ऋण दुर्घटना आपत्ति इत्यादिके सम्बन्धमें लग्नेश औरसप्तमेश के बलाबलसे जानना चाहिए यदि चंद्रमा के साथ या सूर्यके साथ पाप ग्रहोंका योग हो तो उसके जीवनमें दुर्घटनायें अवश्य होंगी और जीवन समाप्ति भी दुर्घटनाओंके द्वारा ही होगी। यदि राहु केतु सूर्य और चंद्रमासे संयोग किसी कोणमें हो और कोणकी राशियाँ मेष, वृष, वृश्चिक मकर इत्यादि हों तो उसका शरीर कुबड़ा, लूलो, लँगड़ा लकवा इत्यादि व्याधियोंमें से किसी एकका अवश्व ही शिकार होगा। ज्योतिषज्ञ हजारों जन्म पत्रोंको देख कर अपना एक निश्चित सिद्धान्त बना सकता है। लग्नेशके सम्बन्धोंको दृष्टिमें रखते हुए जीवन की प्रमुखताको अच्छी प्रकार विशदरूपसे विवेचन कर सकता है।

मेष लग्न

(१) मेषलग्न वाले सदा स्वतंत्र विचार धारा वाले होते हैं एवं साहसी तथा नितान्त अभिमानी होते हैं। **शारीरिक स्थिति**—मेषलग्न वाले मध्यम कदके लम्बे होते हैं। शरीरका रंग गुलाबी तेज दृष्टि, लम्बा चेहरा, लम्बी गरदन, बड़ा शिर, ठुड्डी अल्पविस्तार युक्त, भूरे, बाल कुछ काले घूँघर वाले, शिरमें व्रणचिन्ह, सुन्दर दंतपंक्ति और गोल नेत्र वाले होते हैं। **विशेष स्थिति**—मेषलग्नमें जन्मने वाले विज्ञानके प्रेमी तथा सैद्धांतिक विचारोंके इच्छुक होते हैं, किंतु जिद्दीभी होते हैं। साहसी और इच्छुकभी विशेष होते हैं।

इनमें रचनात्मक कार्योंको संपादन करनेकी शक्ति होती है-इस लग्नवाले दूसरोंको अपने अधिकारमें रखना चाहते हैं और वे स्वंय किसीके अधिकारमें नही रहना चाहते । तल्लीनता और क्रोधके भण्डारके समान हैं। ये जिद्दी होते हैं किंतु स्पष्टवक्ता अवश्य ही होते हैं। रुष्ट लोभी और गम्भीर होते हैं। इनकी प्रकृति गरम होती है। यह सौंदर्य और विज्ञानकी सुन्दरताके पुजारी होते हैं। यदि मेष पाप ग्रहोंसे आक्रांत हों तो शिर पीड़ा मस्तिष्क विकृति आदि होगी यदि चंद्रमाके साथ शनिभी है तो विशेष।

वृषभ लग्न

(२) स्वाभिमानी, साहसी, बुद्धमान, प्रेमी और कभी कभी जिद्दी और अविचार शील भी होजाता है। शारीरिक—कद छोटा होता है और देह स्थूल होती है। मोटे ओष्ठ तथा देहका रंग शरबती—देह चौकोर सी होती है। चेहरा सुन्दर होता है, आंख और कान बड़े होते हैं, कपाल भी लम्बा तथा विशेष मांसल और चौड़ा भी होता है । **विशेष स्थिति—** इस लग्नवाले सहसा किसी बातको नहीं सुन पाते हैं क्योंकि उनका बरताव साँडके समान होता है, आत्म विश्वासी होते हैं। यह अपना सिद्धान्त और मार्ग पसन्द करते हैं, तीक्ष्ण बुद्धिवाले होते हैं, धैर्यके निधि होते हैं। वे सदा अपने विचारों को क्रियात्मक रूपमें लाते हैं। इनका शारीरिक और मानसिक गुण विशेष विचारणीय होता है। प्रेमी और प्रसन्न होते हैं, संगीतके प्रेमी होते हैं। उनका व्यक्तित्व विशेष प्रभाव शाली होता है, उनका विचार होता है कि हम कुछ करनेको पैदा हुए हैं—ये सदा स्नायुदौर्बल्यके रोगी होते हैं, जीवनके ४५-५० वर्षकी अवस्था तक बच्चोंसे सदा प्रसन्न रहते हैं।

मिथुन लग्न

(३) इस लग्नवाले परिवर्तन शील विचारों वाले होते हैं—लिखनेके इच्छुक तथा पढ़नेके भी। चतुर और सहजबोधभी होते हैं। दीर्घायु, कर्मठ, चंचल और आराम-तलब होते हैं। लम्बे और सीधे होते हैं और चंचल चाल वाले होते हैं—विशाल चेहरा डाढ़ीके पास दबी हुई ठुड्डी तथा पतला चेहरा और लालवर्ण। यदि पापग्रह लग्नमें हो तो विशेष लम्बापन होगा। आँखें साफ और नाक कुछ चपटी होती है। **विशेष स्थिति—** इस लग्न वाले परिश्रमी और मशीन आदि यंत्र विज्ञानके विशेषज्ञ होते हैं। इनमें कभी सहसा स्नायु दौर्बल्य आजाता है इनको सदा विरोधीसे सतर्क रहना चाहिये। इनका दिमाग चरित्र भ्रष्टताके कारण विकृत सा होता है, ये बहुब होशियार और पैतृक ज्ञानकी योग्यताके विशेषज्ञ होते हैं। ये छली कपटी धोखेबाज होते हैं, यदि पाप ग्रह लग्नमें हैं तो अवश्य ही छली कपटी धोखेबाज होंगे। ये अपने व्यवसाय में प्रवीण होजाते हैं जहां इनका प्रभाव होता है।

कर्क लग्न

(४) इस लग्न वाले विशेष सोचने वाले स्नायुदौर्बल्य युक्त अशांत, और संगीत प्रेमी, क्रिया कुशल होते हैं। देह मध्यम श्रेणीका, चेहरा उभरा हुआ, नाक चपटी, सफेद, बाहु विशाल, लम्बी शक्ल और चौड़ा वक्षस्थल इत्यादि होते हैं। **विशेष स्थिति—** ये विशेष बुद्धिमान, अत्यंत मितव्ययी तथा विशेष क्रियाशील होते हैं। इनकी मितव्ययिता कृपणताके रूपकी होती है—दिमाग सहज बोधशील होता है तथा आशु ग्रहणशील भी होता है। प्रसन्नचित्त वाले, परिवार

तथा बाल बच्चोंमें विशेष आसक्त, ये सदा प्रेममें विफल, विशेष बातचीत वाले, आत्म विश्वासी ईमानदार सम्मानप्रिय न्याय-प्रिय तीक्ष्ण अभिलाषी, नवीन विषयको शीघ्र ग्रहण करने वाले होते हैं और इनका व्यवसाय अस्थिरसा होता है।

सिंह लग्न

(५) सिंह लग्नोत्पन्न लालची, गरम दिल वाले, विज्ञान प्रेमी, संगीत प्रेमी, शिक्षित, प्रसन्न तथा कभी उदास होते हैं। इस लग्न वालोंका व्यक्तित्व (Personality) प्रभावशाली, विशाल भुज दण्ड, चिड़चिड़ापन, तथा निर्बल स्वास्थ्य, साधारणसा कद तथा उल्लूकीसी शक्ल विचार युक्त मुखमण्डल, शरीरका ऊपरी भाग रचनामें उत्तम होता है। **विशेष स्थिति**—जीवन के प्रत्येक प्रश्नको दक्षताके साथ हल करने वाले विश्वासी शुभचिंतक तथा प्राचीन धर्मांध तथा रूढीवादका पोषक सहिष्णु, साधारणतया विचारशील, इस लग्नवाले वेदान्तके प्रिय एवं ज्ञाताभी होते हैं तथा ऐसे मनुष्य पढ़नेके बड़े लोभी तथा झगड़ालू होते हैं, उनकी इच्छायें अपूर्णही रहती हैं। प्राकृतिक सिद्धान्तसे रहित होनेके कारण उन्हें पर्याप्त आपत्तियाँ उठानी पड़ती हैं।

कन्या लग्न

(६) कामुक, चंचल, शिक्षा संगीत और बिज्ञान प्रेमी इसमें आत्मविश्वासका अभाव ही होता है, चतुर विवेकी और सैद्धान्तिक होता है। शरीरका कद मध्यम होता है, इस लग्न वाले का वक्षस्थल मुख्यरूपमें विशाल होता है। यदि लग्न पापाक्रान्त होतो कमजोर वक्षस्थल होता है। नाक सीधी होती है, गालोंकी हड्डियाँ उभरी हुई होती हैं और कपाल उत्तम होता है। **विशेष स्थिति**—इस लग्नवालेकी बुद्धिका सम्यक् विकास उसकी पूर्णयुवावस्थामें होता है। वह अपनी शक्ति और प्रभाव से प्रत्येक इच्छित पदार्थ तथा प्राणीका विवेचन कर सकता है। वह अपने जातीय हितमें सतर्क रहता है तथा दूरदर्शी, मितव्ययी, प्रामाणिक तथा चालाक और धूर्त होता है। वह शारीरिक तथा पदार्थ विज्ञानका अच्छा लेखक होता है। उसमें दूसरों पर प्रभाव डालनेकी विशेष शक्ति होती है। यह सदा स्नायुदौर्बल्यकी व्यथासे ग्रस्त रहता है यथा लकवा आदिसे, यदि यह लग्न पापाक्रांत हो तो। वह एक आदर्श सिद्धान्तकी विचार-धाराके मस्तिष्क वाला होता है।

तुला लग्न

(७) विचारशील, प्रभावशाली, न्यायशील आदि गुणों वाले होते हैं। यह तुला लग्न वालों की मानसिक स्थिति है। **शारीरिक स्थिति**—स्वच्छ वर्ण मध्य श्रेणी का देह, कफ प्रकृति तथा स्थौल्य देह, चेहरा देखने में प्रभावशाली एवं सुन्दर तथा विशाल सुन्दर नेत्र चौड़ा वक्षस्थल आकृति ठीक। इस लग्न वाले सदा युवा से प्रतीत होते हैं। **विशेष स्थिति**—इस लग्न वाले सदा इन्द्रिय-भोक्ता और मानवी कर्तव्यों के पालन में तल्लीन होते हैं। दूर-दर्शी तथा प्रत्येक कार्य के कारण को अपनी तीक्ष्ण विचारधारा से निश्चित करने वाले न्यायप्रिय, शान्तिप्रिय आज्ञा और अनुमति के पालक उच्चाकांक्षा रखने वाले होते हैं। इस लग्न वाले वास्तविकवादीके बनिस्बत आदर्शवादी विशेष होते हैं तथा रचनात्मक कार्य करने वाले ध्यान पूर्वक मनन करने वाले हवाई महल बनाने वाले होते हैं। यह दूसरोंके कहने पर ध्यान नहीं देने वाले होते हैं, तथा राजनैतिक नेता तथा धार्मिक संशोधक होते हैं। इनके कार्य जनता पर प्रभाव [illegible] करने वाले होते हैं—

कभी-कभी इनका उत्साह और अनुराग इतना बढ़ जाता है जिन पर विशेष रूपसे अमल करने पर जनताका कुछ विरोध होता है, ये आसानीसे किसी बातको बिना पूर्णतया प्रमाण पाये नहीं मानते हैं। इनकी पॉलिसी सदा सच्चाई और ईमानदारी के सिद्धान्त पर होती है।

वृश्चिक लग्न

(८) व्यंगकारी मनमौजी, स्त्री यदि इस लग्न में पैदा होती है तो पुरुषकीआकृति वाली होती है। गुप्त विद्याओंकी शिक्षाका प्रेमी, होशियार, प्रभाव मुश्किलसे उत्पन्न करने वाला होता है। इसकी सूरत देखने में सुन्दर, अस्थियाँ पूर्ण विकसित होती हैं, विशाल नेत्र, लम्बा कद, घूंघर वाले बाल दीर्घ चौड़ा कपाल व्यक्तित्व प्रभाव कारी, आदर्श तथा प्रबंधकारी शक्ति युक्त होते हैं। **विशेष स्थिति**— इस लग्न वाले दयालु, उदार, अत्यंत अस्थिर दिमाग वाले और प्रेमके बड़े उत्साही होते हैं, इनकी वृत्ति इन्द्रिय सुखकी ओर विशेष होती है, वे सच्चाई द्वारा वेदान्तके सिद्धांतोंसे इन्द्रियों पर अधिकार करते हैं। अच्छे पत्र व्यवहारी, तथा प्रायः अमानुषिक आपत्ति जनक और अविश्वस्त भयानक व्यक्ति होते हैं। ये चरित्रके दृढ तथा उत्साही, आराम पसंद तथा मितव्ययी होते हैं। यदि इस लग्नवाले संगीत कलाको सीखें तो जल्दी ग्रहण कर सकते हैं—ये सदा दस्तकारीमें लाभ उठाते हैं तथा नृत्यवाद कलामें वे सदा अपनीही रायके पक्षपाती होते हैं गरम मिजाजके अर्श रोगी तथा उत्तम लेखक भी होते हैं।

धनुर्लग्न

(९) वेदान्तनिष्ट तथा सामुद्रिक ज्यौतिष के ज्ञाता और गुप्तविद्याओंके मास्टर होते हैं। मनमौजी चंचल तथा उत्साही होते हैं। ये स्थूल शरीर वाले होते हैं, बादामके समान नेत्र, भूरे बाल तथा देखनेमें सुन्दर, सुन्दर दाँतों वाले, हँसमुख पूर्ण लक्षणों वाले होते हैं। **विशेष स्थिति**—कफ प्रकृतिके, व्यापारी होते हैं, ये सदा रूढीवाद धर्मके प्रचारक पोषक होते हैं सहानु-भूति रखने वाले प्रेमी, सुन्दर तथा दूरदर्शी होते हैं। कभी२ वे व्यथित तथा चिंतितभी रहते हैं। वे कठोर उत्साही होते हैं, वाह्याडम्बरों के विरोधी तथा ईश्वरसे डरने वाले ईमानदार-नम्र तथा कपट पाखण्डसे रहित होते हैं। वे अपनी स्त्री, भोजन, पान संबंधी आदि पर कड़ा नियंत्रण रखने वाले होते हैं। इनका झुकाव बिना इरादे के मिथ्या ज्ञानकी तरफ दूसरोंके द्वारा होता है। इन्हें अपनी युवावस्थासे पूर्वके जीवनमें फेंफड़ों की रुजाके संबंधमें सतर्क रहना चाहिये तथा इन्हें वात व्याधिका शिकार होना पड़ता है।

मकर लग्न

(१०) इस लग्न वाले वैरागी जितेन्द्रिय दुखी जीवन, सहानु भूति रखनेवाले, उदार धर्म-कार्यों में सहायता करनेवाले, पक्के सिद्धान्त वाले आत्मबल वाले रहस्यज्ञ अत्यन्त रक्षाकरने योग्य न्यायशील, होशियार चालाक, दक्ष होते हैं। इस लग्नवाले कदमें लम्बे लाल गेहुवाँ वर्णके, आँखोंकी पलकें भूरे केशोंवाली तथा झुकाव रहित वक्षस्थल, शिर तथा चेहरा विशाल और उत्तम लम्बेदाँत बड़ा मुख झुकाववाला, नाक झुकाहुवा शरीर कृश और अस्थिमय मांसरहित परिस्थिति के मुकाबलोंमें जीवनमें महत्वाकांक्षाओं वाले होते हैं किन्तु जीवन मितव्ययी होकर कोई धन-राशि संचित नहीं करपाते हैं। ये विशेष बाह्या-डम्बर वाले होते हैं, न्याय करनेमें समर्थ, रक्षा करने योग्य यदि शनि आक्रांत हो तो, ये

अजेय पक्षके मिताचारी संयमी होनेसे कोई सार्थकता नहीं रखते हैं अत्यन्त साहसी परिश्रमी ये उत्तम प्रयत्नशील व्यक्ति होते हैं। गृहस्थ जीवनमें उत्तम पुरुष हो तो स्त्री तथा स्त्री हो तो पुरुष रक्षात्मक गुणोंके द्वारा आसानीसे नहीं पाते हैं। स्त्री तथा पुरुष (पति पत्नी) उन्हें इस अविवेक परायण मनोवृत्ति को सदा दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिए। यह परिश्रमी कर्मठ, यदि मंगल अपने घरका हो तो उनमें आत्म-विश्वास का अभाव होता है। तम्बाकू पीने वाले होंगे स्नायुदौर्बल्य वाले निर्बल मस्तिष्क वाले और गप्पी तथा अपनी जवान पर बेलगाम होते हैं।

कुम्भ लग्न

(११) कुम्भ लग्न वेदांतिक लग्न तथा राशि है। इस लग्न में उत्पन्न अध्यापक लेखक व्याख्यान दाता आदि विशेष गुणों वाले होते हैं। यदि राशि पापाक्रांत न हो तो, यह स्पष्टभाषी झगड़ालू होते हैं छेड़ने पर, उदार हृदय वाले अत्यन्त उदारता वाले तथा सदा दूसरों की मदद में लगे रहते हैं। बुद्धिमान्, उत्तम स्मरण शक्ति वाले और सचाई के साथ व्यवहार करने में दक्ष होते हैं। इस लग्न वाले खासकर लम्बे और झुके हुए होते हैं। चेहरा सुन्दर होता है, आकृति प्रभावशाली होती है तथा रचना सुंदर होती है। होठ मोटे मांसल (पुष्ट) होते हैं। कपोल, कनपटी तथा कुल्हे विशाल होते हैं। यदि शनि चौथे स्थानमें हो तो वक्षस्थल कमजोर और झुककर चलनेकी आदत होती है। **विशेषस्थिति**—यह शीघ्र मित्रता करने वाले तथा छेड़ने पर झगडालू बैल तथा पागल श्वान सम होते हैं इनका क्रोध शीघ्र शांत हो जाता है, यह लेखक तथा पुस्तक निर्माता होते हैं। कभी मितव्ययी कमजोर धीमे, अत्यन्य डरपोक प्रतीत होते हैं। यह विशेषतया ज्योतिषी होते हैं। यह श्रोता-गणोंके सामने सहमने वाले होते हैं। यह जब युवा हो जाते हैं तब इनके ज्ञानका प्रभाव संसार पर होता है। ग्रहोंकी स्थिति अच्छी हो तो यह उन्नति की बाढ़ लेकर चलने वाले होते हैं, और इससे ही यह ग्रह स्थिति खराब होनेसे विपदास्पद होते हैं। यह मानवताके सिद्धान्तों में मिथ्या रूपसे कभी झुक जाते हैं। गृहस्थ जीवन में उनकी पत्नीका संकीर्ण विचार होने से अप्रसन्न रहते हैं। यहअपनी पत्नी तथा पति-के विशेष भक्त तथा सेवक होते हैं। उदर पीड़ा पार्श्वशूल उरुशूल इन्हें रहता है। पति पत्नीको सदा अन्योन्य प्रेमद्वारा प्रसन्न रहना चाहिये वरना स्वास्थ्य जल्दी खराब होजायगा।

मीन लग्न

(१२) जिद्दी, अध्यात्मवादी, शीघ्र ग्रहणशील, अत्यंत धार्मिक, निस्पृह, ईश्वर वादके कट्टर पक्षपाती होते हैं।

उत्तम देह वाले, मोटे ताजा मध्यम कदके गेहुँआ रंग तथा कुछ श्याम झाँई हो, आंखें मछली के समान और स्थूल शरीर वाले होते हैं। रूढीवाद धर्मके सिद्धान्तोंके पोषक अत्यन्त अंधविश्वासी संयमी तथा हर बात में परिणाम-का पूर्वही अन्दाजा लगा लेते हैं। धार्मिक नियमों में बड़े कठोर और ईश्वरसे डरने वाले प्राय जिद्दी और निर्बल होते हैं। मुश्किल से अपनी इच्छा का अनुमोदन करते हैं। दूसरों पर असर डालने वाले, इतिहास ज्ञान के प्रेमी होते हैं। प्राचीन वस्तुओं के संग्राहक तथा ज्ञाता पौराणिक, अत्युत्तम रचनाओंके प्रेमी, मितव्ययी और जीवन भर दूसरों पर आश्रित रहने वाले जबतक स्वतंत्रताके अधिकारी न हों, ये अपने वरतावमें सच्चे तथा कानूनको भंग करनेमें डरते हैं, जो सचाईका विधान है इन कारणोंसे इस लग्नवाले अपनेमें विश्वासका अभाव पाते हैं।

कर्क-लग्न-जातक

[ले०—श्री नन्दकिशोर जी गर्ग ज्योतिर्विशारद]

कर्क जल-तत्त्वकी चर-राशि है, इसका स्वरूप केंकड़ेके समान माना गया है। केंकड़ेके समानही इसका निवास झील, तलाई या नदी तालाबके किनारे होता है। अर्थात् जलके समीपस्थ स्थानों में ही यह विचरण करती है। यह पृष्ठोदय एवं रात्रिबली राशि है। काल पुरुषके पेट व छातीके नीचे इसका प्रभाव है। यह बहु-प्रजा राशि है। इस लग्नके जातकमें केंकड़े तथा इस राशिके अधिपति चन्द्रमाका प्रभाव स्वभाव, गुण आदि में दिखाई पड़ता है।

राशिके जल-तत्त्व का प्रकाश जातककी उपजाऊ कल्पना शक्ति एवं दूसरोंके अनुकरणमें शीघ्र ही प्रकट हो जाता है। कहा है "जल तेरा स्वरूप कैसा" जिसमें मिलाओ (या रखो) वैसा।" तदनुसारही इस लग्नका जातकभी अपनेको आसपास के वातावरणके योग्य बना सकता है। अनुकरण शक्ति या दूसरेका रूप धारण करनेकी योग्यता इनमें अच्छी होती है; इसी कारण बहुतसे अच्छे अभिनेता या अभिनेत्रियाँ इनमें पाये जाते हैं। जल-तत्त्वकी चर राशि होनेसे इनमें स्थिरताका कुछ अभाव रहता है। इस कारण हृदयमें अनिश्चितता अस्थिरता एवं विचारोंमें परिवर्तन शीलता पाई जाती है। जलका प्रधान गुण गति शील होना है। इसी कार इस लग्नके जातकभी यात्रा प्रेमी होते हैं तथा इनकी कल्पनायें किसी न किसी रूपमें चलती ही रहती है।

कक्ड़ा इस राशिका स्वरूप कहा जाता है। उसीके अनुसार इस लग्नके जातकके मन एवं कार्यमें प्रभाव दिखाई देता है। क्योंकि इसके जातकमें शांतता, शांति प्रियता तथा कर्त्तव्यकी दृढ़ता रहती है। उनकी प्रत्येक विषयमें पकड़ इतनी मजबूत रहती है कि चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ या आपत्तियाँ आजावें वे चिंता नहीं करते इस अवसर पर तो वे अपनी हानिका भी भय नहीं खाते। केंकड़ा जिस प्रकार जलके कीटाणुओंको साफ कर उसे शुद्ध करनेका प्रयत्न करता है उस समय संभवतः उसकी आकांक्षा संपूर्ण जलाशयको शुद्ध कर देनेकी होती है। उसी रूपमें इस लग्नके जातक भी इस संसारके समस्त पापों, अपराधों एवं अन्य दुर्गुणोंको दूर कर देना चाहते हैं। इस प्रकार उनकी भावना उच्चतर होती हैं जिनके साथ अपना एकांत प्रेम, शान्त चित्तता, नम्रता, हृदयकी विशालता आदिका समन्वय कर वे संसारके सामने एक आदर्श रखनेका प्रयत्न करते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जल तत्त्वकी राशि है अतः इसके जातक ऊपरसे जैसे दिखाई देते हैं वैसे भीतरसे नहीं होते। वैसे तो ये बड़े स्पष्टवादी होनेका बहाना करते हैं परन्तु वास्तवमें वे अनेकों बातें छिपा जाते हैं। स्वरूप बदलनेकी अच्छी क्षमता होनेसे अन्य लोगोंके व्यवहार आदिकके आकर्षणमें बड़े सिद्ध होते हैं। वे न केवल उन व्यवहारोंका उत्तर ही देते हैं वरन् उनको अपने व्यवहारमें इतनी कुशलता एवं सफ़ाईसे दर्शा देते हैं कि सामने वाले आसानी से उन्हें नहीं समझ पाते। लोग उन्हें उसकी वस्तु ही समझने लगते हैं इस प्रकार उसके व्यवहारमें अनेकों व्यक्तित्वों का समावेश हो

जाता है। जिसे विश्लेषण करनेके लिये गंभीर मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुभवकी आवश्यकता है। अतः इनके बहुरूपियेपनकी मनोवृत्तिके कारण उन्हें प्रथम संबंधसे ही विश्वास पात्र मित्र नहीं कहा जा सकता। इस राशिका निवास जलके समीपस्थ स्थानोंमें या बाग बगीचोंमें कहा है बृहज्जातकके टीकाकार लिखते हैं :—

कर्कट कीटक वारिचर, उपवन सरसि निवास।
पुष्ट हृदय वाणी मधुर, सुरपुर नारि विलास॥

अर्थ स्पष्ट है। राशि निवास स्थानका परिणाम प्रथम तो यह है कि जातकका जन्म ही ऐसे स्थानोंमें या इनके निकटवर्ती स्थानोंमें होता है। दूसरे ये अच्छे तैरने वाले, तैरने के शौकीन तथा इन स्थानोंके प्रेमी होकर वहाँ निवास करने वाले होते हैं। इसका प्रभाव यह होता है कि जातकमें प्राकृतिक वस्तुओं एवं सौंदर्यसे प्रेम होता है। यदि आप यह विश्वास करते हैं कि मनुष्योंके मानसिक झुकाव भिन्न तथा व्यक्तिगत होते हैं तो इस जातकको इस राशिके निवास स्थानों—जंगली घाटियों, लताकुंजों, नदी नालोंके स्थान, चंद्रिका, एकांत स्थान, वाटिकाओं, उपवन आदिसे विशेष प्रेम होता है। चंद्रमाकी चाँदनी उसके मस्तिष्कमें प्रकाश उत्पन्न कर देती है, तथा आत्माके सुन्दर गुणों कवित्व, आदर्शवाद कोमलता तथा दार्शनिकता आदिका विकास करती है।

कर्क-भचक्रका चतुर्थ स्थान है, जो संपत्ति, सांसारिक वस्तु आदि का माना जाता है, जिससे ज्ञात होता है कि इसके जातक अपने जीवनमें बहुत संपत्ति प्राप्त करते हैं। इन्हें भूमि, स्थाई संपत्ति, वाहन बाग बगीचे आदिका विशेष प्रेम होता है। इस राशिका स्वामी चन्द्रमा है जो मातृ कारक है। साथ ही चतुर्थ स्थान भी माता का होता है। अतः इस जातकमें जीवन भर मातासे घनिष्ट प्रेम व सम्बन्ध रहता है। वे अपने हृदयका पवित्र-तम प्रेम व उच्चकोटिकी भक्ति माताके चरणों में रखनेका प्रयत्न करते हैं। इतना ही नहीं आजके दूषित वातावरणमें जब वे लोगोंको माताके प्रेम, सम्मान व मातृत्वकी पुण्यमयी पवित्र भावनाकी अवहेलना एवं धृष्टताके साथ दुस्साहस करने का प्रयत्न करते देखते हैं तो उनके हृदयको जो कि कोमल व शीघ्र प्रभावित होने वाला होता है गहरी चोट लगती है। वे इससे विकल होकर अपनी माता की स्नेहमयी गोदमें आश्रय ग्रहण करनेको लालायित हो जाते हैं। इसका एक प्रभाव यह होता है कि उनका घरका प्रेम और भी बढ़ा हुआ रहता है। यात्रा एवं प्रवास के प्रेमी होने परभी वे वास्तविक सुखका अनुभव अपने घर पर ही करते हैं, तथा अपने यात्रा स्थानों से शीघ्रातिशीघ्र लौट आनेकी तीव्र इच्छा प्रकट करते हैं तथा प्रयत्नशील रहते हैं। इनका यह मातृ प्रेम तथा घर एवं घरेलू जीवनका प्रेम जन्म जात ही होताहै। इस कारण उनके स्वयंके हृदय भी मातृत्वकी भावनासे भरे होते हैं, जो उनमें दया, प्रेम, कोमलता तथा स्त्रीत्वके गुण उत्पन्न करती है। क्षमा-शीलता, सहन-शीलता अपने ही लोगोंके लिये होती है।

शरीर की आकृतिमें कद मध्यम, पतला शरीर होता है, विशेषकर बचपनमें दुबले-पतले रहते हैं और बड़े होने पर दृढ़ हो जाते हैं। चेहरा गोल व मोहक, आगे के दाँत चौड़े व मोटे, कभी २ बाहर निकलने वाले, हाथके पंजे व उँगलियाँ बड़ी होती हैं। शरीरका ऊपरी भाग निचले भागसे अधिक लम्बा होता है। ये तेज दौड़ने वाले होते हैं, यद्यपि पाँव कुछ टेढ़े रखते हैं। सामने रुकावट आने पर उसके ऊपरसे

पार करके जानेके बजाय अपनी शर्मीली एवं डरपोक वृत्तिके कारण बचकर रास्ता करलेते हैं (जलके समान)। इसी प्रकार शीघ्र ठंडे व गर्म होने वाले, धैर्य हीन होवे हैं। इन्हें बड़ी जल्दी क्रोध आ जाता है परन्तु शांत भी शीघ्र हो जाता हैं।

इनसे व्यवहार करने वालोंको ध्यान रखना चाहिये कि ये सदा प्रसन्न व आनंदित रहना पसन्द करते हैं, तथा घरेलू आराम व तत्संबन्धी साधन सुविधाओंका विचार रखते हैं। अतः इस सम्बन्धमें उन्हें कष्ट न होने दें। अपने आरामके समयमें बाधक वस्तु या व्यक्तिको वे क्षमा नहीं कर सकते। आरामी जीवके सामने साहस व शरीर को कष्ट देने की बात करना उसे अप्रसन्न कर देता है। उनके सामने तो नाटक, अभिनय, खेल-तमाशे, अच्छा भोजन, तथा जीवनके अन्य ऐश आराम सम्बन्धी रोचक विषयों पर वार्तालाप करना चाहिए। कष्टोंसे उन्हें इतनी घृणा होती है कि वे उन्हें याद तक रखना नहीं चाहते। अतः उनसे उनके कष्टोंके विषयमें बार-बार पूछना अथवा सहानभूमि बताना मूर्खता ही होगी। वे तो धन, परिश्रम व समय तीनोंकी ही मितव्ययता पसन्द करते हैं। एक बात और यह कि इस लग्नके जातकोंको प्राचीन बातों बाप-दादोंके समयकी उन्नति आदि प्रिय होती है। अतः यदि वार्तालापमें उन्हें प्रसन्न रखना है तो जो कुछ वे कहें प्रशंसा करते हुए सुनते जाइये धार्मिक विषयमें वे अंतरुद्देश्योंकी अपेक्षा रुढ़ियों पर ही विशेष ध्यान देते हैं। जीवनमें कठिनाइयों के होते हुए भी सम्मान यश व पद पाते हैं। कारण यह कि व्यवस्था, युक्ति-प्रयुक्ति तथा शासन प्रवन्ध आदिकी उनमें ठीक सी क्षमता होती है।

सप्तमेश शनि होता है जो चन्द्रमाका मित्र नहीं है। अतः जातकको सप्तम स्थान सम्बन्धी पूर्ण सुख नहीं होता यद्यपि वे स्त्रियोंसे बहुत प्रेम रखते हैं। एक या दो-दो स्त्रियाँ तक करते हैं, परन्तु अपने ही स्वभावके कारण प्रेममें सफल नहीं होते।

मण्डेन ज्योतिषमें यह राशि चीन, हालैंड, स्काटलैंड आदि देशों, वेनिस, कलकत्ता, न्यूयार्क आदि शहरों पर शासन करती है। चीनी लोगों में इस राशिके जातकके समान आराम तलबी, सौंदर्यकी उपासना, रूढ़िवादकी कट्टरता (उद्देश्योंको गौण मानते हुए) हालैंड व स्काट-लैंडके लोगोंमें मातृभूमि प्रेम, पूर्वजोंका सम्मान आदि विशेषताएँ पाई जाती हैं। वेनिस नगर सौंदर्यके लिये विश्वमें प्रसिद्ध है। इस सामूहिक विचारसे भी इस राशिका प्रभाव दिखाई देता है। चीनी लोगोंकी सौंदर्य प्रियता-के संबंधमें सभीने सुना होगा कि वे स्त्रियोंके पैरोंको छोटे रखनेके लिये क्या २ प्रयोग करते हैं। स्काटिश मातृभूमि प्रेम वहाँके कवियोंकी कृतिसे ज्ञात हो सकता है।

—धंधा एवं प्रवृत्ति—

कर्क राशिका स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा मन का कारक है, अतः जात मानस प्रवृत्तियोंका कार्य करता है। कर्क जल राशि होने से इसका संबंध जल या जल में उत्पन्न वस्तुओं नमक मोती तरल पदार्थ, औषधियाँ तथा अन्य पेय वस्तुओं के ज्ञान से है अथवा इनका धंधा कराता है। कर्क लग्नके धन स्थानमें राज्य राशि सिंह है अतः इस लग्नका जातक बड़े लोगों, राजाओं, सरदारों आदि से द्रव्य प्राप्त करता है। दशमेश की शुभ स्थिति होने पर इस लग्नका जातक अच्छा नेता, मंत्री या सेनापति तक हो सकता है। कर्क के चतुर्थमें विद्या राशि तुला है। वैसे

२ से ५ तक आध्यात्मिक राशियाँ होती हैं तथा नवम में धार्मिक राशि मीन है। अतः जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली तथा दार्शनिक भी हो सकता है।

इसके अतिरिक्त इस लग्न के जातक प्राकृतिक वस्तुओं का व्यवसाय करने वाले, धर्म के अगुआ, राज्याधिकारी, कमांडर, प्रोफेसर डाक्टर या सर्जन, मैनेजर, मुनीम होते हैं, कोई कोई दया, धर्म आदि विषयों का प्रचार भी करते देखे जाते हैं। धंधा करते समय इस बात का बड़ा ध्यान रखते हैं कि कोई काम ऐसा न बन पड़े जिससे उनकी आजीविका में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न हो। लोभी तथा कृपणता की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। एक ही धंधे में उनका मन नहीं लगता। फेरफार होते रहते हैं।

भाग्योदय एवं शुभ समय —

कर्क लग्न से नवम (अर्थात् भाग्य एवं धर्म) स्थान में धार्मिक जलचर एवं द्विस्वभाव राशि मीन है जो जातक में धर्म प्रेम उत्पन्न करती है। उसकी धार्मिक भावना १६ वर्ष की आयु से जाग्रत हो जाती है व अपने कर्तृत्व की ओर लक्ष्य उत्पन्न होता है। वैसे इसका स्वामी चंद्रमा २४ वें वर्ष से जातक का भाग्योदय आरंभ कर देता है। २८ वर्ष की आयु में आजीविका का संतोष जनक कार्य मिल जाता है। संभवतः वह दो धंधे करता है। कर्क लग्न जातक के लिये मध्य पाराशरीमें कहा है—

भार्गवेन्दु सुतौ पापौ भूसुताङ्गिरसौ शुभौ।
एक एव भवेत्साक्षात् भूसुतो योग कारकः ॥

अर्थात् शुक्र, बुध पाप ग्रह होते हैं। मंगल व गुरु शुभ ग्रह हैं केवल मङ्गल ही राजयोग कारक होता है।

तदनुसार ही ऊपर २८ वें वर्षमें शुभ-भाग्योदय काल कहा गया है। यदि कहीं मंगल गुरुका संयोग हो जाय तो और भी शुभ फल कारक होते हैं। मंगलकी दशा यदि २८ वें वर्षके पूर्व आजावे तो इस अवधि के पूर्वही भाग्योदय हो जाता है। सूर्य यदि शुभ स्थितिमें हो तो आर्थिक लाभ २२ वें में आरंभ कर देता है।

शुभ दशान्तर्दशाः—

ऊपर कहा ही है कि मंगल ही वास्तविक योग-कारक है अतः इसकी महादशा सर्वाधिक योग-कारक होती है। इसकी दशा में सूर्य, गुरु, मंगल, चन्द्रके अन्तर शुभ फल देते हैं। शनिकी शुभ स्थिति हो तो उसका अंतर भी श्वसुराल पक्ष से, साझीदारी से या वाद विवाद से लाभ देता हैं। इसी प्रकार गुरु महादशा में मंगल, चंद्र, गुरु, राहु व शनिकी अन्तर्दशा शुभ होती है। इसी प्रकार राहु में शुक्र, बुध तथा गुरु और केतु में गुरु, मंगल व चन्द्रके अन्तर भी शुभ फल कारक हैं।

अशुभ दशान्तर्दशाः—

शुक्र, बुध अशुभ ग्रह हैं। शनि महादशाका उत्तरार्द्ध अशुभ फल देता है। शुक्रमें मंगल, गुरु सूर्य व चंद्रके अंतर, बुधमें शुक्र, शनि, केतु चंद्रके अंतर कष्ट कारक होते हैं। चंद्रमाकी अशुभ स्थिति (विशेषकर जल राशि या उसके वर्गों में हो तो जलमें डूबनेका भय होता है। लग्न व पंचममें कीट राशि है, षष्ठमें ऊष्ण राशि धन है, अतः मनोवृत्ति कीट के समान होती है। यदि बचपनमें विवाह होगया तो शीघ्र

संतान हो जाती है और न हुई तो गुप्त रीति से पाप प्रवृत्तिमें फँस जाते हैं। अतः बचपनसे ही ठीक प्रकार इनकी चौकसी की आवश्यकता है। शुक्र दशा शरीरके लिये ही चाहे कष्ट कर रहे परन्तु धन स्थाई संपत्ति आदिके संबंधमें फल देती है तथा शिक्षण एवं विद्या प्राप्तिमें सहायक होती है। द्वितीय या द्वादशभावमें स्थिति विशेष शुभ होती है।

भावार्थ रत्नाकरमें कर्क लग्न जातकके लिये निम्न शुभ योगावली दी है :—

(१) मंगल, गुरु एवं चंद्रमा धनभावमें हों, सूर्य शुक्र पंचममें हों तो कर्क लग्न जातक भाग्य-वान् तथा धनवान् हो जाता है।

(२) यदि बुध, शुक्र एवं चंद्रमा लाभभाव गत हों, गुरु लग्नमें हो तथा सूर्य दशममें हो तो जातक एक योग्य, यशस्वी, सच्चरित्र एवं पराक्रमी राजा होता है। बृहज्जातकमें यह योग महा राज योग नामसे कहा गया है। यथा—

कर्किणि लग्ने तटस्थे जीवे,
चंद्रसितज्ञौ राय प्राप्तैः।
मेषगतेऽर्के जातं विन्द्या,
द्विक्रमयुक्तं पृथ्वीनाथम् ॥
(राजयोगाध्याय श्लोक ६)

(३) यदि बुध शुक्र व्यय भाव गत हों तो जातक शुक्र की दशामें राजयोगका आनन्द प्राप्त करता है।

(४) लग्न में गुरु व चंद्रका होना कर्क लग्न जातकके लिये राजयोग कारक है, वह कीर्तिमान व भाग्यशाली हो जाता है।

(५) चंद्र लग्नमें व मंगल मकरमें या शनि तुलामें, या सूर्य मेषमें हो तो भी राजयोग कारक है।

(६) कर्क लग्न जातकके गुरु, बुध लाभगत हों तथा शनि, राहु पंचममें हों तो राहु दशामें गङ्गा स्नानका लाभ पाता है।

अनेकों योग पाये जाते हैं जो राजयोगा-ध्यायोंमें वर्णित हैं परंतु ग्रहोंका बलाबल देखकर फल कहना चाहिये। यहाँ विस्तार भयसे इतने ही दिये जा रहे हैं :—

शरीर पर प्रभाव, रोग एवं मारक विचार :—

इस राशिका प्रभाव काल पुरुषके छाती व पेट पर है। अन्न-प्रणाली (Oesphagus) पर प्रभाव होनेसे इस लग्नके प्राणी इन अंगोंके ही रोगादिकसे पीड़ित होते हैं। निर्बल पाचन-शक्ति, अपच, गेसेज़का उत्पन्न होना, लिवरकी कमजोरीके कारण पीलिया (Jaundice) आदि रोग होते हैं। जल तत्वकी राशि होनेसे शरीरके भिन्न २ भागोंमें जल इकट्ठा होकर जलोदर (Dropsy) आदि रोग होते हैं। इसके अतिरिक्त अंडवृद्धि, मूत्राशय संबंधी रोग, कफ विकार, केंसर, हिस्टी-रिया आदि रोग हो सकते हैं। मंगल लग्नमें हुआ तो जातक चेचक, मोतीझारा व मलेरियासे विशेष पीड़ा पाता रहता है। स्त्रियोंमें रजोदर्शन संबंधी पीड़ायें भी चंद्र मंगलकी अशुभ स्थितिके कारण देखी जाती हैं। क्योंकि बहु प्रजा राशि होनेसे संतानें अधिक होती हैं।

मध्य-पाराशरी में कहा है :—

"निहन्ता कविरन्ये तु पापिनो मारकाह्वयाः"

अर्थात् शुक्र मारक होता है तथा अन्य बुध, शनि आदि पाप ग्रह भी मारक होजाते हैं।

विशेषकर मारक दशान्तर्दशायें निम्न प्रकार जानना चाहिये।

बुध महादशामें शनि, राहु, सूर्य, शुक्र व केतु, शुक्र महादशामें शनि, केतु राहु व बुध, शनिके अंतिम अंतर साथ ही सूर्य दशामें बुध, राहु, गुरु व केतु और राहुमें बुध, केतु शुक्र आदि भी मारकत्व प्राप्त करते हैं।

माताके लिये अशुभ दशान्तर्दशायें:-

सूर्य में शुक्र, शनि, बुध। बुधमें केतु, शुक्र, चंद्र। मंगलमें गुरु बुध, शुक्र मंगल। केतुमें राहु, शनि और मंगल। राहुमें शुक्र, गुरु, शनि तथा मंगल।

पिताके लिये अशुभ दशान्तरदशायें:-

गुरुमें बुध, शुक्र व राहु। राहुमें शनि, शुक्र व बुध। चंद्र व बुधमें शुक्र, राहु और शनि। केतुमें शुक्र व बुध। शुक्रमें राहु, शुक्र व शनिके अंतर कष्टप्रद तथा मारक होते हैं।

भाईके लिये अशुभ:-

शनि में राहु, शुक्र, मंगल व गुरु। राहु में शनि, शुक्र व मंगल और मंगल की स्थिति अशुभ हो तो मंगल में राहु, शुक्र सूर्य, चन्द्र के अंतर अशुभ होते हैं।

पहिले कहा ही है कि शनि चन्द्र के मैत्री न होने से इस लग्न जातक को सप्तम सम्बन्धी सुख उत्तम नहीं होता। विवाह शीघ्र होता है तो शीघ्र ही स्त्री मर जाती है, अथवा फिर विवाह ही देर से होता है। विवाह के लिये गुरु व चन्द्र महादशा में शनि, गुरु, चन्द्र व शुक्र अंतर। राहु और बुध दशा में शनि, चन्द्र, गुरु व शुक्र अंतर। शनि में गुरु, शुक्र, बुध व राहु अन्तर तथा मंगलकी दशा में शुक्र, चन्द्र, शनि कारक होते हैं। स्त्री वियोग के लिये सूर्य में शनि, चन्द्र गुरु व शुक्र तथा केतु में शुक्र, राहु, गुरु व मंगलके अंतर होते हैं। मंगल चतुर्थमें २८वें वर्ष स्त्री का निधन चाहता है। इस लग्न वालेको नीलम धारण करने से स्त्री सुख ठीक रहता है।

हस्ताक्षर

इस लग्नका जातक इसके स्वरूप केकडे के समान ही मिले हुए अक्षर लिखता है। कलम सपाटेसे कागजको छूती हुई चलती है परन्तु कलम को नीचे से व जोर से पकड़ता है। रेखा हमेशा नीचे की ओर जाती है आरंभ के अक्षर कुछ बड़े होते हैं। अनुस्वार ऊंचाई पर लगाता हैं। मात्रायें भी कभी २ तो मस्तक रोक को छूती भी नहीं हैं। विशेष कर ये अक्षरों के दाहिनी ओर ही लगाई जाती हैं। अक्षरों का स्वरूप लहरें लेता हुआ होता है। 'उ' व 'र' की पूंछ अक्षरों के सिर पर से घुमा कर दाहिनी ओर लाकर छोड़ता है। या फिर र की पूंछ को दाहिनी ओर बड़ी लंबी खींच देता है। शब्दों के मस्तक भी घुमाव दार लकीरों से बांधने के शोकीन होते। है एक विशेषता यह होती है कि कागज के आकार के अनुसार ही इनकी लेखनी चलती है।

कर्क लग्नकी स्त्रियाँ

स्त्रियों पर भी ऊपर लिखे अनुसार स्वभाव गुण आदिका तो प्रभाव रहता ही है। परन्तु अपने वर्ग विशेष के अनुसार निम्नगुण अधिक पाये जाते हैं। गुणवान्, धनवान् कामकाजमें निपुण, तेजस्वी सामने वाले पर प्रभाव उत्पन्न करने वाली, पवित्र एवं सच्चरित्र होती हैं। विवाहके पूर्व माता पिता तथा पश्चात् सास

श्वसुरकी सेवा कर सुख पाती हैं। अपने घरोंसे उन्हें प्रेम होता है तथा अपनी प्रशंसा भी उन्हें प्रिय होती है।

इस लग्नकी स्त्रियोंके विषयमें "जातक-तत्व" में त्रिशांशोंके आधार पर प्रकाश डाला गया है कि यदि लग्न मंगलके त्रिशांशमें पड़े तो वेश्या, बुधके त्रिशांशमें पड़े तो सीना, पिरोना तथा अन्य शिल्पादिकी ज्ञाता, गुरुके त्रिशांशमें पड़े तो अनेक गुणों वाली, शुक्रके त्रिशांश में पड़े तो कवि, गायक, चतुर किंतु व्यभिचारिणी और शनिके त्रिशांशमें पड़े तो पतिको मार कर नाश करने वाली होती है। लग्न एवं पंचम दोनों ही स्थानोंमें बहु प्रजा राशि होने से अधिक संतानोंको जन्म देती हैं, तथा इनमें मातृत्व दया, प्रेम आदि गुण विशेष रूपमें रहते हैं। पेट संबंधी सावधानी रखना चाहिये।

निर्बलताएं एवं हित– वचन

प्रशंसाके इच्छुक एवं अल्प-परिश्रमी होने से धोखा खानेका डर रहता है। अतः प्रशंसक एवं खुशामदी लोगोंसे पूरी सावधानी रखना चाहिये। अपना आत्मबल तथा मनोबल बढ़ाकर प्रत्येक कार्यमें श्रद्धा एवं दृढ़ता रखना चाहिये। लज्जा-शीलता तथा कायरपनकी वृत्तिका त्याग करना चाहिये। अन्नप्रणाली, पेट आदि का संबंध इस राशि से विशेष है, अतः गर्मी उत्पन्न करने वाले तथा अपाचक पदार्थोंका सेवन नहीं करना चाहिये स्वादिष्ट एवं गरिष्ठ पदार्थोंका प्रेम कम करके सादा भोजन दाल, रोटी, फल, फूल शाक भाजी अधिकतर लेते रहना चाहिये। रात्रीको सोनेके पूर्व व प्रातः सो कर उठते ही ठंडा पानी पीनेका अभ्यास रखना लाभ कारी रहेगा। घर पर ही पड़े रहने, या दिनमें सोनेका अभ्यास अच्छा नहीं, अतः चलने फिरनेका धंधा करना चाहिये। वातावरणको अनुकूल बना सकनेका अभ्यास तो ठीक है परन्तु अति सबकी बुरी होती है, क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि नकलमें असलकी विस्मृति हो जावे। शुभकार्यमें या सही बात के लिये केंकड़ेकी पकड़ लाभ दे सकती है, परन्तु कुमार्ग एवं असत्यका दुराग्रह वांछनीय नहीं है।

इस लग्न वालेको कर्क, मीन, वृश्चिक, कन्या व वृषभ लग्न वालोंसे संबंधलाभकारी रहता है। आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद व आश्विन मास शुभ होते हैं पौष मास अशुभ होता है। मंगलवार गुरुवार ३,६,१२ तिथियाँ शुभ होती हैं। मंगल की शुभ स्थितिसे अंग्रेजी ६,१८,१६,२७,२६ तारीखें शुभ होती है। २,७,१२ तिथियाँ, बुधवार तथा अनुराधा नक्षत्र निष्फलता कारक होते हैं।

लग्न द्वारा धनका निर्णाय

[ले.–राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र, एल.एम.ए. एण्ड एम.डी.एच.]

प्रत्येक प्राणी अपनी जन्म-पत्रीमें ज्योतिषीसे धनका प्रश्न करता है, किन्तु धन कई श्रेणियों में विभक्त है यह जन्मपत्र द्वारा जाना जा सकता है। सामान्यतया धनकी तीन श्रेणियाँ की गई हैं। (१) वैभव संपन्न जीवन जो अधिक मुद्राके साथ हो (२) मध्यम श्रेणीके प्राणी जिनके पास खाने पहननेको पर्याप्त होता है किन्तु संचय नहीं कर सकते। (३) तीसरे जिनके पास खाने पहननेकी भी कठिनाई है, यह दीन अवस्था तीसरी है। ज्योतिष शास्त्रके अध्ययन और अनुभव द्वारा मनुष्य सही निर्णय पर जा सकता है। इस विषयके निम्नलिखित नियम पाठकोंके लाभार्थ संक्षेपसे स्पष्टतया श्री'स्वाध्याय' की भेंट किये जाते हैं। आशा है ज्योतिष-जगत् तथा पाठकगण इसकी सचाई तक पहुँचेंगे। निम्नानुसार ग्रहोंके कलांश निर्धारित किये हैं। सूर्यकी ३० कलांश, चन्द्रमाकी १६, मंगलकी ६, बुधकी ८, गुरुकी १०, शुक्रकी १२, शनिकी १। सर्व प्रथम लग्नसे नवमेशकी कला लेवें और फिर चन्द्रमासे नवम स्थानके स्वामीकी कला लेवें। दोनोंका योग करें। फिर उसमें बारहका भाग देवें। शेष बचे उतनीही संख्या तक चंद्र लग्न से गिनें। जहाँ संख्या समाप्त हो जाय वहीं प्रधान धन लग्न होगा। यदि धन लग्नमें शुभ ग्रह बैठे हैं तो प्रथम श्रेणीका धनी होगा। यदि एकही शुभग्रह है और वह शुभ और पाप ग्रहों की दृष्टिसे रहित है तो प्रथम श्रेणीसे भी उत्तम धनी होता है। यदि धन लग्नमें नैसर्गिक पाप ग्रह हों (यथा सूर्य, शनि मंगल) तो उस मनुष्यके पास मध्यम श्रेणीका धन नं० २ के अनुसार होगा। यदि पाप ग्रह उच्चका हो तो प्रारंभमें उसके मध्यम श्रेणीका ही धन नहीं होगा किन्तु वृद्धावस्थामें वह महान् धनी होगा। यदि धन लग्नमें शुभ और बलवान पाप ग्रह हों तो उसके उत्तम धन होता है। इसी प्रकार शुभ और पाप ग्रहोंकी दृष्टियोंसे भी फल जानें। धनाप्ति जिन ग्रहोंके द्वारा योगकारक बनी है, उन ग्रहोंकी दशा अंतरदशामें होती है। धन लग्नसे ३। ६। १२। ८ स्थानोंमें बैठने वाले ग्रह धनाप्तिमें बाधक होते हैं। ग्रहोंके बलाबल पर धनस्थितिका सही निर्णय होजाता है।

पञ्चाङ्ग-संशोधन

[लेखक—सिद्धान्त पञ्चानन श्री० पं० केदारनाथजी राजज्यौतिषी]

[इस लेखके विद्वान् लेखक श्रद्धेय श्री ६ पूज्यपाद गुरुवर श्री पं० केदारनाथ जी महाराजका भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञों और खगोलीय यन्त्र-विद्याके तत्त्वदर्शी आचार्योंमें प्रमुख स्थान है। आप जयपुरकी सुप्रसिद्ध राजकीय वेधशाला (Observatory) के अध्यक्ष हैं, इस वेधशालाका जीर्णोद्धार आपहीके तत्त्वावधानमें हुआ है। अब गत वर्षसे आपने नई दिल्ली स्थित वेधशाला (जन्तर-मन्तर) का जीर्णोद्धार कराना प्रारम्भ किया है। गत वर्ष पूनामें जो महाराष्ट्रीय ज्योतिष-सम्मेलन हुआ था उसके सभापति भी आप ही थे। इस लेखमें आपने ज्योतिषियों और धर्म-शास्त्रियोंको एक महत्त्वपूर्ण सामयिक चेतावनी दी है। आशा है सहृदय सहयोगी पञ्चाङ्गकार बन्धु इस लेख पर शान्तस्वान्तेन सम्यक् विचार करके क्रियात्मक रूप देनेका प्रयत्न करेंगे।
—सम्पादक]

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

इस मन्त्रमें चित्रा और पूषा (रेवती) तथा श्रवण और लुब्धक बन्धु ये आमने-सामनेके चार नक्षत्रोंसे सारे आकाशको स्वस्तिदायक कहा है। आज-कल पञ्चाङ्ग-संशोधनमें अयनांश २३ तथा १९के दो पक्ष हैं। दक्षिणमें 'तिलक पञ्चाङ्ग' विशेष मान्य होता जा रहा है। इस पञ्चाङ्गके १९ अयनांश हैं। 'केतकी-पञ्चाङ्ग'के २३ अयनांश हैं। इस मन्त्रसे चित्राके ठीक सामने १८० अंश पर पूषाको माना है। यद्यपि चित्राके ठीक समक्ष कोई नक्षत्र अभी नहीं है। इस ही कारण उस स्थानसे आगे चार अंश पर रेवती (झीटापीशियस) को गणनारम्भ स्थान मानकर १९ अयनांश मानते हैं। किंतु चित्रा पक्षीय केतकी पंचाङ्ग चित्राको १८० अंश पर मान कर २३ अयनांश मानते हैं। ये २३ अयनांश प्राचीन ग्रन्थोंके अयनांशोंके लगभग होनेसे उत्तर भारतके पञ्चाङ्ग २३ अयनांश ही मानते हैं। इन दोनों पक्षोंमें कौनसा पक्ष ठीक है यही विवादका कारण है। और इसी कारण भारतवर्षके विद्वान् इस विषयमें आज ७५ वर्षसे मस्तिष्क लड़ा रहे हैं। गतवर्ष ७ मईसे ९ मई तक पूना में महाराष्ट्र-मण्डलके पञ्चाङ्ग-कर्त्ता तथा फलितज्ञ विद्वानोंकी सभा हुई थी। किंतु कोई निश्चित मार्ग नहीं निकला। वहाँके 'ज्योतिर्विज्ञान' नामके एक गुजराती मासिकमें एक विनोदात्मक बात लिख मारी कि—"हिन्दुस्थानके ज्योतिषका गणनारम्भ स्थान समुद्रमें डूब गया है उसको समुद्रमेंसे निकाल कर बाहर रखनेको विलायतसे एक ज्योतिषी आरहा है।" वास्तवमें देखा जाय तो यह बात किसी अंशमें सत्य है। यहाँ विवादके सिवाय कोई निश्चयात्मक बात पर परस्पर मतभेदके कारण कोई भी बात सर्व

सम्मत स्थिर नहीं होने पाती है। इसका मूल कारण आग्रहके सिवाय कुछ समझमें नहीं आता अस्तु।

इस सम्मेलनमें मेरा भी जाना हुआ था उसमें पञ्चाङ्गोंके एकीकरणका प्रस्ताव था। उस अवसर पर मैंने पञ्चाङ्गोंके विवादको एक ओर रखकर यह कसौटी बनाई थी कि किसी भी पञ्चाङ्गके ग्रहोंमें उसी पञ्चाङ्गके अयनांश, चाहे २३ हों चाहे १६, जोड़ देने पर वेध द्वारा आया हुआ सायनग्रह जो प्रत्यक्ष दीखता है, वह पञ्चाङ्ग-के ग्रह तुल्य आना चाहिये। यदि न आवे तो या तो ग्रह अशुद्ध हैं या अनयांश। इस कसौटी पर कुछ पञ्चाङ्ग ही ठीक उतरते हैं। खासकर हिन्दू विश्वविद्यालयका 'विश्व-पञ्चाङ्ग' जिसमें शनि और गुरु इन दोनोंमें तो ५, ६ अंशोंका अन्तर प्रतीत हो जाता है। काशीके विद्वान लोगोंका इस पर यह उत्तर होता है कि इन ग्रहोंसे फलित ठीक मिल जाता है। यह बात फलितज्ञोंकी गूढ़ बातोंमें से एक है। परंतु गुरु और शनि जब कभी आकाशमें किसी प्रसिद्ध नक्षत्रके पास होते हैं और पञ्चाङ्गमें लिखा हुआ ग्रह कुछ आगे पीछे रहता है तो वहाँ बड़ा विचार होता है। फलित मिलना न मिलना एक बात है, प्रत्यक्ष दृश्य विषय उससे बिलकुल भिन्न है। आशा है इस विषय पर काशीके विद्वान कोई विचार अवश्य करके इस विरोध का कोई मार्ग निकालेंगे। यह एक उदाहरण पञ्चाङ्गों के गणितका है। अतिरिक्त इसके प्रत्यक्ष दक्षिणायन हो जाने पर भी कर्क संक्रान्ति होने तक उत्तरायण ही माना जाता है और शुभ कार्य होते रहते हैं इसको बदलनेका किसीका साहस नहीं।

पञ्चाङ्ग-वादको विशेषतया आगे तक बढ़ानेमें अधिक मास माननेका मतभेद भी मुख्य हो गया है। इस संबंधमें एक प्रस्ताव पूनामें भी किसीने रक्खा था। वह यह था कि "वैदिक काल में उत्तरायणसे ही गणना होती थी और उस गणितमें अधिक मासोंका भी साधन था।" जिस मासमें सूर्य संक्रान्ति न हो वही अधिक मास कहा जाता था। ये संक्रान्तियाँ विषुव संक्रान्ति आदि नामोंसे मानी जाती थीं और वे सायन थीं। यदि आज भी मधु, माधव आदि सौर सायन संक्रान्तियों पर सौर मासोंके नाम प्रचलित किये जायें और इन संक्रान्तियोंकी गणनासे जिस चैत्रादि चान्द्र मासमें सायन संक्रान्ति न हो उसको अधिक मास कहा जाय तो अधिक मासका मतभेद तो सर्वथा निर्मूल हो जाता है। फिर झगड़ा रह जाता है अयनांश का, उसका भी कुछ निरास आगे चल कर फलितके अनुभवसे अपने आप हो जाना संभव है। किन्तु इस प्रस्तावको धर्मशास्त्रका विरोध दिखलाकर पञ्चाङ्ग-कर्ता ज्योतिषियोंने लिखकर पूर्ण विरोध किया और वह आगे होने वाले अखिल भारतवर्षीय ज्योतिष सम्मेलनमें जो संभवतः सं २००८ में हो उसमें रक्खे जाने के लिये और धर्मशास्त्रियोंकी संमति पर छोड़ दिया गया।

यों तो यह पञ्चाङ्ग-वाद ७५ वर्षसे सफल नहीं हो पाया, आगे इसमें कुछ सार निकलेगा यह आशा भी नहीं होती। तथापि ऐसे अवसरों पर विद्वत्समुदायका समागम और परस्पर विचार विनिमय करनेका अवसर अवश्य प्राप्त हो जाता है।

धर्मशास्त्रकी दुहाई देकर आग्रह-ग्रहिल लोग ज्योतिष-शास्त्रकी उन्नतिमें जो बाधायें उपस्थित करते हैं वे बहुत खटकती हैं। वास्तवमें देखा जाय तो धर्मशास्त्र ज्यौतिष सापेक्ष है, न कि ज्यौतिष धर्मशास्त्र सापेक्ष है। ज्योतिषीके बताये

गणित पर धर्मशास्त्री व्रतादि निर्णय करते हैं।

इस सम्बन्धमें ज्यौतिषियों और धर्मशास्त्रियों-को आपसमें मिल जुल कर कोई मार्ग अवश्य निकालना चाहिये। यदि ऐसा न हुआ तो आगे यह कलह कदापि मिटता हुआ नहीं दीखता है। ज्यौतिष प्रत्यक्ष है परन्तु आजकल पञ्चाङ्ग ज्यौतिषियोंका उपजीवन होगया है और यदि किसी लोकविरुद्ध बातको प्रत्यक्ष-वादी ज्योतिषी मान कर पञ्चाङ्ग चलाना चाहता है तो उसके पञ्चाङ्ग की बिक्री न होने से वह पञ्चाङ्ग पड़ा रह जाता है, इस भयसे उसे शुद्ध पञ्चाङ्ग बनानेका साहस ही नहीं होता। मेरे प्रिय शिष्य श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ने विगत ६ वर्षों से स्व० श्री केतकरकी शुद्ध प्रणालीके आधार पर 'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग'का सुन्दर रूपमें सम्पादन करके उत्तर भारत में बड़े साहसका कार्य किया है। आशा है अन्यान्य पञ्चाङ्गकर्ता ज्योतिर्विन्-महानुभाव भी पारस्परिक मतभेद, रागद्वेष, दुराग्रह वा संकुचित स्वार्थको त्यागते हुए शास्त्र शुद्ध मार्गका अवलम्बन करके ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नतिमें सहायक होंगे। आज भारतमें दो सौसे अधिक छोटे बड़े पञ्चाङ्ग छपते हैं, परन्तु उनमें किसीका भी सर्वाङ्ग शुद्ध न होना बड़ी ही लज्जाकी बात है। भविष्यमें पञ्चाङ्गों का एकीकरण अवश्य अपेक्षित है। आशा है इस विषयके सहृदय मार्मिक विद्वान् कुछ निर्णय शीघ्र करेंगे।

तीन मासका पाक्षिक भविष्य

[ले० श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्यः]

आषाढ़ शुक्लपक्षः—

आषाढ़ शु० १५ शनिवारी श्रवण युक्त हो तो जानवरों तथा मनुष्योंमें रोग अधिक हो किसी नामवर मनुष्यकी मृत्यु होती है। आँधी बहुत चले वृक्षोंका पतन, वायुमंडलमें विशेष उपद्रव होते हैं। यदि रात्रिमें कर्कका चन्द्रमा हो तो, वर्षाके कारण मनुष्य पशुओंकी भारी क्षति होती है। राजाओंमें तीव्र मतभेद हो, युद्ध होना सम्भव है।

श्रावण मास—

वदी १ को हवा चले बादल शामके ४ से ६ तक दिखने लगें तो, श्रावण वदी ८ से ११ तक वर्षा अच्छी हो मोटा अनाज मक्का ज्वार बाजरा मोठ मूँग उड़दके भाव सस्ते हों। श्रावण वदी ८ को आकाश साफ दिनके सूर्यास्त समय हो तो गल्ला सस्ता हो, यदि बादल हो तो तेज हो, रात्रि को चन्द्रमा साफ रहे तो रुई चाँदीमें तेजी आवे, बादलोंसे घिरा हो तो मंदा आवे। श्रावण वदी १२ को रोहिणी नक्षत्र हो तो अठारह दिन वर्षा अच्छी होती है। श्रावणमें ५ रविवार पड़े हैं इस लिए वदीमें गल्ला तेज हो, सुदीमें मंदा होय। श्रावण वदी अमावसको रविवार अश्लेषा नक्षत्र हो तो चाँदी तथा रुई पर तेजी आवे राजनैतिक पार्टियोंमें वैमनस्य बढ़े, किसी बड़े व्यक्तिकी मृत्यु हो, वर्षा तथा सर्पोंकी वृद्धिहो, श्रावण सुदी ६ शनिवारको स्वाती नक्षत्र हो तो, भाद्रपदमें उत्तम वर्षाहो, तथा खण्डवृष्टि योग बनता है, इसमें हैजा विसूचिकादि रोगोंका भयहो, बादल बिजलीसे क्षति विशेष सुननेमें आवे। श्रावण सुदी १४ को शनिवार श्रवण नक्षत्र हो तो चाँदी, सोना रुईमें तेजी आवे, शेयर बारदानाके भावोंमें विशेष तेजी समझें।

भाद्रपद मास

भाद्रपद वदी १ को चन्द्रवार हो तो वर्षा अधिक सर्वत्र भूमंडल पर जल ही जल दीखे, नदियों की बाढ़ से भारी क्षति होना संभव है, भाद्रपदमें ५ सोमवार चाँदी, रुई, सोनेमें भारी मंदी लाते हैं, अन्नके भावोंमें सस्ताई आवे, चोर तस्कर लोगों का विनाश हो, भाद्रपद सुदी २ का क्षय हो तो घृत, तिल तैल सस्ते हों भाद्रपद सुदी ५ को शनिवार विशाखा नक्षत्रका अंत, वार प्रवृत्तिके पहिले हो तो, देशमें अनेक संकट कुत्तों व वानरोंके उपद्रव होते हैं। देशमें अनेक नये रोगों का आक्रमण तथा संकट कालीन समय का सामना करना पड़ता है। देशद्रोही लोगोंका उत्पात होना संभव है। भाद्रपद सुदी १५को मंगल वार हो तो वर्षा १४ दिन नहीं होती इसमें गर्मीका प्रकोप, चेचक, हैजा इत्यादि रोगों का आक्रमण होता है। व्यापारमें चाँदी सोना घृत जूट रुई के भावोंमें अचानक तेजी आ जाती है। देश में अशांति का वातावरण रहता हैं प्राणियों को सुख की सामग्रियोंका अभाव होता है।

आश्विन मास

आश्विन वदी १ को बुधवार हो तो नमक,

सीमेन्ट, गुड़, शक्करके बाजारोंमें सस्ताई दिखाता है। यदि आश्विनमें पाँच बुधवार हों तो तिल, तैल, घृत, पाट, चाँदी, सोनाके भाव मंदे होते हैं, केवल रूईकी तेजी पर्य्याप्त होती है। आश्विन सुदी १ को गुरुवार हो तो चाँदीमें तेजी करता है, यदि द्वितीयाके उदयात् में स्वाती नक्षत्र वर्तमान हों तो शेयर्स, बारदाना, काली मिर्च, चांदीके भाव तेज करता है, गल्ला, तिलहनों को मंदा करता है। आश्विन शुक्ला ४ शनिवार का क्षय हो तो, देशमें दुर्भिक्ष, अन्नकी कमी कहीं कहीं होती है, कहीं वर्षा अधिक, प्रचंड वायु से क्षति, बंगाल, कर्नाटक देशोंमें होती हैं। राजपूताना मारवाड़में गर्मी वर्षाका अभाव होनेसे रोगादिकोंका जोर होता है। बालकोंको बीमारी छुआ छूत रोगोंका विशेष जोर होता है। आश्विन शु० १० भृगुवारी हो तो सर्वत्र सुख शांति सर्व प्रकारकी विजय देशमें सुखकी लहरें उठने लगती हैं।

तीन मासका साप्ताहिक भविष्य प्रकाश

[ले०—श्री० पं० गंगाप्रसाद जी ज्यौतिषाचार्यः]

ता० २४ से ३१ जुलाई तक (प्रथम सप्ताह)

तारीख २४ को स्टे० टा० १ बजेसे चाँदी, सोना रूई खरीदो, ता० २६ को डबल बेचो, ता० २८ तक लाभ। सावधान, ता० २४, २५, २८ तेजी की, बाकी मंदी की समझें। ता० २८ को ३ बजे गली लगाकर व्यापार करना लाभ प्रद रहेग। राशि २। ३। ६। ७। ८ को दिल्ली कानपुर बम्बईसे, राशि ४। ८। ६ को हापुड़, आगरा, लश्करसे विशेष लाभ। राशि १०। ११। १२ को गुड़ अलसी शक्कर कपड़े के व्यापारसे अधिक लाभ होगा। खोटी दशा वाले भाग्योदय कारक श्री सूक्तका पाठ करवाके व्यापार करें।

ता० १ से ७ अगस्त तक (द्वितीय सप्ताह)

ता० १ को स्टें० टा० २ बजेसे ३ तक चाँदी सोना रूई बेचो। ता० ५ तक नफा लेकर खरीद-में हो जाओ। अलसी सरसों शक्कर गुड़ एक तरफा मंदी की ओर रहेंगी। घृत, तिल, तेल मंदा ता० २ को वा ३ को बेचनेसे ७ तक लाभ होजा-यगा। चाँदीमें ता० १। २। ३। ६ मंदीकी बाकी तेजीकी समझें, जितनी घटेगी उतनी बढ़ेगी। हर हालतमें नफा छोड़ना नहीं चाहिये। ता० २ ३। ७ को गली लगाकर व्यापार करना लाभ होगा। राशि १। ४। ७। १० को पूर्व उत्तर दिशासे लाभ लॉटरी नया व्यापार कारखाने चालू करनेसे लाभ रहेगा। राशि २। ५। ६। ११ को हापुड़ कानपुर, जोधपुरसे लाभ। राशि ३। ८। १२ को साधारण लाभ। घाटेसे बचने के लिये श्री नवार्णव का पुरश्चरण करनेसे इष्ट सिद्धिकी प्राप्ति होगी। समय बलवान् होजायगा।

ता० ७ से १४ तक (तृतीय सप्ताह)

ता० ७ को स्टें० टा० ४ बजेसे इकतरफा तेजीका कारण बनेगा। कर्कपर शुक्र (सू०श०) का योग बराबर २) घटायेगा और ५) बढ़ायेगा। ता० ७ को १२ से ४ तक चाँदी, सोना, बारदाना रूई खरीदो, ४ दिनमें लाभ। ता० ६ से १४ तक अलसी सरसों तिल तेल घृत लालमिर्च कालीमिर्च पर इकतरफा मंदी नारियल सुपारी खोपराके भावोंमें १०) १५) टके कीमनकी मंदी आवेगी। कपड़ा गर्म व रेशमीके दाम बढ़ जायेंगे अभी से स्टाक करने वाले खरीद कर लेंगे वह दिसम्बरमें द्विगुणा नफा उठा जायेंगे, चाँदी सोना पहिले ता० ७ को खरीद करके ता० ६ को डबल बेच देना वरना ता० १४ को जरूर बेचो। वायदा श्रावण सुदी १५ का रंग दिखा देगा। चाँदीमें १०) १५) की सोनेमें ६) रूईमें १५) २५) की मंदी बराबर आवेगी। राशि १। ६। ७। ८। ६ वाले मनमाना लाभ कमा लेंगे। राशि २। ५। १०। ११ वालोंका आया हुआ नफा हाथसे निकल जायगा बराबर थोड़ेमें सब्र करो। विशेष लाभके लिये रुद्राभिषेक नमक चमकके साथ करानेसे इच्छापूर्ति होजायगी। राशि ३। ४। १२ को विशेष लाभ, तिल तेल शक्कर अलसी सरसों का **स्टाक** बराबर कर देने पर ही होगा। सब राशि वाले नोट करें, गुरु का वृत्त व पुष्पराज की अँगूठी पहनकर चाँदी शेयरर्स रूई फीचरमें लाखों कमा सकते हैं।

ता० १४ से २१ अगस्त तक (चतुर्थ सप्ताह)

इस सप्ताहमें ता० १४ को चाँदी शेयर्स बारदाना घटे भाव खरीदो, अलसी सरसों गुड़ शक्कर बेचो, दो तरफा लाभ हो जायगा । किराना सुपारी नारियल कालीमिर्च लालमिर्चके भाव एकदम गिर जायेंगे, बराबर बेचानका कार्य करना ही लाभ-प्रद रहेगा, ता० १४ । १५ । १८ । १६ तेजीकी बाकी सर्व तारीख मंदी सूचक है। राशि २ । ५ । ६ । ३ उत्तम लाभकारी, दिशा पूर्व उत्तर दक्षिणसे लाभ बम्बई कलकत्ता कानपुर झाँसी दिल्लीसे चाँदी शेयर्स अलसीसे विशेष लाभ । राशि ३ । ४ । ५ । ६ । १० । ११ । १२ को लॉटरी रूई फीचर बारदाना शेयर्ससे उत्तम लाभके लिये वा मंदीका कार्य करनेके लिये शुभ मुहूर्त्त में व्यापार करनेसे वह संपुटित सप्तशतीका प्रयोग उत्तम फलकारी रहेगा, विशेष गली लगानेकी ता० १५ । १६ । १६ अति उत्तम रहेगी ।

ता० २२ से ३१ अगस्त तक (पंचम सप्ताह)

ता० २२ को स्टें० टा० ११ से १ तक चढ़े हुए भावोंमें चाँदी सोना अलसी बेचो, ता० २४ को घटे भाव खरीदो । यहाँ तेजी मंदी बराबर सही पड़ेगी, चाँदीमें ३) ४) घटकर ४) ५) बढ़ जायँगे । अलसी सरसों बारदाना शेयर्सके भाव ता० २४ से तेजीकी ओर जाकर ता० २८ से सम होजायेंगे । कपड़े गर्मके खरीदार बराबर विदेशमें आर्डर ता० २५ अगस्तको भेजें । या संग्रह करें ४ मासमें उत्तम लाभ रहेगा । राशि २ । ३ । ५ । ६ को विशेष लाभ, ४ । ८ । ५ । ११ को साधारण लाभ, उपाय सूर्य की आराधनासे धन की प्राप्ति राजयोग संतानकी वृद्धि, बाकी राशियोंको फल नेष्ट, धन हानि कष्टकारक रहेगा । खर्च विशेष होना पाया जाता है । शक्कर घी गुड़ के व्यापारी स्टाक रखें नहीं ।

ता० १ से ७ सितम्बर तक (छठा सप्ताह)

ता० १ को स्टें० टा० १२ बजे चाँदी सोना रूई कपड़ा संग्रह करो । २४ घण्टे में ही तेजीका रंग आजायगा, सावधान नफेको संभालकर लेना ही व्यापारीका भाग्य है । इस ससप्ताहमें सफेद वस्तु चाँदी सोना रूई बारदाना तेजीकी ओर गुड़ शक्कर लालमिर्च काली मिर्च किराना मंदीकी ओर चलेंगे ता० १ । २ । ६ तेजी बाकी मंदी समझें । व्यापार का सुधार बराबर ऊँचे भावों में बेचने का है । पकड़कर बैठना ही घाटे का कारण होगा । प्रायः सर्व राशि वाले अपने २ व्यवसायमें घाटा उठायेंगे, अधिक खर्च बीमारी सबके पीछे रहेगी । इस सप्ताहमें ईश्वर चिंतन व साधारण व्यापार गली लगाकर करने से उत्तम लाभ रहेगा ।

ता० ७ से १५ सितम्बर तक (सातवाँ सप्ताह)

ता० ७ को स्टें० टा० २ बजे बेस्ट मन्दीमें चाँदी, सोना, बारदाना व रुई खरीदो १५ दिन तक लाभ हो जायगा । अरहर, मसूर, अलसी. सरसों, तिल तेल पर्याप्त मंदीकी ओर रहेंगे । जौ, चना, खलीका भाव तेज रहेगा । भूसी भूसा लकड़ी पत्थर के संग्रह करने वाले लाभ उठायेंगे । विशेष कन्या, धन, मीन राशि वालोंको राज्यसे संकट व्यापार में हानि बंधन योग लागू होंगे । श्री बजरंगबली की आराधना करनेसे छुटकारा मिलेगा, राशिः ३।४।१०।१२ को अनायास विशेष लाभ । रुई फीचर लॉटरीके नम्बर अपनी नामकी पंक्तिसे हासिल करें, ७ दिनमें मनमाना धन मिल जायगा । विशेष अनायास प्राप्तिके लिये ऋण विनाश के लिये सिद्धि विनायक प्रयोग करना चाहिये ।

ता० १५ से २२ सितम्बर तक (आठवाँ सप्ताह)

इस सप्ताह में कन्या का शनि आरहा है यह आते ही तेजी के व्यापार को एकदम रसातल को लेजायगा बाजार पानी-पानी मंदी का बोल-बाला एक मासके भीतर बता देगा कन्ट्रोल रूपी हाथी का बन्धन खोल देगा, कई वस्तुएं स्वतन्त्र भावों से बिकने लग जाएंगी। राशि ६।४।१२।३ के लिये भारी हानि का द्योतक हैं। सर्वस्व हानि कारक समझें। शनिदेव की शान्तिके लिये बिना छेद का नीलम धारण कर लेनेसे उत्तम लाभ होगा संकट दूर होजाएँगे। नीलम तिथि ८।१३ शनिवार अनुराधा नक्षत्रमें धारण किया जावे पहिले ३ दिन ट्राई लेकर शुभ-अशुभका निर्णय करना चतुरों का कार्य होगा। बाद में वेदोक्त प्रतिष्ठा कराकर अँगूठी में धारण करनेसे पर्याप्त लाभ करा देगा। अन्य राशि वाले श्रावणमें शिव पूजन दूध की मिश्रित धारासे करने वाले व्यापारमें अधिक लाभ उठावेंगे हानिसे बराबर बचते रहेंगे।

ता० २२ से ३० सितम्बर तक (नवम सप्ताह)

ता० २२ को स्टे० टा० १२ बजे चाँदी सोना रुई खरीदो। इस सप्ताहमें प्रायः सर्व वस्तुओं पर तेजी आ जायगी। शनि सूर्य का योग कन्यागत गिरे हुए भावों को सुधारता है। ता० २२, २५, २६, ६८ बराबर तेजी की रहेगी। ता० २३, २७ ३० प्रायः मंदीकी रहेगी। यहाँ जो घटा कि संग्रह करनेका चांस होगा कार्तिक तक अच्छा मुनाफा हो जायगा। अलसी, सरसों बारदाना शेयर्स के भावोंमें अचानक ता० २५ से तेजी आजायगी। कपड़ा गर्म व रेशमी के भावों में ४, ६ टकेकी तेजी मालूम देगी ग्रहयोगसे इस सप्ताहमें कई वस्तुओं से कन्ट्रोल हटनेकी संभावना होगी। राशि १/५/६/११ को उत्तम लाभ सर्विस व व्यापारसे होगा, ३/४/६/१०/१२ राशि वालों को आर्थिक कष्ट व राजकीय संकट प्राप्त होगा। व्यापारमें हानि संभव है। कल्याणके लिये संकट नाशन श्री महावीर की आराधना करना शुभ है।

ता० १ अक्टूबरसे ७ तक दसवाँ सप्ताह

ता० ३ को पंचग्रही योग कन्यामें आनेसे बाजारोंमें तहलका राजनैतिक संस्थाओंमें तीव्र मतभेद बढ़ेगा। वायदेके व्यापारों पर अंकुश कायम होगा। तेजीकी सीमा प्रायः सर्व वस्तुओं के भावोंकी बाँधणी होना पाया जाता है। स्पेशल रुख ता० २ को चाँदी सोना खरीदो, ता० ५ को डबल बेचो ता० ७ तक नफा होजायगा। रूई सम घटे भाव ता० ४ से ५ तक खरीदो आगेके सप्ताहमें लाभ। शेयर्स ताता डिफर्ड आयरन अलसी सरसों मंदी. ता० ३ को बेचो १० दिनमें लाभ। कालीमिर्च लालमिर्च नोरियाँ सनकी बनी हुई चीजें बारदाना बानके भावोंमें ता० ५ से तेजीका वातावरण रहेगा राशि ५। ८ के सिवाय सर्व राशिवालोंको नफा मिलेगा। सिंह और धनुराशि व्यापार बिना विचारे न करें।

ता० ७ से १५ अक्टूबर तक ग्यारहवाँ सप्ताह

इस सप्ताहमें ता० ११ को सप्तग्रही योग बना है इसका असर मारकेटोंमें इकतरफा तेजी चलेगी, ता० ७ को स्टें० टा० १२ से १ तक चाँदी सोना रूई बारदाना खरीदो। ता० १५ तक मनमाना धन मिल जायगा, चाँदीमें १५) २०) सोनेमें १०) रूईमें २५) ३०) बारदानेमें १०) १५) बढ़नेके योग हैं। इस मासमें भाग्यकी परीक्षा है, खोटी दशा वाले बजाय लाभके उल्टे हानि देंगे, विशेष-रूई फीचरके चांस अनायास धन प्राप्तिके कारण बनेंगे। विशेष राशि

७। ८। ११। ३। ४ वाले तीन दिनमें तीन लाख कमा सकेंगे। अमरीकन कॉटनके भाव तीन दिनमें लगातार ७४ की घटा बढ़ी करेंगे, विशेष पत्र डालकर पूँछ सकते हैं। ।=) के टिकट भेजने पर फ्री राय दी जा सकती है। चाँदीका रंग १८०) १६०) का चढ़ाव उतार होना पाया जाता है।

ता० १५ से २० अक्टूबर तक (१२वाँ सप्ताह)

इस सप्ताहके ग्रह योग व्यापारमें नवीन क्रांति, उत्पन्न करनेवाले हैं, भारत व पाकिस्तानके ग्रह योग व्यापार समझौता को विशेष महत्त्व देने वाले हैं। इस कारण चाँदी, सोना, रूई, "स्टील" बारदाना जूटके भाव पहिले एक-एक दिनमें ऊँचे जाकर हिमालय की चोटी पर पहुँच कर एक दम गिर जायेंगे। चाँदी, सोना, रूई, पहले ता० १५ को खरीद करके ता० २० को डबले बेचो। नवम्बर तक दो तरफा लाभ हो जायगा। सावधान ता० १६, १७,१८, के भावों पर विशेष ध्यान रखा जावे बाजार किन्हीं कारणोंसे तेजीमें न आवे तो फौरन ता० १७ को डबल बेचो, मंदी अवश्य ही मालदार बना देगी किन्तु पहिले ता० १४, १५ को खरीदका काम करना जरूरी समझें, तेजी के बाद ही मंदीको मौका मिल सकेगा। ता० १७ को शेयर्स, बारदाना, अलसी कालीमिर्च-लालमिर्च तारामीरा बेचना ठीक है। ता ० ३१ अक्टूबर तक मंदी अवश्य ही आ जायगी। राशिः ६।५।७।८।६।१२ वालोंको इस सप्ताह में व्यापारसे विशेष लाभ, राशि. १।२।३।४।१०।११ वालोंको परिश्रमका फल ही प्राप्त होगा। तूफानी तेजी मंदी अक्टूबरमें ऐसी समझें जैसी १६४६ के जुलाई अगस्तमें चली थी वैसे ग्रह योग है। भविष्य प्रकाश मासिक स्पेशल रिपोर्ट दैनिक टकेवार सितम्बर अक्टूबर की श्रीस्वाध्यायके ग्राहक आधे मूल्यमें अवश्य प्राप्त कर लेवें।

व्यापार का अनुभूत भविष्य

(ले०:—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिष रत्न)

द्वि० आषाढ़ शुक्ल पक्ष

द्वि० आषाढ़ सुदी (शुक्ल पक्ष) में रूईमें ५) ६), चांदी २) ३), सोना १) २) सूत, सण, गुड़, मूंगफलीमें १॥) २) के मध्य ऊँचे नीचेमें भाव चलेंगे। मंदीमें खरीदनेका चांस है। आषाढ़ सुदी चतुर्दशीको सायंकाल पूर्णिमा है उस दिन शुक्रवार है। यदि उस दिन रात्रिको बादल गर्जे तो बहुत सुन्दर समय और सुवृष्टि होवें, यदि रात्रि निर्मल रहे तो कुसमय और दुष्काल पड़े।

आसाढ़ै सुदी पूनम बादल गाज है।
होत समा अति घना सकल जलराज है।
जे निर्मल हुई रात समान जानिये।
काल परै सब ठौरहि एम बखानिये॥

वायु परीक्षा

आषाढ़ सुदी चतुर्दशी शुक्रवारको सायंकाल पूर्व की वायु चले तो अन्नकी उत्पत्ति सुन्दर और प्रजा सुखी, अग्नि कोणकी वायु चले तो अना-वृष्टि और दुर्भिक्षहो, दक्षिण दिशा की वायु चले

तो दक्षिण में युद्ध विग्रहसे योद्धा गणों की मृत्यु हो, नैऋत्य कोणकी वायु चले तो जलकी एक बूँद भी समयानुकूल न पड़े जिसके कारण प्रजा-जन भूखे मरें, पश्चिम दिशा की वायु चले तो समय मध्यम होवे, यदि वायव्य कोणकी वायु चले तो टिड्डी दल तथा चूहे विशेष रूपसे फसल की हानि करें। उत्तर दिशा और ईशान कोणकी वायु चले तो संसारमें सुभिक्ष और प्रजा सानन्द सुखपूर्वक रहे। यदि किसी भी ओरकी वायु न हो और ध्वजा निश्चल खड़ी रहे तो समस्त भूमण्डल पर अनेक प्रकारके कष्ट व्यापें।

सौर श्रवणमास

पूर्व और उत्तरमें कई प्रकार के उपद्रव हों। मध्य देशमें खड़ी फसल की हानि हो, प्रजामें ज्वर अतिसार और कई प्रकारके संक्रामक रोग फैलें। वायुका वेग अधिक रहे, कहीं २ मूसला-धार बर्षा होनेके कारण प्रजा घबरा उठे। सोना चाँदी आदि धातु, गेहूँ चने आदि धान्य, रूई सूत कपड़ादि पदार्थ, गुड़ादि रस तिल मूँगफली एरंडा आदि स्निग्ध पदार्थ तथा रेलवे स्लीपर्स और शालकी लकड़ी व फरनीचर के भाव तेज होजावें।

चांदीमें ५) ७) सोना २) ३) रूई १०) १५) सूत सण मूँगफली गुड़में १।।) २) के मध्य ऊँचे नीचेमें बाजार भाव चलें।

सौर भाद्रपद मास (सिंह संक्रान्ति)

१७ अगस्तसे १६ सितम्बर तकः—

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे यह मास अधिक शुभ नहीं है। अग्निकोण तथा दक्षिण दिशामें कई प्रकारके उपद्रव होते दृष्टिगोचर होंगे। पश्चिमके देशोंमें युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होवे। मारवाड़ आदि देशोंमें वर्षाकी खैंच और कई प्रकारके उपद्रव होवें।

कई स्थानोंपर वर्षा अधिक हो जानेके कारण रेलवे लाइन व घरोंको भय है। सोना चाँदी आदि धातु गेहूँ चने चावल ज्वार आदि धान्य गुड़ खाँड आदि रस, सरसों मूँगफली एरंडादि स्निग्ध पदार्थ कपास रूई सूत सण ऊनी तथा रेशमी वस्त्र हल्दी नारियल केशर जीरा मजीठ सुपारी आदि किरानेकी वस्तुओंका भाव तेज रहे। घृतका भाव मंदा हो। कर्क संक्रान्तिसे सिंह संक्रान्ति पांचवें बार और छठे नक्षत्रमें होनेके कारण अन्नका भाव अत्यन्त मँहगा होगा सिंह राशिमें सूर्य जानेके कारण सर्व प्रकारके धान्य तिल तेल हल्दी तथा गुड़ खाँड आदि रसोंका भाव तेज रहे। सिंह संक्रान्तिके दिन गुरुवार होनेके कारण गवादि पशुओं की वृद्धि घृतका भाव मन्दा किन्तु गुड़ तथा तैलादिका भाव तेज होवे। भाद्रपदकी कृष्ण अमावस्याको सूर्य चन्द्र शुक्र शनिका एक राशिपर योग हो रहा है जिसके कारण पृथ्वी रुधिर व जलसे प्लावित हो जावे।

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।

राशिफल—मेष राशि वालोंको रोगोत्पत्ति, वृष राशि वालोंको राज्यभय, मिथुनराशि वालोंको सुख, कर्कराशि वालोंको लाभ, सिंहराशि वालोंको शोक व चिन्ता कारक, कन्याराशि वालोंको उत्तम भोजन प्राप्ति, तुला राशि वालोंको धन नाश, वृश्चिक राशि वालोंको धनलाभ, धनु राशि वालोंको उदर रोग, मकर राशि वालोंको कार्यनाश, कुम्भ राशि वालोंको वित्त लाभ, मीन राशि वालोंको धन तथा स्त्री-सुख कारक है।

नक्षत्र वश फल—पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद रेवती, अश्विनी, भरणी कृत्तिका नक्षत्र वालोंको

वस्त्र सुख तथा कपड़ेके व्यापारियों को लाभ। रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा नक्षत्र वालोंको हानि हो। पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र वालोंको अधिक धन लाभ। हस्त चित्रा स्वाति नक्षत्र वालोको प्रवास विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र वालोंको सुखोपभोग। श्रवण धनिष्ठा शतभिषा नक्षत्र वालोंको रोगादिकी पीड़ा हो।

साराँश:—शुक्ल पक्षमें रुईमें १५) २०) चाँदी ५) ७) सोना ३) ४) गुड़ २) २।।) के मध्य ऊँचे नीचेमें भाव बाजार चले।

साराँश:—कृष्ण पक्षमें रुईमें १०) १५) चाँदी ४) ५) सोना २) २।।) गुड़ खाँड़ तेल, सरसों, सूत, सण, मूंगफलीमें १।।) २) के मध्य ऊँचे नीचेमें बाजार भाव रहें।

सौर आश्विनमास (कन्या संक्रान्ति)—

[ता० १७ सितम्बरसे १६ अक्टूबर]:—

यह मास स्वास्थ्य की दृष्टिसे हानिकारक ही है। प्रकृति प्रकोप अतिवृष्टि अनावृष्टि अग्निकाण्ड खानोंमें विस्फोट तथा वायुके अधिक वेग से कई प्रान्तोंमें जन-धनकी हानि होगी।

राजपूताना गुजरात काठियावाड़, बम्बई, सौराष्ट्रमें बहुत वर्षा होवे। खेतियोंकी हानि, किसानोंको कष्ट। सोना, चाँदी, लोहा आदि धातु, गेहूँ चने, चावल आदि धान्य गुड़ खाँड़, नमक आदि रस, रुई कपास, नारियल आदि फल, मंजीठ कुसंभा आदि लाल द्रव्य, तिल सरसों, एरंडादि तैलकी वस्तु, हल्दी जीरा, कालीमिर्चे, चन्दन, आदि किराना, पदार्थोंका भाव तेज होवे। बिजलीका सामान तथा मोटरों का सामान स्टील व शालकी लकड़ी और फरनीचरका भाव तेजी पर जावे। कपड़ेकी ग्राहकी अधिक बढ़े तथा कपड़े और सूतका भाव तेजीकी ओर चल पड़े।

कन्या संक्रान्ति फल :—

आश्विनकी संक्रान्ति महीन्द्र मण्डलमें लगती है उस दिन रविवार भी है अतः सर्व प्रकारके धान्य और जलमें उत्पन्न होने वाले मोती आदि रत्नोंका भाव तेज हो। सिंह संक्रान्तिसे कन्या संक्रान्ति चौथे बार और पाँचवें नक्षत्रमें होनेके कारण राजा तथा प्रजामें भय व्यापे।

कन्या राशिस्थ शनिका फल

१६ सितम्बरको कन्या राशिमें शनिश्चर आ रहा है अतः राजाओंका नाश पृथ्वी रुधिरसे पूरित हो महावृष्टि धान्यनाश, पशुओंको पीड़ा हो।

मिथुन स्त्री धनुर्मीन राशौ मन्दः समाश्रितः
तदाभूपा विनश्यन्ति पृथ्वी शोणित पूरिता ॥
मघाच पूर्वा फाल्गुन्यां तथाचोत्तर फाल्गुनी।
महावृष्टिर्धान्य नाशो पशुपीड़ा प्रजायते ॥

शनि बस ही कन्याके गेह।
ताको फल तुम जानो एह ॥
नव कोटी मारू बिललाई।
होइ उपद्रव छति नहीं थाई ॥

लखु हस्त चित्रा उत्तरा है फाल्गुनी जिस नास।
जे शनिश्चर आइ इनमें परत उत्तर आश ॥
कारु अरु कश्मीर मथुरा गजनी केदार।
मंडला नैपाल खस है जानत हि विचार ॥
कह्यौ म्लेच्छ देशहि और लखु खुरसान।
है हिमाश्रय ग्यारमों इह उत्तर दिस ठान ॥
परत इनमें दृष्टि शनिकी वाइ ग्यारो ठौर।
नास उत्तर दिस बखानी कहे मेघन और ॥

आश्विन वदी अमावसको सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि, केतु यह छः ग्रह इकट्ठे हो रहे हैं अतः यह गोल योगके कारक हैं जिसके कारण राजाओंका नाश, पृथ्वी तपायमान हो जिसके कारण कई स्थानों पर नदियोंके सोत सूख जावें बड़े बड़े धनाढ्य कङ्गाल बन जावें, माता पुत्रोंको छोड़ देवें, दो विरोधी शक्तियोंका आपसी युद्ध हो जिससे अधिक हानि हो, कई स्थानोंपर अग्निदाह हो, जन्तुओंकी पीड़ा मन्त्रियोंका मरण, पट्टराजका विनाश, कई स्थानों पर धूम केतुओंका उदय हो, अकालमें ही वृक्षोंको फल फूल लगें, ऋतुओंका विपर्यय हो देवध्वंस रजपात, रक्तवृष्टि आदि अनेकों उपद्रव हों।

राशिफल——मेष राशि वालोंको वित्त-लाभ, वृष राशि वालोंको धन तथा स्त्री सुख, मिथुन राशि वालोंको रोगोत्पत्ति, कर्कराशि वालोंको राज्यभय, सिंह राशि वालोंको सुख हो, कन्याराशि वालोंको लाभ, तुलाराशि वालोंको शोक व चिन्ता कारक, वृश्चिक राशि वालोंको उत्तम भोजन प्राप्ति, धनु राशि वालोंको धन नाश, मकर राशि वालोंको उदर रोग कारक, मीन राशि वालोंके कार्योंकी हानियाँ हों

नक्षत्र वश फल विचार——उत्तराभाद्रपद रेवती अश्विनी नक्षत्र वालोंको रोगादिकी पीड़ा भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, अर्द्रा पुनर्वसु नक्षत्र वालोंको वस्त्र सुख तथा कपड़ेके व्यापारियोंको लाभ। पुष्य, अश्लेषा, मघा नक्षत्र वालों को हानिकारक। पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाषा नक्षत्र वालोंको बहुत धनका लाभ। अनुराधा ज्येष्ठा मूल नक्षत्र वालोंको प्रवास। पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र वालोंको सुखोपभोग मिले।

भादोंसुदी का सारांश——इस पक्षमें रूई १५) २०) चाँदी ७) ८) सोना ३) ४) गुड़ादि १॥) २) के मध्य ऊँचे नीचेमें चलें।

आसोज वदी का सारांश——इस पक्षमें रूईमें १०, १५, चाँदी ५) ७) सोना २) ३) गुड़ मूँगफली सण सरसों सूत में १॥) २) के मध्य ऊँचे नीचे बाजार चलेंगे।

आसोज सुदीका सारांश——इस पक्षमें रूईमें ५) ७) चाँदी ३) ४) सोना १) २) गुड़ १॥) २) के मध्य रहें।

वर्षा विचार——यदि चार सितम्बरको सायंकाल वर्षा हो जावे तो १२ दिन जल खूब बरसे। २६ जुलाईसे ६ अगस्त तक वर्षाकारक योग हैं। २०, २१, २२ अगस्त दुर्दिन सिद्ध होंगे। २३ अगस्तसे ५ सितम्बर तक वर्षाकारक है। १६, १७, १८ सितम्बर दुर्दिन सिद्ध होवें।

व्यापार रुख

प्रत्येक वस्तुकी साप्ताहिक तेजी मंदी

ले० ज्यो० आ० श्री गणेश विद्यासागर "दैवज्ञ"

ता० २४ से ३० जुलाई पर्यन्त

चन्द्र देवकी गति विधि अनुसार यहाँ थोड़ां मंदी का झटका आयेगा इस आये हुए मंदीके २४-२५ तारीखमें आप माल खरीद करें। यहाँ चाँदी, शेयर, कालीमिर्च, किराणा

विलायती सामान कुछ मंदीमें आकर ता० २६ से तेजीमें पड़ जायेंगे हम भी देखें आपको किस प्रकार नुकसान उठाना पड़ता है। यहाँ सिवा तेजीके मंदी का मामूली झटका दिखाई देगा उस से घबराना नहीं।

ता० ३१ जुलाई से ६ अगस्त तक

ता० ३० जुलाईको सायंकाल मंदीकी हवा सुनाई देगी और ता० १ अगस्त तक आये उछालेमें मालका बेचाण रखना, लेकिन नफा हाथों हाथ लेते रहना, यहाँ चाँदी २॥) ३) सुवर्ण १) १॥) रूई ७) १०) शेयर १५) २०, कालीमिंच ८) १०) अलसी सरसों १) १॥) मूँगफली १॥) २) का अचानक झटका खाये। ता० २-३ को मार्केट दोनों तरफ चलेंगे घटे भावोंमें खरीद माल पोते रखना। ता० ४ से ६ तक अच्छा उछाला हर वस्तु मात्रमें आयेगा और जितना घटेगा उससे द्विगुण रूपमें बढ़ेगा। यदि आप उचित सलाह पूछते हैं तो अपनी जन्म कुंडली भेजो वार्षिक (अचूक चांस) के ग्राहक "श्रीस्वाध्याय" के बन जाइये।

ता० ७ से १३ अगस्त तक

इस सप्ताहमें ग्रहोंकी परिस्थिति बड़ी विचित्र है। व्यापारी और सटोरिये दोनोंमें घमासान लेवा बेची चलेगी। इस सप्ताहमें माथे पौते रखकर सोना मामूली काम नहीं, छोटे व्यापारी होशियार रहें किसी बड़े सटोरिये को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। इस समय वह व्यापारी जीतमें रहेगा जो वार्षिक चाँसोंकी फीस २५) और अपनी जन्मकुंडली "श्रीस्वाध्याय" में भेजकर ग्राहक बन गया है। देखो गताङ्क वसंताङ्क स्वाध्यायमें ता० २ से ८ तक तेजीका योग संकेत कर चुके थे इस चांस में हमारे स्थाई ग्राहकों ने अच्छा पैसा कमाया है वहुतसे सम्मान पत्र एकत्रित हो रहे हैं।

ता० १४ से २० अगस्त तक

मंगल को चंद्र दर्शन, बुध केतु नक्षत्र युति, सिंह पर सूर्य देवने सवारीकी है, हम यहाँ पर आपको उचित संकेत करते हैं कि, ता० १४-१५ को बाजार जिधर जाये जाने दो। ता० १६ को प्रातः माल खरीद लो, यहाँ तेजीके आँकड़े आपको अवश्य मिलेंगे। चाँदी ३) ३॥) सुवर्ण १) १॥) कालीमिंच, लौंग, रूई, अलसी तिल, जीरा, पारा, धनियां हर वस्तु मात्रमें २ दिनकी तेजी आकर रहेगी।

ता० २१ से २७ अगस्त तक

यहां शनि केतुकी नक्षत्र युति होगी। पहिले भरणी नक्षत्र मेष राशि पर २२ नवंबर १८८२ में हुई थी उस समय सोना १६॥) चाँदी १०६।) थी थोड़े रूपमें तेजी चली। दूसरी ता० २८ जुलाई सन् १८६३में चित्रा नक्षत्र कन्या राशि पर युति हुई उस समय सोना २४॥) चाँदी १०१॥) थी करीब पाँच दिन अच्छी तेजी चली। फिर ता० ११ फरवरी सन् १६०५ में कुंभ राशि पर चाँदी ७५≈) सुवर्ण २४) उस समय शनि अस्त था और सूर्य केतूकी युति भारी मंदीका योग था। इस कारण भाव अच्छे मंदीमें चले, चाँदी ६८) बन गई लेकिन सुवर्ण बहुत कम मंदा होकर संभल गया। फिर ता० ६ जुलाई १६१६ में कर्क राशि पर दोनों महारथी मिले उस समय चाँदी ८७≈) सुवर्ण २७) के भाव थे। उस समय अच्छी तेजी चली। चाँदी १०१) सुवर्ण २६) हो गया। तत्पश्चात् ता० १५ सितम्बर १६२७ में एकत्र वृश्चिक राशि पर हुए उस समय चाँदी ५७॥ =) सुवर्ण २१॥) था फिर चाँदी ६३) सोना २२) होगया। ता० ३० अप्रेल १६३६ में फिर इन दोनोंका संपर्क मेष राशि

पर हुआ उस समय चाँदी ५२।=) सुवर्ण ३७) था उस समय सूर्य राहु का वेध मंदी कारक तथा शनि का उदय होना यहाँ मंदा, इन दो योगों के आगे तेजी टिक नहीं सकी और बाजारमें चाँदी ४४) सुवर्ण ३७) ही बना रहा। अब ता० २३ अगस्त १६५० को आया है। इस समय अन्य योग चालू है। उनका क्या प्रभाव पड़ेगा चाँदी सुवर्णमें किस प्रकार का तूफान आयेगा यह जानना हो तो श्री स्वाध्यायके दशम वर्षका मूल्य ४) मनीआर्डरसे सोलन भेजकर मनीआर्डरकी रसीद नम्बर हमें लिखकर जवाबी कार्ड द्वारा हमसे पत्र व्यवहार करें।

ता० २८ अगस्त से ३ सितंबर तक

नैपच्यून केतु बुधकी युति होना मंगल का नक्षत्र परिवर्तन इत्यादि योगों द्वारा ज्योतिष गणनानुसार भाव दोनों तरफ चक्कर लगावेंगे, घटेंगे कम और बढ़ेंगे अधिक। अब आपको हम संकेत कर रहे हैं कि घटे भाव खरीद करो और चाँदी ३) ३॥) जहाँ बढ़ जाय वहीं नफा ले लो फिर १॥) २) घटने पर माल पकड़लो और उँचे भावोंमें बेचाण करदो।

ता० ४ से १० सितम्बर तक

यहाँ गुरु, शुक्र, चंद्रके योगसंयोग आपको अकस्मात मंदीकी सूचना कर रहे हैं। आये उछाले मालका बेचाण ता० ५ से चालू करना हर वस्तुमें मंदी दिखाई देगी यहाँ रूई २०) २५) शेयर्स ३५) ४०) कालीमिंच २५) ३०) चाँदी ४) ४॥) सुवर्ण एरंडा २) २॥) सरसों अलसी १॥) २) तिल ॥।) १) किराणा विलायती सामान, सबमें अपनी २ शक्ति अनुसार मंदीके वातावरण रहेंगे, लेकिन बेचकर बेफिक्र होना भी खतरे से खाली नहीं है। होशियार व्यपारीको इशारा ही काफी होता है।

ता० ११ से १६ सितंबर तक

अब तक जो आपको मार्केट मंदे दिखाई दिये यह किरतबी चीज थी, बाजार बाफ्सि पलट कर अपने लेविल पर आगये हैं। यदि आपने सौदा नहीं पलटा है तो ता० १२ को अवश्य पलटलें, हमको हर वस्तु मात्रमें अचानक तेजीका तूफान आता हुवा दिखाई देता है। रात्रिको बंद मार्केट जो होगा उससे दूसरे दिन खुलनेमें अच्छा तेज खुलेगा। एक ही चाँस आपको मालदार बना देगा।

ता० १७ से २३ सितंबर तक

कन्या राशि पर शनि नैपच्यून केतुकी युति होना ही मार्केटमें भारी उथल पुथल मचा देगा। पहिले जब २ युतियाँ इन दोनों की हुई उस समय सट्टा भी नहीं चलता था लेकिन बाजारोंमें तहलका मच गया था। नेक सलाह यह है कि ता० १६-२०के नजराने लगादो, जिधर बाजार चले उधरही अपना भी मुँह फेरलो। यदि ग्रह गणना सत्य है तो आपको इन दो दिनमें ही अच्छा लाभ होजायेगा।

ता० २४ से ३० सितंबर तक

ता० २३-२४ को जो मंदे भाव रहे उनमें उछल कर माल पौते कर डालिये, यहाँ सरकार की तरफसे रोला आयेगा उस रोलेमें चाँदी ३॥) या ५) सुवर्ण २) २॥) अलसी सरसों

[शेष ६६ पृष्ठ पर देखिये]

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' से]

आषाढ़ शुक्ला	१० सोमवार	ता० २४ जुलाई	श्रीस्वाध्यायसदन स्थापनादिवस।
	११ मंगलवार	ता० २५ जुलाई	देवशयनी एकादशी व्रत चतुर्मासारम्भ।
	१२ बुधवार	ता० २६ ,,	प्रदोष व्रत।
	१४ शुक्रवार	ता० २८ ,,	सत्यव्रत वायुपरीक्षा ध्वजारोपण।
	१५ शनिवार	ता० २९ ,,	श्रीगुरु पूर्णिमा व्यासपूजा
श्रावण कृष्ण	३ मंगलवार	ता० १ अगस्त	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।२७
	११ बुधवार	ता० ९ ,,	कामिका एकादशी व्रत
	१३ शुक्रवार	ता० ११ ,,	प्रदोष व्रत
	३० रविवार	ता० १२ ,,	अमावस्या हरियाली ३०
श्रावण शुक्ला	२ मंगलवार	ता० १५ ,,	भारत स्वातन्त्र्योत्सव (४ वर्ष प्रारम्भ) चन्द्र दर्शन
	३ बुधवार	ता० १६ ,,	मधुश्रवा ३ संधारा तीज
	४ गुरुवार	ता० १७ ,,	सिंह संक्रान्ति पुण्यकाल
	५ शुक्रवार	ता० १८ ,,	नाग पञ्चमी
	७ रविवार	ता० २० ,,	श्री गो० तुलसीदास जयन्ती
	८ सोमवार	ता० २१ ,,	मेला श्रीनयनादेवी व चिन्तपूर्णी
	११ बुधवार	ता० २३ ,,	पवित्रा एकादशी व्रत
	१३ शुक्रवार	ता० २५ ,,	प्रदोष व्रत
	१५ रविवार	ता० २७ ,,	उपाकर्म ऋषितर्पण रक्षा बन्धन (रक्खडी) सत्य व्रत श्री अमरनाथ (काश्मीर) यात्रा
भाद्रपद कृष्ण	३ बुधवार	ता० ३० ,,	कज्जली तीज
	४ गुरुवार	ता० ३१ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।४९
	६ शनिवार	ता० २ सितम्बर	चन्दन ६ हल ६ चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।५०
	८ सोमवार	ता० ४ ,,	श्रीकृष्णजन्माष्टमी (जयन्ती) व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए चन्द्रोदय स्टे० टा० ११।२५
	८ मंगलवार	ता० ५ ,,	श्रीकृष्ण जन्म ८ व्रत वैष्णवोंका चन्द्रोदय ११।५९
	९ बुधवार	ता० ६ ,,	गुग्गा ९ श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती
	११ शुक्रवार	ता० ८ ,,	अजा एकादशी व्रत
	१२ शनिवार	ता० ९ ,,	शनि प्रदोष व्रत गोवत्सा १२
	३० मंगलवार	ता० १२ ,,	भौमवती अमावस कुशोत्पाटिनी ३० कुलदेवी सतीपूजन
भाद्रपद शुक्ला	१ बुधवार	ता० १३ ,,	चन्द्रदर्शन

भाद्रपद शुक्ला	३ गुरुवार	ता० १४ सितम्बर		हरितालिका ३ मङ्गला गौरी व्रत श्रीवराहजयन्ती
	४ शुक्रवार	ता० १५	”	पत्थर (कलङ्क) चौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त स्टे० टा० ८।२६ जन्मोत्सव श्री १०५ राजर्षि सोलन नरेश महोदय
	५ शनिवार	ता० १६	”	ऋषि पञ्चमी
भाद्रपद शु०	६ रविवार	ता० १७	”	कन्या संक्रान्ति पुण्यकाल ।
	७ सोमवार	ता० १८	”	सूतड़ा सप्तमी मुक्ताभरण ७
	८ मंगलवार	ता० १९	”	श्रीमहर्षि दधीचि जयन्ती ।
	९ बुधवार	ता० २०	”	श्रीचन्द्र ९ (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
	११ शुक्रवार	ता० २२	”	पद्मा ११ जलझूलनी एकादशी व्रत ।
	१२ शनिवार	ता० २३	”	शनि प्रदोष व्रत
	१४ सोमवार	ता० २५	”	अनन्त १४ व्रत सत्यव्रत
	१५ मंगलवार	ता० २६	”	प्रौष्ठपदी श्राद्ध १५
आश्विन कृष्ण	१ बुधवार	ता० २७	”	महालय श्राद्ध (पितृपक्ष) प्रारम्भ ।
	३ शुक्रवार	ता० २९	”	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ७।५१
	९ गुरुवार	ता० ५ अक्टूबर		सौभाग्यवती श्राद्ध सौभाग्य ९
	११ शनिवार	ता० ७	”	इन्दिरा एकादशी व्रत
	१३ सोमवार	ता० ९	”	सोमप्रदोष व्रत
	३० बुधवार	ता० ११	”	महालय समाप्ति सर्वपितृश्राद्ध और विसर्जन
आश्विन शुक्ल	१ गुरुवार	ता० १२	”	नवरात्रारम्भ घटस्थापन मातामहश्राद्ध चन्द्रदर्शन
	५ रविवार	ता० १५	”	ललिता ५ शान्ति पंचमी ।
	६ सोमवार	ता० १६	”	श्री सरस्वती आवाहन
	७ मंगलवार	ता० १७	”	तुला संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर स्टे० टा० ११५६ तक श्री सरस्वती पूजन
	८ बुध	ता० १८	”	श्रीदुर्गाष्टमी महा ८ श्रीसरस्वतीबलिदान मेला श्रीज्वालामुखी
	९ गुरुवार	ता० १९	”	महा ९ श्रीसरस्वती विसर्जन नवरात्र समाप्ति
	१० शुक्रवार	ता० २०	”	विजया १० दशहरा बुद्ध जयन्ती ।

लेखक वृन्द !

आपका लेखनी-प्रसाद पाकर 'श्रीस्वाध्याय' पुष्ट एवं समृद्ध हो रहा है। हम तथा 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक हृदयसे आपके कृतज्ञ हैं। आगामी विजयादशमी (ता० २० अक्टूबर १९५०) पर 'श्रीस्वाध्याय'का दशवें वर्षका नववर्षाङ्क, पहले सब विशेषाङ्कोंसे अधिक सुन्दर एवं आकर्षक रूपमें प्रकाशित हो रहा है। अतः आप अपना लेख, कविता, कहानी आदि संक्षिप्त हृदयस्पर्शी मौलिक सुन्दर भाषामें श्रावण शु० १५ ता० २७ अगस्त तक कार्यालयमें सम्पादकके पास भेजनेकी कृपा करें। इस अवधिके पश्चात् आने वाला कोई भी लेख 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित न हो सकेगा। अधूरे अस्पष्ट और कागजके दोनों ओर लिखे हुए लेख भी प्रकाशित न हो सकेंगे।

---सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

त्रैमासिक व्यापारिक तेजी मंदी

[ले०—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्]

श्रावण मास सं० २००७ वि०

वदी १ रवि ता० ३० जुलाई, कुछ तेजीका झटका होके मन्दी, तिलहन तेज।

वदी २ सोम ता. ३१ जुलाई, मन्दी होके १॥) तेज। गुड़ तेज।

वदी ३ मं. ता. १ अगस्त रात, यहांसे १ सप्ताह पहिलेसे या यहां से चांदी में इकतरफा मंदी चलेगी। रस मन्दे हों।

वदी ५ बुध ता. ३ अगस्त, चांदी १॥) तेज गुड़ शक्कर तिलहन तेज।

वदी ६ शुक्र. ता. ४ अगस्त चांदी मन्दी।

वदी ७ शनि ता. ५ अगस्त चांदी तेज।

वदी ९ सोम ता. ७ अगस्त दोपहर चांदी मन्दी।

वदी १० मंगल ता. ८ अगस्त चांदी १॥) मन्दी।

वदी ११ बुध ता. ९ अगस्त १२ बजे रात चांदी १॥) तेज, गुड़ सरसों तेज।

वदी १२ वृह. ता. १० अगस्त, चांदी मन्दी, गुड़ सरसों तेज।

वदी १३ शु. ता. ११ अगस्त, चांदी मन्दी होके तेज।

वदी १४ शनि ता. १२ अगस्त, चांदी मंदी।

वदी १५ रवि ता. १३ अगस्त, चांदी, गुड़, सरसों मंदे

सुदी १ सोम ता. १४ अगस्त, चांदी मन्दी।

सुदी २ मं. ता. १५ अगस्त, चांदी घटबढ़ होके मंदी गुड़ मन्दा होके तेज, सरसों तेज।

सुदी ३ बुध ता. १६ अगस्त, चांदी तेज।

सुदी ४ वृह. ता. १७ अगस्त सुबह, चांदी, गुड़, सरसों तेज। इसी दिन ४॥ बजेसे चांदीमें मन्दी आना सम्भव है।

सुदी ५ शु. ता. १८ अगस्त, तेजीका उछाला होकर मन्दी।

सुदी ६ शनि ता. १४ अगस्त चांदी तेज।

सुदी ८।९ सोम ता. २१ अगस्त चांदी मन्दी होके तेज। यहां से खांड में ६ मास तक तेजी रहे।

सुदी १० मं. ता. २२ अगस्त, चांदी मन्दी होके तेज।

सुदी ११ बुध ता. २३ अगस्त, थोड़ी मंदी होके तेज।

सुदी १२ वृह. ता. २४ अगस्त, चांदी २) मन्दी। गुड़ सरसों में मन्दी।

सुदी १३ शु. ता. २५ अगस्त, चांदी मन्दी।

सुदी १४ शनि ता. २६ अगस्त, चांदी मंदी।

सुदी १५ रवि ता. २७ अगस्त, चांदी मंदी।

नोट— श्रावण मास में चांदी में घटबढ़ के साथ १५) २०) की मन्दी जंचती है। बीच-बीच में तेजीके रियेक्शन भी आते रहेंगे। गुड़, सरसों में इस मास अच्छी तेजी जंच रही है। कमसे कम ४) ५) रु० मन की तेजी आना संभव जंचता है।

भादों मास

वदी १ सोम ता. २८ अगस्त, चांदी मंदी।

वदी २ मं. ता. २९ अगस्त, ८ बजे रात चांदी तेज गुड़ सरसों तेज यहां से गुड़ सरसों चांदी में इकतरफा लाइन चलनी चाहिये।

वदी ३ बुध ता. ३० अगस्त, चांदी तेज होके मन्दी यहांसे १ वर्षमें रुई में १००) १२५) की तेजी आवेगी।

वदी ४ वृह० ता. ३१ अगस्त, चांदी २) ३) तेज गुड़, सरसों तेज।

वदी ५ शु. ता. १ सितम्बर, चांदी तेज।

वदी ६ शनि ता. २ सि. चांदी तेज, परन्तु मन्दीका झटका भी हो।

वदी ८ सोम ता. ४ सि. चांदी ३) ४) मन्दी। गुड़ सरसों तेज।

वदी ८ मं० ता. ५ सि., मंदी होके तेज ।
वदी ९ बुध ता. ६ सि. चांदी मन्दी ।
वदी १० बृह. ता. ७ सि. घटबढ़ रहे ।
वदी ११ शु. ता. ८ सि. चांदी तेज । खांड, गुड़ मंदे ।
वदी १२ शनि ता. ९ सि. चांदी गुड़ तेज ।
वदी १४ सोम ता. ११ सि. चांदी तेज ।
वदी १५ मं० ता. १२ सि. बाजार रुख देखो ।
भादों सुदी १ बुध ता. १३ सितम्बर, चांदी तेज होके मंदी, फिर रातको तेज । सरसों तेज । रात को गुड़ तेज ।
सुदी ३ बृह. ता. १४ सितम्बर, रातको चांदी, गुड़ मंदे । सरसों मंदी ।
सुदी ४ शु. ता. १५ सि. चांदी तेज ।
सुदी ५ शनि ता. १६ सितम्बर चांदी तेज ।
सुदी ७ सोम ता. १७ सितम्बर चांदी में घटबढ़ होके तेज़, गुड़ तिलहन तेज ।
सुदी ८ मं० ता. १९ सितम्बर, मंदी होके तेज ।
सुदी १० बृह. ता. २१ सितम्बर गुड़ तिलहन मंदे ।
सुदी ११ शु. ता. २२ सितम्बर चांदी तेज ।
सुदी १२ शनि ता. २३ सितम्बर चांदी तेजी ।
सुदी १४ सोम ता. २५ सितम्बर तेज होके मंदी, गुड़ तेज होके मंदा ।
सुदी १५ मं० ता. २६ सित. चांदी, गुड़, सरसों मंदा ।

सारांश भादों मास—

यह मास प्रत्येक वस्तुमें भारी घटबढ़ कारक है। हमारे ध्यानमें इस मास चांदी सोनेमें तेजी अपना ? लग ही रूप धारण करेगी। श्रावण मासके अंतमें खरीदी हुई चांदी इस मासके अंत तक भारी नफा देगी। गुड़ सरसोंमें अच्छी घटबढ़ चलेगी। ता० २८ अगस्तसे या ३० अगस्तसे जो भी लाइन इन वस्तुओंमें चले वही लाइन कम-से-कम २) ३) रु० मनकी समझनी चाहिए। हमारा ध्यान तो इस मास भी इन वस्तुओंमें भारी तेजीका है। ता० ३० अगस्तसे १ वर्षके अंदर रुईमें १००) १२५) टकाकी तेजी आनेका योग है। दालकी वस्तु भी इस मास अच्छी तेज रहेंगी

आसोज मास—

आसोजवदी १ बुधवार ता० २७ सितम्बर चांदी मंदी होके १॥) तेज गुड़ तिलहन तेज ।
आसोजवदी २ बृह. ता० २८ सित० चांदीमें घटबढ़ होके तेज ।
,, ४ शनि ता० ३० सित० चांदी गुड़ मंदे ।
,, ६ सोम ता० २ अक्टू० चांदी मंदी ।
,, ७ मं० ता० ३ अक्टू० चांदी दोपहर बाद तेज फिर मंदी ।
आसोजवदी ८ बुध ता० ४ अक्टू० चांदी मंदी ।
,, ९ बृह० ता० ५ अक्टूबर ५ दिन बाद चादी गुड़ तेज तिलहन मंदी ।
,, १० शु० ता० ६ अक्टू० चांदी गुड़ मंदे ।
,, ११ शनि ता. ७ अ .चांदी गुड़ तेज सरसों तेज
,, १३ सोम ता० ९ अक्टू० चांदी मंदी ।
,, १५ बुध ता. ११ अक्टू० चांदी २) मंदी या २) तेज गुड़ तेज, तिलहन १० दिनमें तेज हो ।
आसोजसुदी १ बृह० ता० १२ अक्टू० चांदी मंदी ।
,, २ शु० ता० १३ अक्टू० घटबढ़ होके चांदी १) २) मंदी । तिलहन तेज ।
,, ४-५ सोम ता० १६ अक्टू० चांदी तेज ।
,, ७ मं० ता० १७ अक्टू० चांदी गुड़ सरसों मंदीरातको सब वस्तु तेज ।
,, ८ बुध ता० १८ अक्टू० चांदी मंदी ।
,, ९ बृह० ता० १९ अक्टू० चांदी मंदी ।
,, १० शु० ता० २० अक्टू० चांदी मंदीं गुड़ सरसों मंदे ।
,, ११ शनि ता० २१ अक्टू० सरसों तेज । चांदी मंदी होके रातको ॥।) तेज ।
,, १३ सोम ता० २३ अक्टू० चांदी तेज होके मंदीगुड़ तेज ।
आसोजसुदी १४ मं० ता० २४ अक्टू० चांदी तेज होके मंदी । गुड़ तेज ।
आसोजसुदी १५ बुध ता० २५ अक्टू० चांदी, गुड़, सरसों तेज ।

व्यापारिक तेजी-मंदी और ज्योतिष

[श्री० प्रोफेसर बो० सी० महता M.R.A.S.]

विश्वकी परिस्थिति गत माससे काफी बदली हुई है। तारीख २६ जूनको बृहस्पति महाराज अपनी कुम्भ राशि में वक्र हुए हैं तभीसे भारत में हो नहीं अपितु संसारके प्रत्येक मुख्य व्यापार में काफी परिवर्त्तन दिखाई दे रहा है। कोरिया की लड़ाई ने बाजारों में काफी उथल-पुथल मचा दी है। ऐसे अवसरों पर विद्वान ज्योतिषी का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपनी विद्वत्ता का परिचय देकर व्यापारियोंको कुछ सही सलाह दें, ताकि वे गलत रास्तेको न अपना कर सही रास्ते चले और होने वाली हानिसे बचने का प्रयत्न करें।

चालू ग्रह स्थिति में अगस्त मास में एक महत्व-शाली परिवर्त्तन मासके प्रारम्भ में ही होता है। लड़ाई का मुख्य द्योतक ग्रह, हमारे प्राचीन मुनियों ने मंगल ग्रह को माना है, यह मंगल ग्रह लम्बे समयसे कन्या राशि में केतु व नेपचून के साथ चल रहा था, यह ग्रह दोनों क्रूर ग्रहों को छोड़ कर तुला राशि में प्रवेश होगा। यह परिवर्त्तन व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी का सूचक है। इससे कई वस्तुओं में जिनमें अब तक तेजी चलती थी मंदी आजावेगी। चांदी सोने में इसका प्रभाव मन्दी का पड़ेगा, तथा एरंडा, सिंगदाना आदि में भी मन्दी आ सकती है। बृहस्पति इस मास में वक्री अवस्था में रहेगा, इसलिए मोटी मंदी तो यह होने नहीं देगा, फिर भी पहले बेचो पीछे खरीदो का सिद्धांत रखना चाहिये।

प्रथम सप्ताह चांदी-सोना, अरंडा आदि में मन्दी चलेगी। तारीख ७ अगस्त के बाद फिर तेजी के उछाले आवेंगे। सरसों, ग्वार व अन्य प्रकार के सीड्स (तेल के बीज अलसी तिलादि) में भी इन दिनों तेजी आवेगी, यह तेजी तारीख १८ तक चलेगी। ता० १९ से फिर एक मोटा योग मन्दी का आ रहा है वहां झटकेकी मन्दी आने की सम्भावना है। चांदी सोने में विशेष मन्दी का झटका आ सकता है। ता० २९ तक मन्दी का योग है, फिर तेजी चलेगी।

सितम्बरके प्रारम्भ में भाव में फिर सुर्खी आवेगी, यह सुर्खी ता० १९-२० तक रहेगी, फिर योग काफी मन्दी के चल रहे हैं। इस मास में काफी घटाबढ़ीकी सम्भा-वना है, इस मासमें शनि राशि परिवर्त्तन कर रहा है, इसके साथ में अन्य पांच ग्रह होंगे अतः इस समय में कोई खास महत्वका राजनैतिक परिवर्त्तन होने जा रहा है, जिसका बाजार पर काफी असर पड़ेगा, कुछ वस्तुओं में इस पीरियड में मोटी मन्दी आवेगी तथा कुछ में मोटी तेजी। इस मास में भारत में हीं नहीं अपितु सारे विश्वमें महत्वशाली राजनैतिक परिवर्त्तन होंगे। हमारा विचार है कि कोरियाकी चालू लड़ाई समाप्त हो जावेगी, तथा संसार में शान्ति स्थापना होगी। व्यापार में आश्चर्य-जनक तेजी-मन्दी चलेगी।

अक्टूबर मास में भी ६ ग्रहोंका योग चालू रहेगा और शुक्र, बुध अस्त रहेंगे, गुरु भी मास के अन्तिम सप्ताह में मार्गी होगा, अतः इस मास में बाजार में मन्दी का ही जोर अधिक रहेगा। यद्यपि बीच में तेजी के रिए-क्शन आते रहेंगे, किन्तु जोर मन्दी का ही अधिक रहेगा। ता० १८ से २६के बीच चांदी, शेएर व सीड्स में एक तेजीका चान्स आवेगा। और फिर बाजार ढ़ीला पड़ जावेगा। व्यापारियोंसे हमारा अनुरोध है कि वे काफी सावधानी से अपना व्यापार करें अन्यथा जरा चूकनेसे काफी नुक्सानका सामना करना पड़ेगा॥

सारांश आसोज मास—

इस मास चांदीके भावोंने कम-से-कम १०) की मंदी आना संभव दीखता है। गुड़, सरसोंमें वदी १० तक मंदीका रुख रहकर बादमें बाजार कुछ सुधर जावेगा, या तेजी आ जावेगी।

अथर्ववेदसे अभूतपूर्व अलौकिक आविष्कार—

राजयक्ष्माकी अचूक चिकित्सा

[ले० वैद्यराज श्री स्वामी आनन्दगिरिजी शास्त्री]

सत्य वाक्य कोमल भी कठोर प्रतीत होता है। सत्य अखरता है, आपत्तियोंमें डालता है । विश्वका कल्याण चाहने वाले, भूले भटकोंको रास्ता दिखाने वाले व्यक्ति आपत्तियोंका सदैव स्वागत करते हैं, पर न्याय-मार्ग से विचलित नहीं होते । अंग्रेजोंके शासनकालमें हमारी पुकार कोई नहीं सुनता था, अंग्रेज अपने देशके वाणिज्य की उन्नतिके लिए भारतका बलिदान देनेमें नहीं हिचकिचाते थे। उन्होंने आयुर्वेदको पददलित करनेके लिए भारतीय जनताके हृदयमें घृणाके भाव भरनेमें किसी भी प्रकार का प्रयास नहीं छोड़ा । एलोपेथिकके प्रचारमें भारतका अमित धन व्यय किया, किन्तु परिणाम सदैव ढाकके तीन पात ही रहा। उस समय हम यह गीत गाया करते थे—'चखायेंगे मजा बर्बादिये गुलशनका गुलचींको।

बहार आजायगी उस दम जब अपना बागवान् होगा॥'

समय आया, गुलचीं चला गया और उसका स्थान भारतवासी खद्दरपोश अपने बागवानने संभाला। हमारे नेत्र उसकी ओर लगे, परन्तु जब सभ्यता, आचार विचार और व्यवहारमें उसे विदेशी रङ्गमें रङ्गा पाया तो हमने कर पीटे, सिर धुना और चिल्लाये।

'दिलके फफोले जल उठे सीनेके दागसे।
इस घरको आग लग गई घरके चिरागसे॥'

इस गोरे गुरुके चेलेके कान इतने बहरे हैं कि इसके कानों तक आवाज पहुंचानेके लिए हमारे पास कोई यंत्र नहीं ।

हम 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंके समक्ष मनुष्यमात्रके कल्याणके लिए निम्नलिखित पंक्तियां लिखते हैं—

इस समय सारे संसारमें एलोपेथिक चिकित्सा व्यापक है और इसके अन्वेषणमें बड़े-बड़े विज्ञानवेत्ता (Scientists) लग रहे हैं। तथा बड़े-बड़े राष्ट्रोंके साम्राज्य अमित धन व्यय करके अन्वेषण करवा रहे हैं। वास्तवमें विश्वभर का कोई भी देश राजयक्ष्मासे खाली नहीं है, किन्तु भारत तो दिनप्रतिदिन यक्ष्माकीर्ण हो रहा है। यक्ष्मा के अन्वेषणमें एलोपेथीका परिश्रम प्रशंसनीय है, परन्तु परिणाम आशाहीन ही निकला करता है। मैंने अपनी आयु के ४७ वर्ष राजयक्ष्माकी खोजमें पेट पर पट्टी बांध कर निःसहाय होने पर भी लगाये। मुझे तो भारी गौरव है कि भगवान्ने जो सफलता मुझे प्रदान की है इसका सौभाग्य आज तक संसारमें किसीको प्राप्त नहीं हुआ।

एलोपेथिक अन्वेषण और अपनी अन्वेषणाकी तुलनात्मक कुछ पंक्तियां पाठकोंकी भेंट करता हूं। आशा है पक्षपात छोड़ कर गुणीजन इस पर विचार करेंगे और अपने हानि लाभका स्वयं निर्णय करेंगे।

एलोपेथी-चिकित्साक्रमका परिणाम

फेफड़ोंके राजरोगमें एलोपेथिक टीके करके, हवा भरके, अनेक औषधियां खिला करके, आपरेशन करके, रोगीको खाट पर लिटा करके, अनेक उपायोंसे रोगकी प्रारम्भिक अवस्थामें चिरकालमें सफलता प्राप्त करते हैं। यदि रोगका अधिक आक्रमण हो जाय तो वे विवश हो जाते और जो सफलता प्राप्त करते हैं वह भी स्थायी रूप से नहीं होती है। एलोपेथी चिकित्सासे स्वास्थ्य प्राप्त करने वाला व्यक्ति स्वास्थ्यप्रद जलवायु, शीतप्रधान देश और अच्छे आहारका ही सदैव सापेक्ष रहता है, यदि दुर्भाग्यवश ग्रीष्म ऋतु गर्म देशमें काटनी पड़े तो रोग जागृत हो कर उसे यमराजका अतिथि बनाता है।

हमारी नूतन चिकित्सा पद्धतिका परिणाम

फेफड़ोंके राजरोगमें रोगीकी अवस्था कितनी ही क्यों न बढ़ चुकी हो, रोगी तथा परिचारक निराश भी

क्यों न हो चुके हों, हम थोड़े समयमें रोग पर पूरा स्वत्व जमा लेते हैं। हमारे चिकित्साक्रममें रोगीका खाट पर ही पड़े रहना आवश्यक नहीं, उसे भ्रमण आदिकी पूरी आज्ञा होती है। खानपान पर कोई बन्धन नहीं लगाया जाता। स्वास्थ्य प्राप्त करनेके लिए थोड़ा समय और अल्प व्यय पर्याप्त है। रोगीका राजरोगसे मुक्त होना निस्सन्देह निश्चित है। रोगसे छुटकारा पाकर व्यक्ति ग्रीष्म ऋतुमें गर्म देशमें निवास कर सकता है। उद्योग धन्धा करके परिवारका पालन पोषण कर सकता है। पुनः उसे रोगका कोई भय नहीं रहता।

[२]

छातीके पिञ्जरकी अस्थियां खोखली हो जाने पर उनके ऊपरकी झिल्ली गल जाने पर, और मांस पेशियोंके सूख जाने पर पसलियां ऊपरको उठ आती हैं। उनमें भारी वेदना होती है। उस समय एलोपेथिक चिकित्सक आपरेशन करके उन अस्थियोंको बाहर फेंक देते हैं, जिससे रोगीका जीवन नष्ट हो जाता है। वह व्यक्ति केवल जीता जागता एक टेढ़ा-मेढ़ा पुतला होकर चलता फिरता तो दिखाई देता है परन्तु उस जीवनसे मृत्युका अच्छा समझता है।

हमारे क्रममें औषधियोंका सेवन करके लेप लगवा कर, तैल आदि मलवा कर वेदना दूर कर दी जाती है। अस्थियां भर दी जाती हैं, झिल्लीको असली स्वरूप में लाया जाता है और मांस पेशियोंमें रुधिरका संचार करके हरा भरा कर दिया जाता है। अस्थियां भारी हो कर अपने स्थान पर बैठ जाती हैं और उनका सूखापन हटनेसे, चिकनाहट आनेसे उनकी वेदना सदैवके लिए दूर हो जाती है। व्यक्ति स्वास्थ्य प्राप्त करके आनन्दका जीवन व्यतीत करता है।

[३]

अस्थियक्ष्मा में एलोपेथिक चिकित्साक्रम अत्यन्त दुःखप्रद एवं निराशापूर्ण है। रोगीको प्लास्टर लगा कर जकड़ दिया जाता है, ताकि रोगग्रस्त अस्थियोंमें चेष्टा न हो सके। पूर्ण विश्रामसे अस्थियोंको स्वस्थ करनेका प्रयत्न किया जाता है। रोगी वर्षों प्लास्टर लगवाकर तड़फते देखे जाते हैं। उस जीवनसे मृत्युको अच्छा समझते हैं। अन्तिम परिणाम भी इतना भयानक निकलता है कि रोगी १०-१२ वर्ष तड़फ-तड़फ कर, सड़-गल कर, मरता है। भाग्यवश कोई बिरला ही स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है। ऐसी अवस्था कई प्रसिद्ध डाक्टरोंके घरोंमें भी देखी गई है, जिसका हमारे पास पूर्ण प्रमाण विद्यमान है।

हमारी पद्धतिके अनुसार अस्थियक्ष्मा बहुत थोड़े समयमें सर्वथा निर्मूल हो जाता है। यदि रोग अत्यन्त भयङ्कर अवस्था तक आक्रमण कर पाया हो एवं रोगी यमराजके निमंत्रणकी प्रतीक्षा कर रहा हो तो उस समय भी अधिकसे अधिक एक वर्षका समय स्वास्थ्य प्राप्त करनेके लिए पर्याप्त है, किन्तु यह निश्चित सिद्धान्त है कि रोगी रोगसे छुटकारा पाकर निःसन्देह स्वास्थ्य प्राप्त करता है।

[४]

आन्तरिक यक्ष्मामें जहां तक हमारा ज्ञान है एलोपेथिकको नीचे ही देखना पड़ता है। इसमें सफलताका सौभाग्य बड़ेसेबड़े एलोपेथिक डाक्टरोंको कभी प्राप्त नहीं हुआ। यह दूसरी बात है कि मस्तिष्क विचारधाराकी पराधीनताके विवश पढ़ेलिखे भारतवासी विज्ञान (Science) की दुहाई सुनकर इस चिकित्सामें अपने जन और धनको नष्ट करनेमें सर्वथा तैयार हैं और भेड़ चालके अनुसार दूसरे लोग उनका अनुकरण भी कर रहे हैं, परन्तु वास्तविक डङ्केकी चोटसे हम यह सत्य कहनेसे नहीं हिचकिचाते कि एलोपेथी सर्वथा निःसार पदार्थ हैं। किसी रोगको जड़से नहीं खो सकती। हां, दबा सकती हैं। डाक्टरोंकी ठीक वही अवस्था औषधि चिकित्सामें है जैसी वैद्योंकी धन्वन्तरि चिकित्सा (Surgery) में है। आन्तरिक यक्ष्माकी चिकित्सामें तो एलोपेथी सर्वथा न होनेके समान है। उदाहरणके रूपमें राजयक्ष्मा विशेषज्ञ (T. B. Specialist) बड़े २ डाक्टरोंके घरोंमें वर्तमानमें भी यह रोग विद्यमान है और वे लोग इस रोगको दूर करनेमें असमर्थ हैं, किन्तु हमारे चिकित्सा क्रममें इस रोगको बहुत थोड़े समयमें सर्वथा निर्मूल कर दिया जाता है। रोगी रोगसे मुक्त होकर आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि किसी रोगीको दुर्भाग्यवश अन्तड़ियों और फेफड़ोंके राजरोगका क्लेश एक ही समयमें हो जाय तो एलौपेथिक डाक्टरको दृष्टिमें वह रोगी इस संसारका कुछ ही दिनोंका यात्री होता है, क्योंकि उसे उसके विचारसे यमराजका निमंत्रण मिल चुका है। कारण कि फेफड़ोंकी खराबीमें पहाड़ पर रहना ग्रीष्मऋतुमें आवश्यक है पर पेटकी खराबीमें पहाड़ हानिकारक है, इस दृष्टिकोणसे एलौपेथिक डाक्टर निराश हो जाता है और वह विवश होकर टालमटोल करनेका यत्न करता है।

परन्तु हमारे चिकित्साक्रममें देशविशेष या जलवायु विशेष अथवा ऋतु आदि का कोई सापेक्ष बन्धन नहीं है, अतः किसी स्थान पर भी रह कर इन दोनों रोगोंसे पीड़ित रोगी सर्वथा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है।

[४]

प्रतिलोमयक्ष्मा (Galping Tubar clousis)

यह एक अत्यन्त भयानक रोग है। यह क्यों और कैसे होता है ? इसकी क्या चिकित्सा है? इसका ज्ञान बड़े-बड़े प्रसिद्ध डाक्टरों तथा वैद्योंको भी कठिनाईसे होगा। इसका विवेचन हम 'यक्ष्मा-विवेचन' नामक लेखमें प्रकाशित करने वाले हैं। इसकी चिकित्सा एलौपैथिक स्वप्न में भी नहीं कर सकते हैं। किन्तु हमारे चिकित्साक्रममें बहुत अल्प समयमें ही इस पर अधिकार कर लिया जाता है और चिरकाल औषधियोंका सेवन कराके रोगी को बचा लिया जाता है। हमने एलौपैथिक और अपने क्रमका तुलनात्मक दिग्दर्शन करवाया है। इसका पूरा विवेचन हम अपने आगामी लेखमें करेंगे।

'यह आयुर्वैदिक सम्पत्ति सुगमतासे वैद्य अपना लेंगे, इन भावनाओंसे प्रेरित होकर हमने निमंत्रणपत्र छपवा कर वैद्योंको और पत्रकारोंको भेजे। समाचारपत्रोंमें भी प्रकाशित करवानेका यत्न किया, किन्तु सब निष्फल। हमने उत्साह न छोड़ा। शिमला-पर्वतप्रांतीय-आयुर्वेद सम्मेलन शिमला, पंजाब-प्रांतीय - आयुर्वेद - सम्मेलन अमृतसरमें भाग लिया। निमंत्रणपत्र भेंट किये, पूरा यत्न किया, परन्तु "कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमतामाचार्याः" भगवान् पुनर्वसुके इस उपदेशसे प्रायः वैद्योंको कोसों दूर एवं मिथ्या अभिमान में चूर पाया। हमारे जीवनके आधार तो ये मनुके वाक्य हैं—

नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः।
आमृत्योर्यस्नमातिष्ठेत् नैनांमन्येत्सु दुर्लभाम्॥

इसके अनुसार अखिलभारतीय-आयुर्वेद-महा-सम्मेलनके उपलक्षमें तीन महीने पहिले ही हम दिल्ली जा बैठे। दिल्ली वैद्यसभा तथा स्वागतकारिणीके सदस्य बने। स्वागतकारिणीके प्रधानमंत्री श्री ओंकारनाथजीने वचन दिया कि सम्मेलनके समयमें आपको पर्याप्त समय दिया जायगा। उनकी अनुमतिसे इस भयानक रोगसे मुक्त रोगियोंका इतिहासपूर्ण वृत्तांत, (History of disease) डाक्टरोंकी सम्मतियां, एक्सरे इत्यादि एकत्रित किये। भयानक रोगकी अवस्थासे छुटकारा पाने वाले रोगियोंको तथा उन रोगियोंकी अवस्था देखने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों और कांग्रेसकेनेताओं को —जिन्होंने अपनी आंखोंके सामने इन रोगियोंकी अवस्था और इस रोगसे छुटकारा पानेवाले रोगियोंको देखा था— बुला लिया। एक लेख भी लिख कर महासम्मेलनको दे दिया गया। किंतु जब कार्यकारिणीका कार्यालय और अधिकारी दिल्ली पधारे तो न जाने किस व्यक्तिने कला घुमाई कि सारे मन्त्रिमण्डलने आंखें फेर लीं। हा ! ईर्षा तेरा सत्यानाश ! आनन्दगिरी बड़ा व्यक्ति न हो जाए इसलिए आयुर्वेदके ठेकेदार, आयुर्वेदको रसातल ले गये। सौजन्यपूर्णहृदय ओंकारनाथजी अपनी विवशता प्रकाशित करते हुए पीठ दिखा गये।

को न कुसंगति पाये नसाई
रहे न नीच मते चतुराई॥

हम अपने उद्देश्यका परित्याग करनेके लिए कभी भी तैयार नहीं। हम तो अपनी डुग्गी पीटते जायेंगे। सरल हृदयभावसे एलोपैथीके डाक्टर महोदयोंको निमंत्रित करते हैं। भाई, सत्य कहनेसे तो हम हिचकिचाते नहीं हैं। आपके मस्तिष्कमें एलोपैथिकके ज्ञानने डेरा लगाया है और हृदयमें आयुर्वेदकी घृणाने स्थान बनाया है। इसमें आयुर्वेदका दोष नहीं, यह सारी अंग्रेजोंकी माया है।

श्रीराष्ट्रालोकावलोकनम्

[अवलोकयिता— श्री रमानन्द सारस्वत साहित्यरत्न]

[गताङ्कसे आगे]

३ पितृपुण्य भूत्व

राष्ट्रका तृतीय लक्षण पितृभूत्व एवं पुण्यभूत्व है। पितृभूत्व और पुण्यभूत्व ये दोनों परस्पर सम्बन्धित विशेषण हैं। अर्थात् राष्ट्र वह है जो पितृभू रूप हो, और पुण्यभू रूप भी हो। धर्मशास्त्रोंका यह नियम है कि पिता का उत्तराधिकारी पूर्ण रूपेण पुत्र ही हो सकता है, अन्य नहीं। क्योंकि वह 'औरस' होता है, उसे 'आत्मा वै जायते सः' आप्त प्रमाण के अनुसार आत्मज या आत्मा का प्रतिबिंब कहा जाता है। और्ध्वदैहिक क्रिया में कपाल छेदनका पुत्रके लिये जो अधिकार दिया है, उसके हेतुमें यह कहा गया है, कि जो वीर्य ब्रह्माण्ड भेदन कर पिताके स्वर्गका कारण बनता वह ब्रह्मचर्य भंग होने से 'पुत्र' बन गया है, अतः उस वीर्य के प्रतिरूप इस पुत्र द्वारा ब्रह्माण्ड छेदन होने से तत्वतः कोई भेद न होनेके कारण पिताके लिए स्वर्ग द्वार उन्मुक्त हो जाता है। 'पुत्र' की भावाभिव्यक्ति भी यही है कि पुंनाम नरक से तारने वाला ही पुत्र है। अतः राष्ट्र एक पिता है, राष्ट्रिय पुरुष उसके पुत्र हैं जो राष्ट्रको पिता नहीं मानते वे उस राष्ट्र के अधिकारी नहीं। राष्ट्र और राष्ट्रियोंका यह पिता पुत्रका कितना मधुर सम्बन्ध है! जो लोग किसी राष्ट्र के पुत्र नहीं हैं, न उसके प्रति उनका कोई आदर भाव ही है, वे उस राष्ट्र पर क्या अधिकार रख सकते हैं, कुछ नहीं! बहिर्देशीय व्यक्ति जो न तो उस राष्ट्र की सन्तान ही हैं, और न उसके लिए आदरका भाव रखते हैं, वे तो केवल वहां के कतिथि ही हो सकते हैं। पुत्र ही पिता को स्वर्ग ले जाने का कारण होता है, स्वर्गके अनेक नामोंमें से एक नाम है 'नाक' अर्थात् 'न विद्यते अकं दुःखं यत्र' अर्थात् दुःख रहित स्थान। पुत्र ही पिता के वास्तविक दुःखोंका नाशक होता है। और पुत्रकी ही पिता के प्रति विशेष भक्ति एवं श्रद्धा होती है; जो लोग न तो राष्ट्रमें श्रद्धा और भक्ति रखते हैं, वे भला कैसे 'राष्ट्र' की वास्तविक सुरक्षा कर सकते हैं? वे तो और राष्ट्र का विनाश ही करेंगे! बड़े दुःख का विषय है कि आजकल राष्ट्रिय कहलाने वाले व्यक्ति, जो राष्ट्र के वास्तविक पुत्र और सेवक हो सकते हैं, उन्हें 'राष्ट्रपिता' और 'राष्ट्रपति' कहे जानेमें लज्जा का न तो अनुभव ही होता है और न लोगोंका इस महान् राष्ट्र अपमान की ओर ध्यान ही जाता है। शास्त्रों में पिता को 'गुरु' संज्ञा देते हुए कहा है:—

पिता धर्म पिता स्वर्ग पितैव परमं पदम्।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः॥

अंग्रेज चला गया, आओ, अपना घर सम्भालो। इस अनमोल ज्ञानरत्नको उदार भावसे सीखो। आयुर्वेदका सम्पन्न और बुद्धिमानोंमें प्रचार करके भारतका कल्याण करो। आप अज्ञानवश उस एलोपैथीके ज्ञानको ठीक समझ कर उल्टी चिकित्सा करके पापके बोझसे दब रहे हो और भारतके अमित धनका नाश कर रहे हो। मैं आपको इस पापसे बचानेके लिए और निर्धन भारतवासियोंके धन और जनकी रक्षाके लिए सरलतापूर्ण हृदयसे आपका स्वागत करता हूं। निरन्तर एक वर्षके परिश्रमसे मुझे केवल सौभाग्यवश दो योग्य व्यक्ति ही प्राप्त हुए हैं। एक श्री डा० बी० सुब्रह्मण्यम् मेम्बर आफ इण्डियन पार्लमेंट हैं, आप सच्चरित्र प्रतिभाशाली परोपकारकी भावनाओंसे पूर्ण प्रौढ़ युवक हैं। दूसरे हैं श्री पं० दुर्गादत्तजी शास्त्री, आप आयुर्वेदके मूर्तिमान् विद्वान् हैं, आपको प्रतिभा, स्मरण-शक्ति, आचार, व्यवहार प्रशंसनीय हैं, आप पर सरस्वती भगवतीकी अपार कृपा है। मेरा हार्दिक भाव तो यह है कि इसी प्रकार उच्चकोटिके महानुभाव इस विद्याको प्राप्त करके संसारके प्रत्येक भागमें फैला कर राजरोगको सर्वथा निर्मूल करनेका प्रयत्न करके विश्वका कल्याण करें।

तात्पर्य यह है कि जो राष्ट्र को अपना पिता समझते हैं, और साथ ही पुण्यभूमि भी, वे ही सच्चे राष्ट्रिय हैं। सच्चे राष्ट्रिय पुरुष की व्याख्या करते हुए आगे स्वयं आचार्यचरणने स्पष्ट लिखा है कि :—

पितृभूत्वं पुण्यभूत्वं द्वयं यस्य न विद्यते ।
तस्य स्वत्वं तत्र राष्ट्रे भवितुं न किलार्हति ॥२॥

इस श्लोक पर तो आगे यथासमय विचार किया जाएगा किन्तु यहां इतना उल्लेख आवश्यक है कि राष्ट्रके राष्ट्रीयके लिए राष्ट्रमें राष्ट्रकी सर्वविध संरक्षाकी दृष्टिसे पूर्णरूपेण पितृ-भावना और पुण्यभावना होना अत्यावश्यक है। उदाहरणके लिए जैसे भारतवर्ष ही को लें, जो यहांकी मूल संस्कृति है, और जो उस के उपासक हैं, जो यहीं जन्मे हैं, और जिनका यही पुण्य स्थल है, वही यहां के सच्चे राष्ट्रिय हैं। जिस प्रकार मक्का या मदीना एक मुसलमान राष्ट्र है, और समस्त इसलाम मतानुयायियों का चाहे वे हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में कहीं भी रहते हों, पुण्य स्थान भी है, पर वहां के 'राष्ट्रिय' वे ही कहे जा सकते हैं, जो वहां रहते हों। केवल पुण्यभूमि होने से पाकिस्तानके मुसल-मान अरबके राष्ट्रिय नहीं कहला सकते। इसी प्रकार इंगलैण्डमें चाहे कितने ही अनअंग्रेज या मक्कामें चाहे कितने ही गैरमुसलिम पैदा हुए हों; राष्ट्रवाद सिद्धांत के अनुसार वे वहांके राष्ट्रिय नहीं कहला सकते। राष्ट्रियता के लिए तो पितृभावना और पुण्यभावना होना आवश्यक है। प्रत्येक राष्ट्र के राष्ट्रिय बनने के लिए वहां रहने वाला होना ही उतना आवश्यक नहीं है, प्रत्युत वहांकी एक संस्कृति, एक भाषा, एक ऐतिहासिक परम्परासे सम्बद्ध होना जितना आवश्यक है। पितृभू और पुण्यभू ये दोनों शब्द मिल कर ही राष्ट्रियता की पूर्ति करते हैं। इसी कारण चीनी और जापानी भारतवर्षको पुण्यभूमि मानते हुए भी, क्योंकि उनके धर्मोंका यहां आविर्भाव हुआ है; पूर्णतः भारतवर्षके राष्ट्रिय नहीं कहे जा कसते। कारण कि वर्तमान चीनी और जापानियोंकी यह पितृ-भूमि नहीं है, उनके पूर्वज यहां उत्पन नहीं हुए हैं, अतः वे भारतवर्षकी राष्ट्रियतामें परिगणित नहीं किए जा सकते। इसी प्रकार वर्तमान मुसलमान, यहूदी, पारसी और ईसाई, भारतवर्ष को पितृभूमि मानने पर भी यहां के 'राष्ट्रिय' नहीं कहे जा सकते। क्योंकि उनके लिए यह राष्ट्र पुण्यभूमि नहीं है। भला जो व्यक्ति जिस राष्ट्रमें उत्पन्न होकर वहां की ऐतिहासिक, धार्मिक, समाजिक, एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से विभिन्न परम्पराएं रखते हों, विभिन्न संस्कृति और सभ्यताओंमें विश्वास करते हों, वे किस प्रकार उस राष्ट्र के 'राष्ट्रिय' हो सकते हैं। वास्तव में पितृभक्त पुत्र ही पिताका महत्व बढ़ा सकता है। पितृ द्वेषी पुत्र तो वास्तविक पुत्र होने पर भी 'कुपुत्र' ही कहलाएगा। और दत्तक पुत्र कैसा भी पितृभक्त क्यों न हो वास्तविक पुत्र की कदापि समता नहीं कर सकता। अनेकों देशोंका तो मिलकर एक देश या बृहद् राज्य बन सकता है, किन्तु अनेक राष्ट्र मिल कर एक राष्ट्र नहीं हो सकता! यही इन दोनों में अन्तर है। आजकल लोग राज्य या नगर (देश ?) को ही राष्ट्र समझते हैं, पर यह नितान्त भ्रम पूर्ण है। हां, राष्ट्र का विस्तार बहुल हो सकता है और उसके अन्तर्गत अनेक देश या राज्य रह सकते हैं। इससे उसके राष्ट्रत्व में कोई व्यवधान नहीं पड़ सकता पर सुतरां राष्ट्रों को प्रचलित Union यूनियन संज्ञा नहीं दी जा सकती। क्योंकि राष्ट्र का आधार संस्कृति है। और संस्कृति का अर्थ समान परम्परायें हैं। जिन व्यक्तियों की धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक परम्परायें समान हों, उन्हींका समूह एक 'राष्ट्र' है। यही मत श्रीआचार्य चरण जी को अभिप्रेत है; क्योंकि 'श्रीराष्ट्रलोक' में आगे स्पष्ट कहा है :—

'समानसंस्कृतिमतां यावती पितृपुण्यभूः।
तावतीं भुवमावृत्य राष्ट्रमेकं निगद्यते ॥३॥

अर्थात्—समान संस्कृति वाले मनुष्यों की जितनी पितृपुण्यभू हो उतनी ही पृथ्वीको 'एक राष्ट्र' कहा जाता है। राष्ट्रका आधार राष्ट्र वासियोंकी 'राष्ट्रियता' है, और उस राष्ट्रियता का ही दूसरा नाम संस्कृति है। U. S. S. R. जैसे संघ या United Kingdon अथवा United State of America इसी लिए

राष्ट्र संज्ञा में परिगणित कर लिये गये हैं, क्योंकि इनमें विभिन्न भाषा, नस्ल एवं संस्कृति का मिश्रण होते हुए भी समन्वय उन लोगोंका अधिक है, जो उन देशों को किसी न किसी रूपमें पितृ पुण्य भू मानते हैं। पर वास्तविकताकी दृष्टिसे ये संघ या यूनियन अनार्य प्रकृत्यापन्न राष्ट्र हैं। श्रीराष्ट्रालोक प्रतिपादित अध्यात्मतत्त्वमयी दृष्टिसे इन्हें देखा जाय तो बड़ी ही विभिन्नता प्रतीत होगी। 'श्रीराष्ट्रालोक' आर्ष ग्रन्थ है। जिसका दूसरा नाम 'व्यावहारिक मोक्ष शास्त्र' भी है। 'राज्य' में और राष्ट्रमें बहुत अन्तर है। राज्य का आधार स्वार्थमयी वृत्ति है, और राज्योंका निर्माण इसी वृत्ति द्वारा होता है। जिससे वास्तविक कल्याणकी पूर्ण आशा नहीं हो सकती। किन्तु राष्ट्रकी आनन्दमयी वृत्ति है। वे धार्मिक शुभ परम्पराएं हैं जिन आधारके द्वारा मानव मात्र 'सत्यं शिवं सुन्दरं'का दर्शन करता है। वह आनन्द राष्ट्र द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। राज्य द्वारा नहीं। और जब तक उस राष्ट्रकी स्थापना नहीं होगी, समान संस्कृतिमान पुरुषों की धार्मिक भावनाओंकी पूर्णरूपेण समुन्नति नहीं होगी, सुख, शान्ति और आनन्दका मिलना कठिन है। यही इस राष्ट्रका तत्त्व है। उस राष्ट्रके अधिकारी राष्ट्रिय, उस राष्ट्रके सच्चे सुपूत हो सकते हैं, अन्य नहीं। इसी भावको लक्ष्य कर स्वातन्त्र्यवीर श्री सावरकर जी ने 'हिन्दुत्व'की परिभाषा करते हुए कहा है —

आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

[अर्थात् समुद्रसे लेकर सिन्धु नदी पर्यन्त (या काश्मीरसे लेकर रामेश्वरम् तक सिंधुसे आसाम तक अथवा हिमालय से कन्या कुमारी तक) भारत भू भागको अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि मानता है वही हिन्दु है] इससे स्पष्ट होता है कि वास्तविक राष्ट्रविधायक तत्त्व संस्कृति है, और उसका आधार उस राष्ट्रके प्रति पितृ निष्ठा एवं पुण्यनिष्ठा है, अतः वास्तविक राष्ट्रका लक्षण पितृ राष्ट्र (बपौती) पुण्य राष्ट्र (उसके प्रति अनन्य भक्ति) का समन्वय सर्वथा उचित ही है। क्योंकि यही एक सुयोग्य पुत्रका लक्षण भी है कि जो अपने पूर्वजोंकी वस्तु को अपनी समझे और उसकी उचित सुरक्षा का ध्यान भी रक्खे। परकीय व्यक्ति क्यों अन्य की वस्तुका ध्यान रखेगा। वह तो जब तक उसकी इच्छा होगी उसका उपभोग कर उसे विनष्ट भी कर देगा। स्वीय वस्तुका ध्यान तो वही रख सकता है जो उसमें कुछ ममत्व रखता हो और यह समझता हो कि वह वस्तु मेरी ही है, और परम्परासे मुझे ही प्राप्त है। नहीं तो जुए में जीते हुए रुपयोंकी भांति ममत्वशून्य परकीय व्यक्ति राष्ट्रावनति में भी सर्वथा प्रसन्न ही रहेगा। और यही राष्ट्रिय एवं अराष्ट्रियमें अन्तर भी है, अतः राष्ट्रका तृतीय लक्षण सर्वथा युक्तियुक्त है।

स्वीयत्व

वास्तविक राष्ट्र जिसकी आचार्य चरणोंने वन्दना की है उसका चतुर्थ लक्षण है 'स्वीयत्व'। अर्थात् राष्ट्रके प्रति यह भावना कि यह राष्ट्र सर्वतोभावेन मेरा ही है। जब तक किसी वस्तुके प्रति ममत्व उत्पन्न नहीं होता तब तक उसके लाभालाभ या समुन्नति अवनतिके सम्बन्धमें मनुष्य ध्यान नहीं देता। राग और विरागकी समुत्पत्ति का मूल कारण ममत्व या मोह है, तटस्थ वृत्तियुक्त पुरुष के लिये तो चाहे उसकी समुन्नति हो, चाहे अवनति, वह उसके लिए ध्यान ही क्यों देगा? ध्यान तो वह दे सकता है जिसे उसके साथ ममत्व या मोह हो। मुख्यतः यह ममत्व द्विविध होता है, स्वार्थ संज्ञक और परमार्थ संज्ञक। राष्ट्रिय व्यक्तियों, जिनका कि राष्ट्र ही जीवन एवं प्राण होता है, जो राष्ट्रदेवता के अनन्य भक्त होते हैं, उनके द्वारा राष्ट्रके प्रति की गई भक्ति भावना पारमार्थिक ममत्व संज्ञामें परिगणित होती है, तथा राष्ट्रियेतर व्यक्तियों की वह भावना जिसके द्वारा कि वे अपनी कार्य सिद्धि किसी प्रकार करते हुए भी जो उसके प्रति दम भरते हैं, वह ममत्व स्वार्थ संज्ञक होता है। जैसे भारतवर्षके हितचिन्तनका पहले अंग्रेज दम्भ भरा करते थे, पर आन्तरिक प्रेम न होनेसे वह उनकी ममत्व भावना केवल स्वार्थपरक ही थी, न तु परमार्थ परक। अतः उन्हें पूर्णतः राष्ट्रिय नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार वस्तुतः राष्ट्रिय

व्यक्तिका मुख्य लक्षण यह है कि वह उस राष्ट्रके प्रति ममता पूर्ण हो—और वह ममता भी वास्तविक ममता परमार्थ दृष्टिसे-होनी चाहिए। भला, जो जहां का राष्ट्रिय ही नहीं है वह उस राष्ट्रके प्रति निष्ठावान् कैसे रह सकता है? यदि थोड़ी बहुत वह प्रीति दिखलायेगा भी तो वह भी निजस्वार्थ साधनके लिए। उससे न तो राष्ट्रका कल्याण ही होगा और न वह व्यक्ति ही राष्ट्र हितैषी या सच्चे अर्थों में 'पूर्ण राष्ट्रिय' कहला सकेगा। 'राष्ट्रिय' व्यक्ति के लिए स्वराष्ट्रके प्रति पूर्ण निष्ठावान् होना आवश्यक है, और यही राष्ट्रियकी सच्ची परिभाषा है।

इस प्रकार संक्षेपमें हम इस श्लोक द्वारा समस्त राष्ट्रका वास्तविक दिग्दर्शन कर सकते हैं। श्री १०८ पूज्यपाद आचार्यचरणोंने इसमें सम्पूर्ण राष्ट्रतत्त्व भर दिया है। अब एक बार पूर्वापर सम्बन्धके लिये पुनः पाठकोंको इसके आध्यात्मिक भावकी ओर संकेत करना आवश्यक है। 'चतुर्णां' शब्द में चकार मांगलिक है। शिव का पर्यायवाची है, इससे यह लक्षित होता है कि राष्ट्र सर्वदा मंगलमय हो। आध्यात्मिक दृष्टि से राष्ट्रिय उन आर्यप्रकृति पुरुषोंको कहते हैं जिनकी अन्तर्मुखी वृत्ति होती है। अन्तर्मुखी वृत्ति ही वास्तविक कल्याण कारिणी होती है, और जो अन्तर्मुख होते हैं वे ही 'स्व'की ओर ध्यान देते हैं, बहिर्वृत्ति वाले व्यक्ति 'पर'की ओर। मनुष्य जितना जितना अन्तर्मुख होकर आत्मिक शक्तिका समभ्युत्थान करता जायगा उतना ही वह स्वतन्त्र होकर अखण्डानन्द को प्राप्त करेगा। समस्त राष्ट्र एक मानव कलेवर की भांति है, जिस प्रकार मनुष्य प्रतिक्षण किसी अनन्त अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा से सञ्चालित होता रहता है, उसी प्रकार यह समस्त विश्व भी किसी न किसी अज्ञात शक्ति से सञ्चालित होता रहता है। और मानव कलेवर का पूर्ण आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा जिस प्रकार विकास होकर वह उस अखण्ड आनन्दके अनन्त अमृततत्वको प्राप्त कर लेता है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्रकी भी आध्यात्मिक शक्ति विकसित होकर उसके सर्वथा समुत्थानमें सहायक होती हैं। हम अपने शरीर का इस मानवीय पंचतत्वात्मक पिण्डके उपादानसे अपनी अन्तरात्माका सान्त से अनन्त की ओर साक्षात्कारिता जैसे प्राप्त कर सकते हैं, ठीक वैसे ही व्यवहारपक्ष में एक राष्ट्रका समुत्थान भी सर्वात्मना कर सकते हैं। ज्यों ज्यों राष्ट्र की आत्मा बलवती होगी त्यों त्यों राष्ट्रकी अभ्युन्नति भी होगी। जिस प्रकार आत्मिक उन्नति द्वारा मनुष्य उस देह बन्धन रहित स्वर्गिक स्वातन्त्र्य सुख को प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार व्यवहार में भी वह वैसे ही सांसारिक कर्म करता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। कल्पना और मानव जीवनके दैनिक व्यावहारिक जीवनका समन्वय या सीधे से शब्दों में व्यवहार और कल्पनाका सामञ्जस्य ही हमारा चरम लक्ष्य है। वैसे ही राष्ट्र जीवन में भी हम जागृति पैदा करते हुए मानव जीवनको राष्ट्र जीवनसे सम्बद्ध कर सकते हैं। केवल एकाकी मनुष्यकी उन्नति तो इन प्रसाधनों द्वारा होती ही है। पर समस्त लोगों की व्यावहारिक या उन समस्त समूह रूप मनुष्यों की जिसका कि दूसरा नाम राष्ट्र भी है, पूर्ण अभ्युन्नति के यदि वैसे ही नियम बन जयें तो हो सकती है। मानव की उन्नति के लिए अनेक मार्ग हैं। उन सब नियमोंके समूह का नाम ही 'राष्ट्रवाद' है। राज्य शासन बहिर्वृत्तियों पर अवलम्बित होता है, अतः वह नष्ट भी हो जाता है, उसमें अनेक प्रकार की बाधाएं भी रहती हैं, पर 'राष्ट्र शासन' में इन सब का स्वतः अभाव होनेसे कोई आशंका नहीं रहती। किन्तु कल्पित बातोंका व्यवहारमें प्रयोग कैसे हो इसके लिए व्यावहारिक नियम अपेक्षित है, और उन व्यावहारिक नियम का ही सूत्र रूपेण संग्रह 'श्रीराष्ट्रालोक' है यदि सब लोग इन सिद्धान्तों पर चलें तो उनकी सर्वविध सर्वात्मना समुन्नति होना सुनिश्चित है। अतः व्यावहारिक रूपेण आध्यात्म भावों से ओतप्रोत चतुर्विध पुरुषार्थोंकी सिद्धिके हेतु भूत वृष-केतु स्वरूप एवं पितृ पुण्यभू रूप स्वकीय राष्ट्रके लिये व्यावहारिक अभीष्ट सिद्ध्यर्थ मनन करना सर्वथा समुचित ही है।

———

[५६ पृष्ठका शेषांश]

१) १।।) शेयर, २५) ३०) गुवार १।।) २) कालीमिर्च १५) २०) तिल १) १।) मूँगफली ३) ३।।) वस्त्र ऊनी ५) ६) का उछाला खाकर वापस मंदीके झटके लगेंगे एक बार तो बाजार आगकी तरह भड़क उठेगा। व्यापारियों ! समय व्यापार करनेका है, सूर्य, नैपच्यून, शनि, केतु, शुक्र, इन पाँचों ग्रहोंकी युति कन्या राशि पर राहुकी देख रेखमें हो रही है तथा चाँदीकी राशिको पूर्ण वेध है। होशियार ही माल कमा कर ले जायेगा।

ता० १ से ७ अक्टूबर तक

पाँच ग्रह तो भारतके राज्य स्थान पर राहु की दृष्टिमें गत कलससे चालू हैं अब छठा ग्रह बुध भी इनके पास आ गया है। आप मेरे बार बार तेजीका गीत गानेसे घबराइये नहीं, संसारमें भगदड़ मालूम देगी। जनताको परेशानियोंका मुकाबला करना पड़ेगा। हर व्यापारी चाँदी सोना खरीद करेगा आपभी अपनी शक्ति अनुसार संसारकी जिस वस्तु में मंदी देखो खरीद लो, लाभ अवश्य होगा गुरुकी दृष्टिसे सामूली मंदीके झटके आयेंगे उनसे घबरानेकी कोई जरूरत नहीं।

ता० ८ से १४ अक्टूबर तक

लीजिये सातवाँ ग्रह चंद्रमा भी इनके मध्यमें आगया है। ग्रहोंकी आकाशमें अच्छी मीटिङ्ग हो गई है (भूकम्प) योग आया है। इस समय व्यापारी वर्ग लक्ष्मी पुत्र यत्र तत्र यज्ञ हवन दानादि कार्य करें वरना पृथिवी पाप से भारी होगई है, खैर पाप चढ़े या पुन्य हमें क्या ? हमारा कार्य तो व्यापार करना है। भावोंमें अच्छे उछाले आयेंगे यह (सप्तग्रह) योग पहिले जब २ आया है तबही संसारमें अनेक उपद्रव हुए हैं स्थानाभावके कारण लिखना उचित नहीं। सिर्फ व्यापारका संकेत है सलाह नहीं।

ता० १५ से २१ अक्टूबर तक

खरीदमें रहियेगा और उछाला आने पर नफा भी लेते चलो बाजार बढ़ेंगे अधिक और घटेंगे कम, आपको चाँदीमें २।।) ३)। इसी अन्दाज अन्य वस्तुमें तेजी आने पर नफा खालो ।।।) १) घटने पर फौरन खरीद करो। ता० १८-१६ को अधिक झटके मंदीके साथ तेजी बहुत कम दिखाई देगी। उस समय मेरी रायसे चाहे व्यापार मत करो लेकिन माथे धरके बेचना उचित नहीं है। फिर आप स्वयम माल लड़ा रहे हो चार व्यापारियोंसे सलाह, तार टैलीफोन का भी ध्यान रखना जरूरी है।

ता०२२ से २८ अक्टूबर तक

यहाँ तुला राशि बुध शुक्रकी युति हो रही है आपभी बार २ तेजी लिखनेसे क्या समझोगे और हमारी भी मंदी लिखने की इच्छा है लेकिन यह मंदी केवल आपको तसल्ली देनेके लिये ही आयेगी और फिर भाव वापिस समझें। यहाँ ता० २२ को यदि मंदी आजाये तो आये उछाले बेचना और नफा भी हाथ के हाथ ले लेना। कितनी मंदी फिर कब से तेजी यह तो श्री "स्वाध्याय" के अचूक चांस रिपोर्टके रजिष्टरमें सोलन, यदि आपने किसी प्रकार से भूलकी है तो होशियार हो जाईये और आज ही २५) रु० और अपनी जन्मकुंडली या अपना नाम लिख भेजिये फिर मालदार बननेकी चिन्ता छोड़ दीजिये।

चाँदी सोना रुई गुड़ खांडकी अनुभूत रिपोर्ट

[ले० ज्यो० भू० दै० र० श्री पं० गिरधारीलाल जी शर्मा]

(१) प्र. सप्ताह द्वि० आषाढ़ शु. १० सोम.—

ता० २४ से ३१ जुलाई तक प्रत्येक वस्तु मंदी रहेगी। गुड़की समस्या कठिन या तेज रहेगी। ता० २४ को प्रत्येक वस्तु तेज रहेगी और वस्तु नहीं तो चाँदी अवश्य तेज रहेगी। ४ बजे बेचो, ता० २५ को अवश्य मंदी होगी। ता० २६ को एक बार तेजी होगी, वहाँ बेचो। ता० २७, २८ को अच्छी मंदी होगी। ता० २६,-३०, ३१ तेजी।

(२) द्वितीय सप्ताह—

ता० १ से ८ अगस्त तक रुईमें अच्छी घट-बढ़ होगी। रुईमें यदि खण्डीका खुला बाजार होगा, २०-३० की नित्य-प्रति घट-बढ़ होती रहेगी, अन्यथा १) १॥) की अवश्य होगी। चाँदी, सोने में साधारण तेजी रहेगी। ता० १-२ को घट-बढ़ रहेगी, लाभ लेते रहो। ता० ३, ४ को दोतर्फा लगावो, अवश्य लाभ होगा। ता० ५-६ साधारण। ता० ७ रुई अवश्य मंदी, ता० ८ को तेजी रहेगी। यहाँ वर्षाका भी प्रादुर्भाव रहेगा। ता० १ से ३ तक अवश्य वर्षा होगी, कहीं पूर्वमें गज डूब वर्षा होगी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० ६ से १५ अगस्त तक राजकीय वातावरण बहुत खराब रहेगा, इसलिए अचौकस बाजार रहेगा। रुईमें घट-बढ़से तेजी। चाँदी, सोना साधारण या मंदी तेजी होगा, वहाँ बेचो। चाँदी, गुड़, खाँड़ तेज ता० ६, १० को दोतर्फा लगावें। ता० १०, ११ को चाँदी मंदी। ता० १२ को अच्छी घट-बढ़में तेजीसे मंदी होगी। ता० ११ से तीन दिनमें अवश्य वर्षा होगी। ता० १४ को तेजी। ता० १५ को घट-बढ़से रुईमें तेजी अचूक।

(४) चतुर्थ सप्ताह—

ता० १६ से २३ अगस्त तक अच्छी घट-बढ़ प्रथम चार दिन तेजीके तथा प्रत्येक वस्तुके लिए अन्तिम चार दिन मंदीके रहेंगे। ता० १६ को तेजीसे मंदी। ता० १७ को सायंकाल बंद बाजार तेज रहेगा। ता० १६ तक अवश्य तेज रहेगा। ता० १७ को एक बार प्रत्येक बाजार एक दम मंदीमें दिखाई पड़ेगा, वहाँ खरीदो। ता० २१ को प्रत्येक वस्तु की तेजी होगी वहाँ बेचो। ता० २२ २३ में एक अवश्य मंदी। ता० २१, २२ को अचूक वर्षा होगी।

नोट—ता० २६ को जिस वस्तु की तेजी हो या मंदी ता० २७ तक वैसा बाजार रहेगा। सामान्य रहेगा तो सामान्य।

(५) पाँचवाँ सप्ताह—

ता० २४ से ता० ३१ अगस्त तक जिसमें ता० २७ तक साधारण बाजार रहेगा। ता० २६ को विशेष घट-बढ़ होगी। इसका परिणाम तेजी में रहेगा। ता० २४, २५ को घट-बढ़ रहेगा। ता० २८ से रुई चाँदीमें घट-बढ़ चलेगी, घटे वहाँ खरीदो। ता० २८ को चाँदीमें तेजी रुईमें मंदी। ता० २६ को चाँदी मंदी, रुई तेज ऐसा

82